Digambra Jain Religious Grantha Series No. 5

अथ ४ चौबीसीपूजा

संवत् १९६७। सन् १९१०। वीर संवत् २४३६।

१ संस्कृत चौबीसी पूजा पाठ। २ रामचन्द्र कृत भाषा चौबीसी पूजा पाठ। ३ वृन्दावन कृत भाषा चौबीसी पूजा पाठ। ४ बखतावरसिंह कृत चौबीसी पूजा पाठ।

बाबू ज्ञानचन्द्रजी जैनी लाहौर निवासीने छपवाया

मूल्य १०) रुपये

विज्ञापन। Notice. اشتہار

पचकल्याणक तिथियों का शुद्ध करना ऐसा कठिन था कि ५०० वर्ष से बड़े बड़े जैन पण्डित इस को आज तक नहीं कर सके इन पंचकल्याणक तिथियों को शुद्ध करने में हमारी आधी आयु अर्थात् २५ वर्ष खरच हुए हैं। और इस परिश्रम में भाषा और संस्कृत प्राकृत पूजा पाठों की प्रतियां तलाश करते हुए देश बदेश फिरने में निहायत तकलीफ हम को उठानी पड़ी है, सिवाय इस के विद्वान व्याकरणी महा पण्डितों वा महा ज्योतिषियोंकी तनखा नजर, इनाम,सफर खरच और प्रतियों की लिखवाई मिलान कराई गूढ़ संस्कृत पाठों के अर्थ करवाई में हमारी एक बहुत ही बड़ी रकम खरच पड़ी है। इस वास्ते सरकारी कानून के मुताबिक इस का हक हमने अपने स्वाधीन रक्खा है, यह पूजा पाठ या यह १२० पंचकल्याणक शुद्ध तिथि किसी पुस्तक में या किसी अखबार में या किसी अलहदे कागज वगैरा पर कोई न छापे अगर कोई छापेगा तो उस पर जरूर मुकदमा किया जावेगा॥

पंचकल्याणक तिथियों को शुद्ध कर्ता  बाबू ज्ञानचंद्र जैनी लाहौर।

तेरह पंथी जैनी भाइयों को समझावट।

इस पुस्तक में इक्षुरस, घृत, दुग्ध, दधि, सर्व औषधि आदि से जो प्रतिबिम्ब का प्रक्षालन करना और दश दिक्पालादिकों को अर्घादि देना लिखा है। यह आम्नाय २० पथ की है, हमने यह लेख इस संस्कृत पुस्तक में इस वास्ते छापा है कि यह लेख इस पुस्तक की आचार्यों कृत हस्त लिखित असली प्रतिमें है। और सिवाय इस के जितने संस्कृत प्राकृत पूजन पाठ आचार्यों से रचित हमने देखे हैं। मूल ग्रंथों में हमने सर्व ही ऐसा लेख देखा है, हस्त लिखित संस्कृत मूळ ग्रंथ नित्यनियम पूजा में भी ऐसा ही पाठ है सो मूल ग्रंथों के पाठ को काटना हम महा पाप समझते हैं। इस वास्ते हमने यह लेख यहां छापा है। सो जो १३ पंथी भाई इतना लेख पसन्द नहीं करते वह इसको छोड़ कर इससे आगे जहां से चौबीसी पूजा संस्कृत शुरू होती है वहां से पाठ पढ़ कर पूजन करें॥

पुस्तक मिलनेका पता 

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर

अथ सूचीपत्रम्।

अथ रामचन्द्र कृत

इस ग्रंथ की कीमत १०) क्यों ?

बहुत से भाई यह कहेंगे कि बम्बई का छपा चौबीसी पूजा पाठ ।।।) में आता है यह चार पाठ हैं इन का दाम १०) क्यों रखा? पहले पाठों में सिरफ जल की साथ पहले छंद में आंचली लिख रक्खी है। दूसरे द्रव्य चढाने को वार वार वरक उलट कर पहलेमें ही देखनी पडती है सिवा इसके द्रव्य चढानेका मंत्रभी एक ही जगह दिया है। जैसे (ॐ ह्रीं श्रीऋषभ तीर्थंकरायजलंनिर्वपामीति स्वाहा। दूसरे द्रव्य चढाने को फिर पीछे ही देखना पडता है और वह एक भी गलत है जैसे यह जल का मंत्र इस प्रकार चाहिये ॥ (ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव जिनेंद्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोग विनाशनायजलनिर्वपामीतिस्वाहा)

इसी प्रकार चंदन में। इस में ससारा ताप रोग विनाशनाय। अक्षत में अक्षय पद प्राप्तये यह पाठ बदल कर पढना चाहिये। इसी प्रकार कुल द्रव्यों का अलग अलग बदल कर पढना चाहिये। सिवाय इस के जब एक वस्तु चढावे जैसे जल। उस का पाठ अलग एक वचन में होना चाहिये जब बहुत वस्तु चढावें जैसे अक्षत। उस का बहु वचन होना चाहिये। सिवाय इस के स्थापना का पाठ जिनेंद्राय तो बिलकुल गलत(दूषित) है इस की गलती वही जानते हैं जो आला दरजे के संस्कृत व्याकरणी पंडित हैं। संस्कृत की तो अनेक गलती हैं जयपुर में जो १) रुपये का एक श्लोक लिखा ऐसे ग्रन्थ हैं वह संस्कृत शुद्धता का दाम है, खूब सूरती का नहीं ॥

सो हर जगह आंचली और पूरा बड़ा हर जगह द्रव्य चढाने का मन्त्र होने से यह पाठ पहले से तीन गुना हो जाने से, तीन तिया ९) रुपये दाम तो तुम्हारे खियाल की मुताबिक ही हुआ और वह कमीशन नहीं काटते और डाक महसूल भी अपने पास से नहीं देते हम कमिशन भी काटते हैं और डाक महसूल भी अपने पास से देते हैं वह भी १०) में से घटाईये ॥

सिवा इस के खरच की तरफ खियाल कीजिये कि पहली प्रति मंदिर से लेकर गलत तिथि की गलत तिथि जैसी थी वैसी ही छाप दी और हम ने २५ वर्ष में तमाम हिन्दुस्तान में तलाश कर के १६ भाषा पूजा पाठों का पता लगाया जिन का इतने होने का किसी को खियाल भी न था, फिर विद्वान पंडितों को माकूल तनखा और सफर खरच देकर उन से उन का मिलान करवाया। फिर और पाठों पुस्तकों ग्रन्थों में इन को ढुंढवाया जब भाषा पाठ पुस्तक ग्रन्थ चारित्रों से काम ठीक न हुआ तब अनेक संस्कृत

ग्रन्थों का खोज लगाकर उन का अवलोकन करवाया, जो संस्कृत चौबीसी पूजा पाठ जहां बीस बीस मंदिर हैं ऐसे बड़े शहरों में भी नहीं उस का पता लगाकर नकल करवा कर मगाया, फिर उस की दूसरी प्रतिका वरषों में पता लगा कर दूसरी प्रति मगाई फिर आदि पुराण उत्तर पुराण सस्कृत ग्रथ आसाधर कृत सस्कृत पाठ मंगाकर उन का अवलोकन कराय लोहाचार्य रचित पाठ से मुकाबला करवाया, जो सस्कृत शुद्ध श्लोक १) रुपये का एक लिखा जावे हमने इन सस्कृत ग्रन्थों के शुद्ध पाठ लिखवाने में क्या दाम दिया होगा। मामूली भाषा ग्रन्थ की शब्द शुद्धि में भी सैंकड़ों रुपया खरच हो जाता है इन सस्कृत ग्रंथों की शब्द शुद्धि में विद्वानों को क्या देना पड़ा होगा इन सब बातों के खरच का जरा गौर करना चाहिये॥

हम इस के जवाब में सिरफ इतना ही कहना चाहते हैं कि इस काम में २५ वर्ष में जो हमारा खरच हुवा अगर हम इस प्रतिका दाम (१००) भी रक्खें तो भी वह रकम हमारी वरामद नहीं हो सकती १०) रुपये दाम तो हमने बहुत सोच कर ऐसा रक्खा है, जैसे हीरे को काच के भाव वेचा। और जो अपनी आधी उमर इस काम में खरच की यह तो बात ही अलग है॥

शुद्धता में २५ वर्ष कैसे लगे।

एक शब्द शुचौ आसाधर कृत पाठ में है इस के मायने आसाधर ने आषाढ के लिये हैं और संस्कृत उत्तर पुराण में यह शब्द कई जगह है उत्तर पुराण के शब्द का अर्थ भाषा करताओं ने ज्येष्ठ लिया है वह शब्द ज्योतिष का है व्याकरणी पंडित इस को कम जानते हैं हमने अनेक ज्योतिषियों से इस का अर्थ पूछा सब ने इस का अर्थ आषाढ ही किया और संस्कृत कोष में देखा तो वहां भी इस का अर्थ आषाढ ही लिखा है देखो अमर कोष प्रथम कांड। चतुर्थ वर्ग। १६ श्लोक॥

सिरफ एक महान ज्योतिषी जो जो कांशी में ३० वर्ष ज्योतिष पढ कर आये हैं उन्हों ने कहा इस शब्द के मायने आषाढ भी है ज्येष्ठ भी है और २ अंगरेजी कोष देखे एक पुराणा जो विलायत में सन् १८६६ में छपा था देखो गोटिंगर का इंगलिश कोश पृष्ठ १५४ लंडन का छपा हुआ। और दूसरा आप्टे का इंगलिश कोश पृष्ठ १०४ सन् १८९० का पूना आर्य प्रेस का छपा हुआ दोनों इंगलिश कोषों में शुचौ का अर्थ ज्येष्ठ और आषाढ दोनों लिखे हैं॥

तब हमारी यह तो तसल्ली हो गई कि इस शब्द के आषाढ और ज्येष्ठ दोनों अर्थ हैं परन्तु यह शक बाकी रहा कि हम

इस का अर्थ आषाढ करें कि ज्येष्ठ तब उस महान ज्योतिषी ने हम को बताया कि फलाने मौके पर तो इस का अर्थ आषाढ होता है फलाने मौके पर ज्येष्ठ, उस से देखा तो आसाधर के पाठ में उस का अर्थ आषाढ ही हो सकता है ज्येष्ठ नहीं, और उत्तर पुराण में उस का अर्थ ज्येष्ठ ही होसकता है आषाढ नहीं तब हमारी तसल्ली हुई। इस तरह हमने संस्कृत के सैंकड़ों शब्दों की जिन में शक हुआ तहकीकात की है इस वास्ते इन शब्दों के अर्थ के खोज में हमारी आधी उमर अर्थात् २५ वर्ष गुजर गए जब खूब तसल्ली हुई तब हमने पंचकल्याणक का पाठ शुद्ध करा है॥

भाषा पाठों में इतनी गलतियें कैसे हुईं।

उन महा ज्योतिषी जी ने उत्तर पुराण का लेख देख कर यह भी कहा है कि जिन आचार्यों ने यह ग्रन्थ रचा है वह ज्योतिष के महासागर थे उन्हों ने अपनी ज्योतिष विद्या की निपुणता से उत्तर पुराण में अनेक स्थानों पर श्लोकों में कहीं मास कहीं पक्ष कहीं नक्षत्र का नाम ऐसा गुम (understood) रक्खा है कि जिस को सिवाय महान ज्योतिषी के कोई भी व्याकरणी पंडित नहीं बता सकता और साथ में यह भी कहा कि तुम कहते हो हमारे यहां भाषा उत्तर पुराण भी है सो यदि अर्थ करता ज्योतिष नहीं जानता होगा तो उस ने मास पक्ष नक्षत्रों के अर्थ करने में सैंकड़ों गलती करी होंगी॥

सो उनका कहना यह ठीक है जो यह भाषापाठों में तिथियोंका फरक पड़ाहै अर्थ करताओं के ज्योतिष न जानने से ही पड़ा है।

परमात्मा का धन्यवाद।

जैसे सीता के पिता और नेमनाथ जी की जन्म नगरी का फरक आज तक नहीं निकला ऐसे ही अगरचे इस तहकीकात में हमने अपनी आधी उमर लगाई और हजारहा रुपया विद्वानों को तनख्वा नजर इनाम सफर खरच में लगाया फिर भी अगर हम कुछ इलम ज्योतिष के माहिर न होते तो हम भी इस काम को पूरा न कर सकते॥

पस हम परमात्मा को लाख लाख धन्यवाद देते हैं कि हमारे धर्म में जो पंचकल्याणक तिथियों में गड़ बड़ हो रही थी सर्व विघ्न दूर होकर हमारे धर्म की पंचकल्याणक तिथि हमारी जिन्दगी में ही परम शुद्धमोती समान निर्मल होगई॥

आखड़ी भंग महा पाप है।

अनेक जैन स्त्रियों के पचकल्याणक तिथि में व्रत करने तथा हरी वगैरा अभक्ष न खाने तथा रात्रि भोजन नहीं करने की आखडी होती है। सो भाषा पूजन पाठों में तिथि गलत लिखी रहने से जिस दिन पंचकल्याणक तिथि नहीं होती उस दिन तो वह व्रतादि करती हैं और जिस दिन सच्ची पचकल्याणक तिथि होती है वह तिथि भाषा पाठों में न लिखी रहने से उस दिन वह व्रत वगैरा नहीं रखतीं इस गलती से उन को आखडी भंग का पाप लगता है। इस लिये आखडी भग के पाप से बचने के लिये इस पाठ में पचकल्याणक लिखी तिथियों के अनुसार व्रतादि किया करें॥

मन्दिर में प्रतिमा के सन्मुख झूठ बोलना महा पाप है।

भगवान का कल्याणक हुवा तो हो किसी और तिथि को और आप श्रीजिन मदिर में पूजन करते हुए प्रतिबिम्ब के सन्मुख बोले झूठ अर्थात् कहे कोई और तिथि इस झूठ के पाप का क्या ठिकाना है॥

पस जो जैनी भाई मंदिर में प्रतिमा के सन्मुख झूठ बोलने को पाप समझते हैं और झूठ बोलने के पाप से बचना चाहते हैं वह यह शुद्ध प्रति हमारे यहां से मगा कर इस शुद्ध पचकल्याणक तिथि का पाठ पढ कर भगवान का पूजन किया करें मूल्य १०)

ग्रन्थ मिलने का पता—बाबू ज्ञानचंद्र जैनी लाहौर

स्वाहा शब्द

बहुत से भाईयों का यह खयाल है कि स्वाहा शब्द होम आदिक में जब कोई सामग्री अग्नि में डालते हैं तब बोलते हैं इसका मतलब वह भस्म होना समझते हैं, सो ऐसे खयालात के भाईयों से प्रार्थना है कि एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जिस स्थान पर जो अर्थ सम्भव हो वहां वही लिया जाता है सो स्वाहा शब्दका अर्थ अर्पण करना भी है। इसी वास्ते आचार्योंने यह शब्द योग्य जानकर संस्कृत, प्राकृत पूजन पाठ मूल ग्रंथो में ग्रहण किया है पस पूजन में सामग्री चढाने के वक्त इस का अर्थ अर्पण करना है। इस वास्ते पूजन में समाग्री चढाने के वक्त स्वाहा बोलते हैं। इस में कोई दोष नहीं॥

भूमिका ।

इस बात को अरसा २५ साल का हुआ कि इतफाक से हमने श्री मंदिरजी लाहौर में बैठे बैठे स्वतः स्वभाव वृन्दावन कृत रामचंद कृत बखतावर कृत तीनों पाठों की १२० तिथि का मुकाबला किया सो उनमें बडा फरक पाया तब हम हैरान हुए कि पूजनमें तिथि कौन से पाठ के अनुसार पढें। कई तिथि एक में कुछ दूसरे में कुछ तीसरे में कुछ जब हमने यह सोचा कि यदि कोई और भी चौबीसी पूजापाठ होय तो उसकी साथ मुकाबला करने को और पाठ तलाश करना चाहिये तब तमाम हिंदुस्तान में पंजाब अहाता इलहाबाद बंगाल विहार बुंधेलखंड मध्यप्रदेश राजपूताना अहाता बम्बई गुजरात दक्षिन अहाता मदरास देश करनाटक रियास्त मैसूर इंदौर बडोदा उदयपुर वगैरा में तलाश करने से १६ भाषा चौबीसी पाठ मिले उनके नाम इस प्रकार हैं १ रामचंद कृत २ सेवाराम कृत ३ चुनीलाल कृत ४ बखतावर कृत ५ वृन्दावन कृत ६ देवीदास कृत ७ टेकचंद कृत ८ नेमिचंद कृत ९ सुगनचंद कृत १० छोटीलाल कृत ११ झूनकलाल कृत १२ हीरालाल कृत १३ जिनेश्वरदास कृत १४ मनरंगलाल कृत १५ अमरचंद कृत १६ थान जी कृत जब इन सब की तिथि मिलाई तो सब में ही फरक पाया तब लाचार और तलाश करी तब १ पंचकल्यानक पूजा पाठ देखा इस में १२० तिथि के १२० अर्घ हैं १ वासठ ठाणा देखा इसमें एक एक भगवान की वासठ बासठ बातें हैं एक चौरासी ठाना देखा इसमें हर एक तीर्थंकर की चौरासी बातें हैं एक बडा शिखर महात्म्य पाठ देखा उस में भी तिथि हैं अनेक पुराण

और चरित्रों में भी तिथि देखीं परंतु प्रत्येक पाठ में अनेक तिथियों में फरक पाया आपस में कोई भी न मिला. एक आश्चर्य की बात यह देखी कि एक पाठ भी अपनी दूसरी प्रति से नहीं मिलता तब बडी हांसी आई और लाचार यह विचारा कि कुल भाषा पाठ संस्कृत से बने हैं आचार्यो ने पहले संस्कृत प्राकृत पाठ रचे थे तब उनकी तलाश करनी शुरू की सो बडी कठिनताई से संस्कृत चौबीसी पूजा पाठ प्राप्त हुआ फिर दिल में यह शक हुआ कि जैसे भाषा पाठ एक दूसरे से नहीं मिलते कहीं यही हाल संस्कृत पाठों का भी न हो तब संस्कृत उत्तर पुराणमें से १२० तिथि का संस्कृत पाठ उतरवाया फिर एक पचकल्यानमाला संस्कृत पाठ मंगाया फिर लोहाचार्य कृत संस्कृत पाठ की तिथियों से इन सब संस्कृत पाठोंका मिलान किया तो आपसमें चारों पाठ मिल गए तब बड़ी भारी खुशी हासिल हुई और उनका एक १२० तिथियों का शुद्ध पाठ भाषा में लिखा और भाषा पाठों से मिलान करने पर मालूम हुआ कि सर्व भाषा पाठों में १२ से लेकर २८ तक तिथियां गलत हैं यानि १२ से कम किसी में भी गलती नहीं और बाजे पाठों में २८ तक तिथि गलत हैं पस हमने यह सोचा कि जैनी भाई मंदिरों में भगवान का पूजन भाषा के गलत पाठ पढ कर कर रहे हैं यह सखत अनुचित और पाप कार्य है पस हमने वह संस्कृत चौबीसी पूजा पाठ शुद्ध करके इस पुस्तक में छाप दिया और जो भाई संस्कृत नहीं जानते उन के वास्ते २ भाषा चौबीसी पूजा पाठ यानि रामचन्द्र और बृन्दावन कृत दोनों भाषा पाठों की गलत तिथियों के चरण छंदों में से दूर कर सही तिथियों के नए चर्ण

उन में लिख कर उन दोनों भाषा पाठों की भी १२० तिथि संस्कृत की मुताविक शुद्ध कर भाषा पूजा करने वाले भाइयों के वास्ते इसी पुस्तक में छाप दिये।

१ पस जैनी भाइयों को चाहिये कि भगवान् का पूजन इस १२० पंच कल्याणक शुद्ध तिथि वाली पुस्तक के अनुसार किया करें क्योंकि शुद्ध प्रति मिलते हुए गलत तिथि पढ कर पूजन करना महा अयोग्य कार्य है॥

जो जैनी पक्षपात कर आचार्यों कृत संस्कृत पाठों को झूठे कहकर गलत तिथियोंके पाठों से भगवान का पूजन करेंगे वह महा पा प के भागी होकर अपनी करनी का फल पावेंगे॥

अथ पंच कल्याणक तिथियों में अशुद्धता का सबूत ।

१६ भाषा चौवीसी पूजा पाठ, दूसरे पाठ और पुराणों में जितनी तिथि पंच कल्याणक की हर एक में गलत हैं अगर सब का खुलासा यहां लिखा जावे तो पाठ बहुत बढ जावे इस वास्ते सिरफ तीन चार चौवीसी पूजा पाठों की तिथियां लिखते हैं ताकि जैनी भाइयों को इस बात का निश्चय होजावे कि पाठों में तिथियां जरूर ही गलत हैं॥

अथ अशुद्ध पंच कल्याणक तिथि ।

१ ऋषभदेव—के जन्मकी शुद्ध तिथि चैत्र कृष्ण ९ है परंतु चुनीलालकृत पाठमें चैत्रशुक्ल ९ है।

२ अजित नाथ–के तप की शुद्ध तिथि माघ शुक्ल ९ है परंतु वृंदावन, रामचंद, वखतावर और चुनीलाल कृतमें माघ शुक्ल १० है और सेवाराम कृतमें पौष शुक्ल ११ है ॥

३ अजितनाथ–के ज्ञानकी शुद्ध तिथि पोष शुक्ल ११ है, वृन्दावन, वखतावर में पौष शुक्ल ४ है ॥

४ संभव नाथ–के ज्ञानकी शुद्ध तिथि कार्तिक कृष्ण ४ है, चुनीलाल कृतमें चैत्रकृष्ण ४ है ॥

५ संभवनाथ–के निर्वाणकी शुद्ध तिथि चैत्र शुक्ल ६ है, देवीदास कृत में वैशाख कृष्ण ६ है ॥

६ अभिनंदन नाथ–के गर्भ की शुद्ध तिथि वैशाख शुक्ल ६ है परंतु रामचंद्र और चुनीलाल कृत में वैशाख शुक्ल ८ है ॥

७ सुमतिनाथ–के तप की शुद्ध तिथि वैशाख शुक्ल ९ है परन्तु वृन्दावन और वखतावर कृत में चैत्र शुक्ल ११ है ॥

८ पद्म प्रभ–के गर्भ का शुद्ध तिथि माघ कृष्ण ६ हे परन्तु देवीदास कृत में माघ शुक्ल ६ है।

९ पद्मप्रभ–के जन्म की शुद्ध तिथि कार्तिक कृष्ण १३ हे परन्तु वृंदावन कृत में कार्तिक शुक्ल १३ हे और वखतावर कृत में कार्तिक शुक्ल १२ है ॥

१० पद्मप्रभ–के तप की शुद्ध तिथि कार्तिक कृष्ण १३ हे परन्तु वृन्दावन और वखतावर कृत में कार्तिक शुक्ल १३ है ॥

११ पद्मप्रभ–के ज्ञानकी शुद्ध तिथि चैत्र शुक्ल १५ है परन्तु चुनीलाल कृतमें चैत्र शुक्ल ४ है॥

१२ पद्मप्रभ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण ४ है परंतु सेवाराम कृत में फाल्गुण शुक्ल ७ है ॥

१३ सुपार्श्वनाथ–के गर्भ की शुद्ध तिथि भादों शुक्ल ६ है परन्तु वृन्दावन कृत में भादों शुक्ल २ है शुक्ल ४ है और देवीदास कृत में फाल्गुण

१४ सुपार्श्वनाथ–के ज्ञान की शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण ६ है परन्तु सेवाराम और देवीदास कृत में फाल्गुण शुक्ल ६ है ॥

१५ चंद्रप्रभ–के गर्भकी शुद्ध तिथि चैत्र कृष्ण ५ है परन्तु चुनीलाल कृत में चैत्र शुक्ल ५ है।

१६ चंद्रप्रभ–के तपकी शुद्ध तिथि पौष कृष्ण ११ है परन्तु देवीदास कृतमें पौष शुक्ल १२ है और सेवाराम कृत में पौष कृष्ण १० है ॥

१७ चंद्रप्रभ–के ज्ञानकी शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण ७ है, देवीदास कृतमें फाल्गुण शुक्ल ७ है

१८ चंद्रप्रभ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण ७ है परन्तु बखतावर कृत में माघ कृष्ण ७ है और वृन्दावन और रामचंद्र कृतमें फाल्गुण शुक्ल ७ है ॥

१९ पुष्प दंत–के तपकी शुद्ध तिथि मार्गशिरशुक्ल १ है, सेवाराम कृतमें मार्गशिरकृष्ण १ है ॥

२० पुष्पदंत–के ज्ञानकी शुद्ध तिथि कार्तिक शुक्ल २ है, देवीदास कृत में कार्तिककृष्ण २ है ॥ और सेवाराम कृत में फाल्गुण कृष्ण २ है ॥

२१ पुष्पदंत–के निर्वाणकी शुद्ध तिथि भादों शुक्ल ८ है परन्तु वृन्दावन और वखतावर कृत में आश्वन शुक्ल ८ है और देवीदास कृतमें भादों शुक्ल ९ है ॥

२२ शीतलनाथ–के गर्भकी शुद्धतिथि चैत्र कृष्ण ८ है परन्तु सेवाराम कृतमें चैत्र कृष्ण ६ है ॥

२३ शीतलनाथ–के ज्ञानकी शुद्ध तिथि पौष कृष्ण १४ है, देवीदास कृतमें पौष कृष्ण १० है ॥

२४ शीतलनाथ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि आश्विन शुक्ल ८ है परन्तु सेवाराम कृत में ज्येष्ठ कृष्ण ८ है और देवीदास कृत में आश्विन कृष्ण ३० अमावस्या है।

२५ श्रेयांसनाथ–के गर्भ की शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण ६ है परन्तु वृन्दावन और वखतावर कृत में ज्येष्ठकृष्ण ८ है॥

२६ श्रेयांसनाथ–के ज्ञान की शुद्ध तिथि माघ कृष्ण ३० अमावस्या है परन्तु वखतावर कृत में माघ कृष्ण १० है ॥

२७ श्रेयांसनाथ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि श्रावण शुक्ल १५है देवीदास में श्रावण शुक्ल ५ है।

२८ वासुपुज्य–के तपकी शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण १४ है सेवाराम कृतमें फाल्गुण कृष्ण २ है ॥

२९ वासुपूज्य–के ज्ञानकी शुद्ध तिथिमाघ शुक्ल२है वृन्दावन और वखतावर कृतमेंभाद्रपद कृष्ण२है

३० वासुपुज्य–के निर्वाणकी शुद्ध तिथि भाद्रपद शुक्ल १४है देवीदास कृतमें भाद्रपद शुक्ल५ है ॥

३१ विमलनाथ–के जन्मकी शुद्ध तिथि माघ शुक्ल४ है परंतु देवीदास और रामचंद्र कृत में माघशुक्ल १२ है और चुनीलाल कृत में माघ शुक्ल १४ है॥

३२ विमलनाथ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि आषाढ कृष्ण ८ है परन्तु वृन्दावन कृत में आषाढ कृष्ण ६ है और देवीदास और चुनीलाल कृतमें आषाढ शुक्ल ८ है॥

३३ अनंतनाथ–के तप की शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण १२ है परन्तु रामचंद्र, देवीदास, सेवाराम, और चुनीलाल कृत में पोष कृष्ण १२है॥

३४ अनंतनाथ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि चैत्र कृष्ण ३० अमावस्या है परन्तु वृन्दावन और वखतावर कृत में चैत्र कृष्ण ४ है॥

३५ धर्मनाथ–के गर्भ की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण १३ है परन्तु वृन्दावन और वखतावर कृत में वैशाख शुक्ल ८ है और देवीदास,रामचंद्र,चुनीलाल कृतमें वैशाख शुक्ल १३ है

३६ धर्मनाथ–के ज्ञान की शुद्ध तिथि पोष शुक्ल १५ है परन्तु चुनीलाल कृत में माघ शुक्ल १५ है देवीदास कृत में पोष कृष्ण ३० अमावस्या है॥

३७ शांतिनाथ–के जन्मकी शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण १४ है परंतु देवीदास कृत में ज्येष्ठ कृष्ण १३ है

३८ शान्तिनाथ–के तपकी शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण १४है परन्तु देवीदास कृतमें ज्येष्ठकृष्ण१३ है

३९ शांतिनाथ–के ज्ञान की शुद्ध तिथि पौष शुक्ल १० है परन्तु रामचंद्र चुनीलाल कृत में पौष शुक्ल ११ है ॥

४० शांतिनाथ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण १४ है परन्तु देवीदास कृत में ज्येष्ठ शुक्ल १४ है ॥

४१ कुंथुनाथ–के गर्भ की शुद्ध तिथि श्रावण कृष्ण १० है परन्तु रामचद्र कृतमें श्रावण शुक्ल १० है ॥

४२ कुंथुनाथ–के तप की शुद्ध तिथि वैशाख शुक्ल १ है परन्तु सेवाराम कृत में वैशाख कृष्ण ११ है ।

४३ कुंथुनाथ–के ज्ञान की शुद्ध तिथि चैत्र शुक्ल ३ है परन्तु चुनीलाल कृत में चैत्र शुक्ल १३ है ।

४४ अरनाथ–के गर्भकी शुद्ध तिथि फाल्गुण शुक्ल३ है परन्तु सेवाराम कृतमें फाल्गुणकृष्ण३ है ।

४५ अरनाथ–के तप की शुद्ध तिथि मार्गशिर शुक्ल १० है परन्तु वृन्दावन, वखतावर कृत में मार्गशिर शुक्ल १४ है सेवाराम कृत में कार्तिक कृष्ण १२ है ॥

४६ अरनाथ–के ज्ञानकी शुद्ध तिथि कार्तिक शुक्ल१२है परन्तु वखतावर और सेवाराम कृतमें कार्तिक कृष्ण १२ है और चुनीलाल कृत में पौष कृष्ण २ है ॥

४७ अरनाथ–के निर्वाण की शुद्ध तिथि चैत्र कृष्ण ३० अमावस्या है परन्तु वृन्दावन, वखतावर कृत में चैत्र शुक्ल ११ है ॥

४८ मल्लिनाथ–के ज्ञान की शुद्ध तिथि पौष कृष्ण २है परन्तु चुनीलाल कृत में वैशाख कृष्ण १०है ॥

४९ मल्लिनाथ-के निर्वाण की शुद्ध तिथि फाल्गुण शुक्ल ५ है परन्तु देवीदास कृत में
फाल्गुण कृष्ण ५ है ॥

५० मुनिसुव्रतनाथ-के गर्भ की शुद्ध तिथि श्रावण कृष्ण २ है परन्तु देवीदास कृत में श्रावण
शुक्ल २ है ॥

५१ मुनिसुव्रनाथ-के जन्म की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण १० है परन्तु सेवाराम कृत में
वैशाख कृष्ण ५ है ॥

५२ मुनिसुव्रतनाथ-के ज्ञान की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण ९ है परन्तु देवीदास कृत में वैशाख
कृष्ण १० है और चुनीलाल कृत में मार्गशिर शुक्ल ११ है ॥

५३ नमिनाथ-के ज्ञान की शुद्ध तिथि मार्गशिर शुक्ल ११ है परन्तु चुनीलाल कृत में आश्विन
शुक्ल १ है।

५४ नमिनाथ-के निर्वाणकी शुद्ध तिथि वैशाखकृष्ण १४ है परन्तु देवीदास कृतमें वैशाख शुक्ल १४ है॥

५५ नेमिनाथ-के गर्भ की शुद्ध तिथि कार्तिक शुक्ल ६ है, रामचंद्र कृत में कार्तिककृष्ण ६ है ॥

५६ नेमिनाथ-के निर्वाणकी शुद्ध तिथि अषाढ़ शुक्ल ७ है परन्तु देवीदास वृन्दावन, बखतावर
कृत में आषाढ़ शुक्ल ८ है ॥

५७ पार्श्वनाथ-के गर्भकी शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण २ है परन्तु देवीदास कृतमें वैशाखशुक्ल २ है ॥

५८ महावीर-के गर्भ की शुद्ध तिथि आषाढ शुक्ल ६ है परन्तु देवीदास कृत में आषाढ़ कृष्ण १० है।

५९ महावीर के जन्मकी शुद्ध तिथि चैत्र शुक्ल १३ है परन्तु सेवाराम कृत में चैत्रकृष्ण १३ है ॥

६० महावीर-के तपकी शुद्ध तिथि मार्गशिर कृष्ण १० है परन्तु देवीदास कृतमें मार्गशिर शुक्ल १० है॥

६१ महावीर-के ज्ञानकी शुद्ध तिथि वैशाख शुक्ल १० है परन्तु देवीदास कृतमें वैशाखकृष्ण १० है ॥

नोट—यह अशुद्धि सिर्फ चार पांच पाठों की दिखलाई हैं अगर सारे १६ पाठों दूसरी पुस्तकों और पुराणों की दिखलाई जाती तो कथन इस से वीस गुणा बढता जाता इस वास्ते नहीं दिखाई, जिस भाई को निश्चय न हो जोनसा पाठ चाहे निकाल कर संस्कृत चौवीसी पाठ जो इस पुस्तक में छपा है उस के साथ मुकाबला करके देख लेवें ॥

भाषा पुराणों में बनिसबत पूजा पाठों के जियादा तिथि गलत हैं और अनेक पाठ भी अपनी प्रति के साथ नहीं मिलते। मसलन अगर तुम हस्त लिखित वृंदावन या रामचंद या किसी और पूजन पाठ की एक जाति को १० प्रति इकट्ठी करके उनमें तिथियों का मिलान करो तो अनेक जगह फरक पावोगे। हम ने २५ वर्ष तक हिंदुस्तान के अनेक नगरों में एक एक जाति की तीस तीस चालिस चालीस प्रति देखी हैं अनेकों में बड़े फरक पाये हैं। यह इतनी गलतियां अल्पमति लेखकों की कृपा से हैं और कई जगह पाठ रचताओं ने मासों और पक्षों के नाम के अर्थ करने में गलती की है क्योंकि एक मास और एक एक पक्ष के संस्कृत में अनेक नाम हैं कितनी ही जगह संस्कृत ग्रंथों में तिथियों का ऐसा वर्णन है जो सिवाए ज्योतिषियों के उनका पूरा अर्थ समझ ही नहीं सकता। इस कारण से यह गलतियां पाठों में हुई हैं सो जो इस शुद्ध पाठ के होते हुए गलत पाठ की गलत तिथि पढ कर पूजन करेगा वह अपने अशुभ कर्म बांधेगा ॥

 पंच कल्याणक तिथियों का संशोधन कर्त्ता ज्ञानचंद जैनी लाहौर

अथ मास और पक्षों के नाम।

शुक्ल पक्ष के नाम—शुक्ल, शुभ, शुचि, श्वेत, पांडुर, पांड, अवदात, सित, गौर, वलक्ष, धवल, अर्जुन, हरिण, चादनी (ज्योत्स्ना)।

कृष्ण पक्ष के नाम—कृष्ण, नील, असित, श्याम, मेचक, अंधयारी, तामसी काली।

पूर्णमासी के नाम—पक्षांत, पंचदशी, पौर्णमासी।

अमावस्या के नाम—अमावस्या, दर्श, सूर्येन्दुसंगम।

मासों के नाम—शुक्र, ज्येष्ठ को कहते हैं। शुचि, आषाढ को कहते हैं। नभस, श्रावणिक, श्रावण को कहते हैं। नभस्य, प्रोष्टपद, भाद्र, भाद्रपद, भार्द्रों को कहते हैं। आश्विन, इष, अश्वयुज आसोज को कहते हैं। बाहुल, ऊर्ज, कार्तिक को कहते हैं। सहा अगहन मार्गशीर्ष मगसिर को कहते हैं। तैष, सहस्य, पौष को कहते हैं। तपा माघ को कहते हैं। तपस्य फाल्गुनिक फाल्गुण को कहते हैं। मधु, चैत्रिक चैत्र को कहते हैं। माधव, राध वैशाख को कहते हैं।

प्रार्थना—पूजन पाठ पढने वाले भाइयों से निवेदन है कि हे भाइयो! जब तुम भगवान् का पूजन पढ़ो तो जो उस में किसा छन्द में किसी शब्द में मात्रा या अक्षर न्यून या अधिक देखो तो बिना विचारे उसे ठीक करने को काट फाट मत करो क्योंकि जब कोई कवि छन्द रचता है तो

अपने छन्द का वजन ठीक करने को जिस शब्दकी चाहे मात्रा या अक्षर न्यून अधिक कर लेता है और जब छन्द में एक जाति के दो शब्द आवें तो दूसरे शब्दको बदल कर उसी अर्थ वाला रख देता है एक छन्द में एक जाति के दो शब्द लाने यह बड़े कविताओं की कविता में एक जाति का दोष गिना जाता है, यह कवियों का कायदा है इस बात को वही जानते हैं जो कवि हैं।

अथ पंच कल्याणक शुद्ध तिथि।

१ ऋषभदेव–गर्भ आषाढ कृष्ण २ जन्म चैत्र कृष्ण ९ तप चैत्र कृष्ण ९ ज्ञान फाल्गुण कृष्ण ११ निर्वाण माघ कृष्ण १४।

२ अजितनाथ–गर्भ ज्येष्ठ कृष्ण ३० अमावस्या जन्म माघ शुक्ल १० तप माघ शुक्ल ९ ज्ञान पौष शुक्ल ११ निर्वाण चैत्र शुक्ल ५।

३ सभवनाथ–गर्भ फाल्गुण शुक्ल ८ जन्म कार्तिक शुक्ल १५ तप मार्गशिर शुक्ल १५ ज्ञान कार्तिक कृष्ण ४ निर्वाण चैत्र शुक्ल ६।

४ अभिनंदननाथ–गर्भ वैशाख शुक्ल ६ जन्म माघ शुक्ल १२ तप माघ शुक्ल १२ ज्ञान पौष शुक्ल १४ निर्वाण वैशाख शुक्ल ६।

५ सुमतिनाथ–गर्भ श्रावण शुक्ल २ जन्म चैत्र शुक्ल ११ तप वैशाख शुक्ल ९ ज्ञान चैत्र शुक्ल ११ निर्वाण चैत्र शुक्ल ११।

६ पद्मप्रभ–गर्भ माघ कृष्ण ६ जन्म कार्तिक कृष्ण १३ तप कार्तिक कृष्ण १३ ज्ञान चैत्र शुक्ल १५ निर्वाण फाल्गुण कृष्ण ४।

७ सुपार्श्वनाथ–गर्भ भाद्रपद शुक्ल ६ जन्म ज्येष्ठ शुक्ल १२ तप ज्येष्ठ शुक्ल १२ ज्ञान फाल्गुण कृष्ण ६ निर्वाण फाल्गुण कृष्ण ७।

८ चंद्रप्रभ–गर्भ चैत्र कृष्ण ५ जन्म पौष कृष्ण ११ तप पौष कृष्ण ११ ज्ञान फाल्गुण कृष्ण ७ निर्वाण फाल्गुण कृष्ण ७।

९ पुष्पदंत–गर्भ फाल्गुण कृष्ण ९ जन्म मार्गशिर शुक्ल १ तप मार्गशिर शुक्ल १ ज्ञान कार्त्तिक शुक्ल २ निर्वाण भाद्रपद शुक्ल ८।

१० शीतलनाथ–गर्भ चैत्र कृष्ण ८ जन्म माघ कृष्ण १२ तप माघ कृष्ण १२ ज्ञान पौष कृष्ण १४ निर्वाण आश्विन शुक्ल ८।

११ श्रेयांसनाथ–गर्भ ज्येष्ठ कृष्ण ६ जन्म फाल्गुण कृष्ण ११ तप फाल्गुण कृष्ण ११ ज्ञान माघ कृष्ण ३० अमावस्या निर्वाण श्रावण शुक्ल १५।

१२ वासुपूज्य–गर्भ आषाढ़ कृष्ण ६ जन्म फालगुण कृष्ण १४ तप फालगुण कृष्ण १४ ज्ञान माघ शुक्ल २ निर्वाण भाद्रपद शुक्ल १४।

१३ विमलनाथ–गर्भ ज्येष्ठ कृष्ण १० जन्म माघ शुक्ल ४ तप माघ शुक्ल ४ ज्ञान माघ शुक्ल ६ निर्वाण आषाढ़ कृष्ण ८।

१४ अनंतनाथ–गर्भ कार्तिक कृष्ण १ जन्म ज्येष्ठ कृष्ण १२ तप ज्येष्ठ कृष्ण १२ ज्ञान चैत्र कृष्ण ३० अमावस्या निर्वाण चैत्र कृष्ण ३० अमावस्या।

१५ धर्मनाथ–गर्भ वैशाख कृष्ण १३ जन्म माघ शुक्ल १३ तप माघ शुक्ल १३ ज्ञान पौष शुक्ल १५ निर्वाण ज्येष्ठ शुक्ल ४।

१६ शांतिनाथ–गर्भ भाद्रपद कृष्ण ७ जन्म ज्येष्ठ कृष्ण १४ तप ज्येष्ठ कृष्ण १४ ज्ञान पौष शुक्ल १० निर्वाण ज्येष्ठ कृष्ण १४।

१७ कुंथुनाथ–गर्भ श्रावण कृष्ण १० जन्म वैशाख शुक्ल १ तप वैशाख शुक्ल १ ज्ञान चैत्र शुक्ल ३ निर्वाण वैशाख शुक्ल १।

१८ अरनाथ–गर्भ फाल्गुण शुक्ल ३ जन्म मार्गशिर शुक्ल १४ तप मार्गशिर शुक्ल १० ज्ञान कार्तिक शुक्ल १२ निर्वाण चैत्र कृष्ण ३० अमावस्या।

१९ मल्लिनाथ-गर्भ चैत्र शुक्ल १ जन्म मार्गशिर शुक्ल ११ तप मागशिर शुक्ल ११ ज्ञान पौष कृष्ण २ निर्वाण फाल्गुण शुक्ल ५।

२० मुनिसुव्रत नाथ-गर्भ श्रावण कृष्ण २ जन्म वैशाख कृष्ण १० तप वैशाख कृष्ण १० ज्ञान वैशाख कृष्ण ९ निर्वाण फाल्गुण कृष्ण १२।

२१ नमिनाथ-गर्भ आश्विन कृष्ण २ जन्म आषाढ़ कृष्ण १० तप आषाढ़ कृष्ण १० ज्ञान मार्गशिर शुक्ल ११ निर्वाण वैशाख कृष्ण १४।

२२ नेमिनाथ-गर्भ कार्तिक शुक्ल ६ जन्म श्रावण शुक्ल ६ तप श्रावण शुक्ल ६ ज्ञान आश्विन शुक्ल १ निर्वाण आषाढ़ शुक्ल ७।

२३ पार्श्वनाथ-गर्भ वैशाख कृष्ण २ जन्म पौष कृष्ण ११ तप पौष कृष्ण ११ ज्ञान चैत्र कृष्ण ४ निर्वाण श्रावण शुक्ल ७।

२४ महावीर-गर्भ आषाढ़ शुक्ल ६ जन्म चैत्र शुक्ल १३ तप मार्गशिर कृष्ण १० ज्ञान वशाख शुक्ल १० निर्वाण कार्त्तिक कृष्ण ३० अमावस्या।

अथ शुद्ध तिथियों का संस्कृत पाठ ।

(असाधर कृत संस्कृत जिन कल्याणक माला)

श्लोक–पुरुदेवादि वीरान्त, जिनेन्द्राणां ददातुनः ।
श्रीमद्गर्भादि कल्याण श्रेणीनिःश्रेयसः श्रियम् ॥ १ ॥

आषाढ़ कृष्ण–शुचौ कृष्णेद्वितीयायां वृषभोगर्भमाविशत् ।
वासुपूज्यस्तथा षष्टयामष्टम्यां विमल· शिवम् ॥ २ ॥
दशम्यां जन्म तपसी नमेः

अर्थ–आषाढ कृष्ण २ को वृषभनाथ का गर्भ । ६ को वासुपूज्य का गर्भ । ८ को विमलका निर्वाण । १० को नमि का जन्म । १० को नमि का तप ॥

आषाढ़ शुक्ल– शुक्लेतु सन्मतेः ।
षष्टयां गर्भो ऽभवन्नेमेः सप्तम्यां मोक्षमाविशत् ॥ ३ ॥

अर्थ–आषाढ़ शुक्ल ६ को महावीर का गर्भ । ७ को नेमिनाथ का निर्वाण ।

श्रावणकृष्ण–सुव्रतः श्रावणे कृष्णे द्वितीयायां दिवश्च्युतः ।
कुन्थुर्दशम्यां

अर्थ–श्रावण कृष्ण २ को मुनिसुव्रतनाथ का गर्भ । १० को कुन्थुनाथ का गर्भ ॥

शुक्लेतु द्वितीया सुमतेस्तिथिः ॥ ४ ॥

श्रावण शुक्ल– जन्म निष्क्रमणे षष्टयां नेमेः पार्श्वः सुनिर्वृतः ।
सप्तम्यां पूर्णिमायांतु श्रेयान्निः श्रेयसङ्गतः ॥ ५ ॥

अर्थ–श्रावण शुक्ल २ को सुमतिनाथ का गर्भ । ६ को नेमिनाथ का जन्म । ६ को नेमिनाथ का तप । ७ को पार्श्वनाथ का निर्वाण । १५ को श्रेयांसनाथ का निर्वाण ॥

भाद्रपद कृष्ण–भाद्रेकृष्णस्य सप्तम्यां गर्भं शान्तिरवातरत् ।

अर्थ–भाद्रपद कृष्ण ७ को शान्ति नाथ का गर्भ ॥

भाद्रपद शुक्ल–गर्भावतरणं षष्ठयां सुपार्श्वस्य सितेऽभवत् ॥ ६ ॥
पुष्पदन्तस्य निर्वाणं शुक्लाष्टम्यामजायत ।
श्रितः शुक्ल चतुर्दश्यां वासु पूज्यः परं पदम् ॥ ७ ॥

अर्थ–भाद्रपद शुक्ल ६ को सुपार्श्वनाथ का गर्भ । ८ को पुष्पदन्त का निर्वाण । १४ को वासुपूज्य का निर्वाण ॥

आश्विन कृष्ण–आश्विनेऽभूद्द्वितीयायां कृष्णेगर्भोनमेः

अर्थ–आश्विन कृष्ण २ को नमिनाथ का गर्भ ॥

आश्विन शुक्ल–............सिते । नेमेः प्रतिपद्विज्ञान सिद्धोऽष्टम्यां च सिते शीतलः ॥ ८ ॥

अर्थ—आश्विन शुक्ल १ को नेमिनाथ का ज्ञान । ८ को शीतलनाथ का निर्वाण॥

कार्तिक कृष्ण—अनन्तः कार्तिके कृष्णे गर्भेऽभूत्प्रतिपद्दिने ।

चतुर्थ्यां सम्भवाधीशः केवलज्ञान माप्तवान् ॥ ९ ॥

पद्मप्रभस्त्रयोदश्यां प्राप्तोजन्म व्रतेशिवम् ।

दर्शे वीरो

अर्थ—कार्तिक कृष्ण—१ को अनन्तनाथ का गर्भ । ४ को सम्भव नाथ का ज्ञान । १३ पद्मप्रभ का जन्म । १३ को पद्मप्रभ का तप । ३० (अमावस्या) को महावीर का निर्वाण ॥

कार्तिक शुक्ल— द्वितीयायां कैवल्यं सुविधिस्तिथौ ॥ १० ॥

षष्ठ्यां गर्भोऽभवन्नेमेर्द्वादश्यां केवलोद्भवः ।

अरनाथस्य पक्षान्ते सम्भवेशस्य जन्म च ॥ ११ ॥

अर्थ—कार्तिक शुक्ल—२ को पुष्पदन्त का ज्ञान । ६ को नेमिनाथ का गर्भ । १२ को अरनाथ का ज्ञान । १५ को सम्भव नाथ का जन्म ॥

मार्गशिर कृष्ण—मार्गे दशम्यां कृष्णेऽगाद्वीरोदीक्षां ।

अर्थ—मार्गशिर कृष्ण—१० को महावीर का तप ।

जनिव्रते ।

मार्गशिर शुक्ल–

सुविधेः पक्षनौशुक्ले दशम्यांत्वरदीक्षणम् ॥ १२ ॥

एकादश्यां जनुर्दीक्षे मल्लेर्ज्ञान नमेस्तथा ।

अरजन्म चतुर्दश्यां पक्षान्ते सम्भवव्रतम् ॥ १६ ॥

अर्थ–मार्गशिर शुक्ल–१ को पुष्पदन्त का जन्म । १को पुष्पदन्तका तप । १०को अरनाथ का तप । ११ को मल्लिनाथका जन्म । ११को मल्लिनाथ का तप । ११ को नमिनाथ का ज्ञान । १४ को अर का जन्म । १५ को सम्भव का तप ॥

पौष कृष्ण–पौषकृष्णे द्वितीयायां मल्लिः कैवल्य मासदत् ।

चन्द्रप्रभस्तथा पार्श्व एकादश्यां जनिव्रते ॥ १४ ॥

शीतलस्तु चतुर्दश्यां कैवल्यमुदमीमिलत् ।

अर्थ–पौष कृष्ण–२ को मल्लिनाथ का ज्ञान । ११ को चन्द्रप्रभ स्वामी का जन्म । ११ को चन्द्र प्रभ स्वामी का तप । ११ को पार्श्वनाथ का जन्म । ११ को पार्श्वनाथ का तप । १४ को शीतल नाथ का ज्ञान

पौष शुक्ल–शान्तिनाथो दशम्यां तु शुक्ले कैवल्य माप्तवान् ॥ १५ ॥

एकादश्यान्तु कैवल्यम जितेशोऽभिनन्दनः ।

चतुर्दश्यां पूर्णिमायां धर्मश्च लभतेस्मतत् ॥ १६ ॥

अर्थ–पौष शुक्ल १० को शान्तिनाथ का ज्ञान । ११ को अजित का ज्ञान । १४ को अभिनन्दन का ज्ञान । १५ धर्मनाथ का ज्ञान ॥

माघ कृष्ण–माघे पद्मप्रभः कृष्णे षष्ठ्यां गर्भमवातरत् ।
शीतलस्य जनुर्दीक्षे द्वादश्यां वृषभस्यतु ॥ १७ ॥
मोक्षोऽभवच्चतुर्दश्यां दर्शे श्रेयांस केवलम् ।

अर्थ–माघ कृष्ण ६ को पद्मप्रभ का गर्भ । १२ को शीतलनाथ का जन्म । १२ को शीतल नाथ का तप । १४ को ऋषभनाथ का निर्वाण । ३० (अमावस्या) को श्रेयांस का ज्ञान ।

माघ शुक्ल–शुक्लपक्षे द्वितीयायां वासुपूज्यस्य केवलम् ॥ १८ ॥
चतुर्थ्यां विमलो जन्मदीक्षे षष्ठ्यां च केवलम् ।
नवम्यामजितो दीक्षां दशम्यां जन्म चासदत् ॥ १९ ॥
अभिनन्दननाथस्य द्वादश्यां जन्मनिष्क्रमौ ।
धर्मस्य जन्मतपसी त्रयोदश्यां बभूवतुः ॥ २० ॥

अर्थ–माघ शुक्ल २ को वासुपूज्य का ज्ञान । ४ को विमल नाथ का जन्म । ४ को विमलनाथ का तप । ६ को विमलनाथ का ज्ञान । ९ को अजित नाथ का तप । १० को अजित

नाथ का जन्म । १२ को अभिनन्दन का जन्म । १२ को अभिनन्दन का तप। १३ को
धर्मनाथ का जन्म । १३ को धर्मनाथ का तप ।

फाल्गुन कृष्ण–चतुर्थ्यां फाल्गुणे कृष्णे मुक्तिं पद्मप्रभो गतः ।
षष्ठ्यां सुपार्श्वः कैवल्यं सप्तम्यां चाप निर्वृतिम् ॥ २१ ॥
सप्तम्या मेव कैवल्यमोक्षौ चन्द्रप्रभोऽभजत् ।
नवम्यां सुविधिर्गर्भमेकादश्यां तु केवलम् ॥ २२ ॥
वृषो जन्मव्रते तद्वच्छ्रेयान्मुक्तिं तु सुव्रतः ।
द्वादश्या वासुपूज्यस्तु चतुर्दश्यां जनिव्रते ॥ २३ ॥

अर्थ–फाल्गुन कृष्ण ४ को पद्मप्रभ का निर्वाण । ६ को सुपार्श्व का ज्ञान । ७ को सुपार्श्व का निर्वाण । ७ को चन्द्रप्रभ का ज्ञान । ७ को चन्द्रप्रभ का निर्वाण । ९ को पुष्पदन्त का गर्भ । ११ को ऋषभदेव का ज्ञान । ११ को श्रेयांस का जन्म । ११ को श्रेयांस का तप । १२ को मुनिसुव्रत का निर्वाण । १४ को वासुपूज्य का जन्म । १४ को वासुपूज्य का तप ॥

फाल्गुन शुक्ल–अरःशुक्ले तृतीयायां गर्भं मल्लिस्तुनिर्वृतिम् ।
पञ्चम्यां प्रापदष्टम्यां गर्भं श्रीसम्भवोऽपि च ॥ २४ ॥

अर्थ-फाल्गुण शुक्ल ३ को अरनाथ का गर्भ। ५ को मल्लिका निर्वाण। ८ को सम्भव नाथ का गर्भ।

चैत्र कृष्ण-चैत्रे चतुर्थ्यां कृष्णेऽभूत्पार्श्वनाथस्य केवलम्।
पञ्चम्या चन्द्रभो गर्भमष्टम्यां शीतलोऽश्रयत्॥ २५॥
नवम्यां जन्मतपसी वृषभस्य वभूवतुः।
दर्शेऽनन्तस्य कैवल्यं मोक्षोऽरस्याऽभवत्तथा॥ २६॥

अर्थ-चैत्र कृष्ण ४ को पार्श्वनाथ का ज्ञान। ५ को चन्द्रप्रभ का गर्भ। ८ को शीतल का गर्भ। ९ को ऋषभ का जन्म। ९ को ऋषभ का तप। ३० (अमावस्या) को अनन्त का ज्ञान। ३० (अमावस्या) को अनन्त का मोक्ष। ३० (अमावस्या) को अरनाथ का मोक्ष॥

चैत्र शुक्ल-शुक्ल प्रतिपदागर्भे मल्लिः कुन्थुस्तृतीयया।
ज्ञानेऽजितोऽभूत्पञ्चम्यां मोक्षे षष्ठ्यां च सम्भवः॥ २७॥
एकादश्यां जनिज्ञानमोक्षान्सुमति राप्तवान्।
वीरः प्राप्त्रयोदश्यां पद्माभोऽन्त्येहि केवलम्॥ २८॥

अर्थ-चैत्र शुक्ल १ को मल्लिनाथ का गर्भ। ३ को कुन्थुनाथ का ज्ञान। ५को अजित का

निर्वाण। ६को सम्भवका निर्वाण। ११को सुमतिका जन्म। ११को सुमतिका ज्ञान

११ को सुमति का निर्वाण। १३ को महावीरका जन्म। १५ को पद्मप्रभ का ज्ञान

वैशाख कृष्ण–पार्श्वः कृष्णे द्वितीयायां वैशाखे गर्भमाविशत्।

नवम्यां सुव्रतो ज्ञानं दशम्यां च जनिव्रते॥ २९॥

धर्मो गर्भं त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां नामः शिवम्।

अर्थ–वैशाख कृष्ण २ को पार्श्वनाथ का गर्भ। ९ को मुनिसुव्रत नाथ का ज्ञान। १० को

मुनिसुव्रत नाथ का जन्म। १० को मुनि सुव्रतनाथ का तप। १३ को धर्मनाथ का

गर्भ। १४ को नमिनाथ का निर्वाण॥

वैशाख शुक्ल–शुक्ले प्रतिपदि प्राप कुन्थुर्जन्म तपः शिवम्॥ ३०॥

प्राप्तोऽभिनन्दनः षष्ठयां गर्भं मोक्षं च दीक्षणम्।

नवम्यां सुमतिर्वीरो दशम्यां ज्ञान मक्षयम्॥ ३१॥

अर्थ–वैशाख शुक्ल १ को कुन्थु का जन्म। १ को कुन्थु का तप। १ को कुन्थु का निर्वाण।

६ को अभिनन्दन का गर्भ। ६ को अभिनन्दन का निर्वाण। ९ को सुमति का

तप। १० को महावीर का ज्ञान॥

ज्येष्ठ कृष्ण–श्रेयान् ज्येष्ठेऽसितेषष्ठयां दशम्यां विमलोऽपिच।

गर्भं समाश्रितोऽनन्तो द्वादश्यां जन्मनिष्क्रमौ ॥ ३२ ॥
शान्तिः श्रितश्चतुर्दश्यां जन्म दीक्षा शिवश्रियम् ।
अमावास्या दिनेगर्भ मवतीर्णो ऽजितेश्वरः ॥ ३३ ॥

अर्थ–ज्येष्ठ कृष्ण६कोश्रेयांस का गर्भ। १०को विमलनाथका गर्भ। १२को अनन्तनाथ का जन्म। १२को अनन्तनाथका तप। १४को शान्तिनाथका जन्म। १४को शान्तिनाथ का तप १४को शान्ति नाथ का निर्वाण। ३० (अमावस्या)को अजितनाथका गर्भ ॥

ज्येष्ठ शुक्ल–शुक्ले चतुर्थ्यां निर्वाणं प्राप्तो धर्मो जिनेश्वरः ।
सुपार्श्वनाथो द्वादश्यां जनिप्रव्रजिते तिथौ ॥

अर्थ–ज्येष्ठ शुक्ल ४ को धर्मनाथ का निर्वाण। १२ को सुपार्श्वनाथ का जन्म। १२ को सुपार्श्वनाथ का तप ॥

इतीमां वृषभादीनां पुण्यां कल्याण मालिकाम् ।
करोति कण्ठे भूषां यः सस्याद्राशाधरेडितः ॥

ॐनमः सिद्धेभ्यः ।

अथ चतुर्विंशतितीर्थङ्कराणां सस्कृत पूजा लिख्यते ।

विघ्नौघा प्रलयं यान्ति शाकिनी भूतपन्नगा । विषं निर्विषतां याति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१॥

ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

णमो अरहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणम् । णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणम्॥२

प्रणम्य श्रीजिनाधीश लब्धिसामस्त्यसयुतम् । चतुर्विंशतितीर्थेशा वक्ष्ये पूजां क्रमागताम् ॥३॥

अथ आचार्य लक्षणम्–
दर्शन ज्ञान चारित्र सयुतो ममतातिग. ।
प्राज्ञः प्रश्नसहश्च गुरुः स्यात्क्षान्तिनिष्ठितः॥ ४ ॥

अथ पजक लक्षणम्–
दश कालादिभावज्ञा निर्ममः श्रुद्धिमान्वरः ।
सद्दाणयादिगुणोपेतः पूजकः सोत्र शस्यते ॥ ५ ॥

*यजमान लक्षणम्–
विनीतो बुद्धिमान्प्रीतो न्यायोपात्तधनो महान् ।
शीलादिगुणसंपन्नो यष्टा सोयं प्रशस्यते ॥ ६ ॥

मण्डपलक्षणम्–
निर्मलं पृथुलं घण्टातारिकातोरणान्वितम् ।
प्रलंबत्पुष्पमालाढ्यं चतुर्धाकुम्भसंयतम् ॥७॥

भेरीपटहकंशालतालमर्दल नि:स्वनैः।
आकुलं स्त्रैणगीताद्यैर्मण्डपं कारयेद्बुधैः ॥ ८ ॥

सामग्री, लक्षणम्–

स्वजात्योत्कर्षणी पूता नेत्रमानसहारिणी।
सामग्री शस्यते सद्भिः पश्यतां मोद कारिणी ॥ ९ ॥
स्वस्तिकं सर्षपं दूर्वानन्द्यावर्तं सुशोभनम्।
दर्भमष्टद्रव्यं च स्वर्णपात्रेषु योजयेत् ॥ १० ॥

अथमनवचनकायशोधनम्–

जिनसिद्धमहर्षीणामर्घं दत्त्वा शुभाप्तये।
सकली करणं कृत्वा मनोवाक्काय शोधनम् ॥ ११ ॥

अतोग्रेचतुर्विंशतिकास्नपनं क्रियते।

पीठ स्थापनम्–

हेमाचलनिभं शुभ्रमणिपीठं प्रभोज्वलम्।
निवेशयामि निर्थेशामभिषेकाय सन्नति ॥ १२ ॥

भूमिशोधनम्–

शुद्धान्वयसमुत्पन्ना ये जिनाश्चित्रियान्विताः।
विदधामि पुरस्तेषां वारिणा भूमिशोधनम् ॥ १३ ॥

* नोट—यजमान उसको कहते हैं जो अपने पाससे सामग्री या सामग्रीके वास्ते रुपये देकर दूसरे से भगवान् का पूजन करवाता है ॥

पीठ प्रक्षालनम्– क्षीराब्धिजीवनैर्देवैर्धौतं यद्बहुशः पुरा ।
तदंघ्रिपीठतीर्थेशां क्षालयामि शिवालयम् ॥१४॥

दशदिक्पालार्घदानम्– पुरुहुतादयो देवा हरिदन्तरवासिनः ।
गृह्णन्तु शेषयज्ञांशं समाश्रित्येष्टिभूमिकाम् ॥ १५ ॥

बिंबस्थापनम्–यं सुराद्रौ सुरास्तोयैःशुद्धैरस्नापयन्मुदा । तद्बिंबं विष्टरे स्थाप्यं याययजिमकुसुमादिभिः ॥

कलशस्थापनम्–दुग्धाब्धिपाथःसंपूर्णाल्लसत्पल्लवचर्चितान्,हैमराजतकुम्भौघान्स्थापयाम्यभितोजिनान्

तीर्थोदकाभिषेकः-तीर्थानीतैःकबन्धैः श्रीखण्डद्रववासितैः।स्नापयामिजिनान्सर्वान्घुसदभ्यर्चिताङ्घ्रिकान्

इक्षुरसाभिषेकः– सुस्वाद्विक्षुरसालादिरसैः पीयूषभावितैः । अभिषिचेर्हत सर्वानशेषामरसेवितान्॥

घृताभिषेकः– शात कुम्भरसाभासैः सुरभिघ्राणतर्पणैः । आज्यैराप्लावये तीर्थेश्वरान् भव्यगुणार्णवान्

दुग्धाभिषेक.– शीतांशुविशदैर्दुग्धैःकोष्णैरक्षपुष्टिदैः । विदधामि जिनेशानामभिषेकं भवापहम् ॥

दधिस्नपनम्– घनीभूतैः सुधाप्रख्यै राजतामत्र सङ्गतैः । रसज्ञाहर्षदैः शुद्धैर्दधिभिः स्नापये जिनान्

सर्वौषधिस्नपनम्–काश्मीरागुरुकालेयश्रीखण्डेलासुरवङ्मुखैः सर्वौषधिभिरार्हन्त्यं स्नपनं विदधाम्यहम्

कलशाभिषेकः–शुद्धगन्धाम्बुसंपूर्णैःस्वर्णकुम्भैः प्रभोज्वलैः।विश्वान्ते विश्वतीर्थेशानभिषिञ्चे घहानये

गंधाम्बुस्नपनम्–इन्दिराजीवगर्भेण शातकुम्भमयेन च।गन्धाम्बुपूर्णकुम्भेन जिनान् संस्नापयाम्यहम्॥

॥ इति चतुर्विंशतिकास्नपनम् ॥

अथ मण्डलमध्ये सुप्रतीकं संस्थाप्य वसुद्रव्यैः प्रपूजयेत् ।

(अत्र क्षेत्र पालाय अर्घं दत्वा पूजनं प्रारभ्यते) ।

मण्डलसुप्रतीकस्तु स्थाप्यः पैत्तलकस्तथा । तस्योपरि नवंकास्य भाजन स्थापयेद्बुधः ॥ २६ ॥
तस्योपरि चतुर्विंशतीर्थंकरप्रतिमां शुभाम् । संस्थाप्य पूजयित्वानु स्वस्तिक पूजयेत्ततः ॥ २७ ॥

ततोग्रे सहस्रनामानि पठनीयानि ।

अथ जिनसहस्रनामस्तोत्रम् ।

स्वयंभुवेनमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि । स्वात्मनैव तथोद्भूत वृत्तये चित्तवृत्तये ॥ १ ॥
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोनमः । विदांवर नमस्तुभ्य नमस्ते वदतांवर ॥ २ ॥
कामशत्रुहणं देवमामनन्ति मनीषिण· । त्वामानमःसुरैर्मौलिस्रग्मालाभ्यर्चितक्रमम् ॥ ३ ॥
ध्यानदुर्घणनिर्भिन्न घनघाती महातरुः । अनन्तभवसन्तानजयोप्यासीरनन्तजित् ॥ ४ ॥
त्रैलोक्यविजयेनोप्तदुर्दर्प्यमतिदुर्जयम् । मृत्युराजं विजित्यासीज्जन्ममृत्युञ्जयो भवान् ॥ ५ ॥
विधूताशेषसंसारोबन्धुर्नोभव्यबान्धवः । त्रिपुरारिस्त्वमीशोसि जन्ममृत्युजरान्तकृत् ॥ ६ ॥
त्रिकालविषयाशेषतत्त्वभेदात् त्रिधोच्छितम् । केवलाख्य दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोसि त्वमीशिता ॥७॥

त्वामन्धकान्तकं प्राहुर्मोहान्धासुरमर्द्दनात् । अर्द्धन्ते नारयो यस्मादर्धनारीश्वरोस्युत ॥ ८ ॥
शिवः शिवपदाध्यासाद् दुरितारिहरोहरः । शङ्करः कृतशं लोके संभवस्त्वं भवन्मुखे ॥ ९ ॥
वृषभोमि जगज्ज्येष्ठः गुरुर्गुरुगुणोदयैः । नभियो नाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुः कुलनन्दन· ॥ १० ॥
त्वमेक पुरुषस्कन्धस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने । त्वत्रिधाबुधसन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारकः ॥ ११ ॥
चतुःशरणमाङ्गल्यमूर्त्तिस्त्व चतुरः सुधी । पञ्चब्रह्ममयोदेवः पावनस्त्व पुनीहि माम् ॥ १२ ॥
स्वर्गावतारिणे तुभ्यसद्योजातात्माने नमः । जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमोस्तुते ॥ १३ ॥
संनिःक्रान्ताय घोराय परं प्रशममीयुषे । केवलज्ञानसंसिद्धविषाणाय नमोस्तुते ॥ १४॥
पुरुस्तुत् पुरुषस्तुभ्यं विमुक्तिपदभागिने । नमस्तत्पुरुषावस्था भावत्नानर्थ विभ्रते ॥ १५ ॥
ज्ञानावरणनिर्हास नमस्तेनन्तचक्षुषे । दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदर्शने ॥ १६ ॥
नमो दर्शनमोहादिक्षायिकामलदृष्टये । नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागायमहौजसे ॥ १७ ॥
नमस्तेऽनन्तवीर्याय नमोनन्तसुखाय ते । नमस्तेऽनन्तलोकाय लोकालोकविलोकिने ॥ १८ ॥
नमस्तेऽनन्तदानाय नमस्तेऽनन्तलब्धये । नमस्तेऽनन्तभोगाय नमोऽनन्ताय भोगिने ॥ १९ ॥
नम· परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये । नमः परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥ २० ॥
नम· परमविद्याय नमः परभवच्छिदे । नमः परमतत्त्वाय नमस्ते परमात्मने ॥ २१ ॥
नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे । नमः परममार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ॥ २२ ॥

परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः । नमः पारेतमःप्राप्तधाम्ने ते परमात्मने ॥ २३ ॥
नमः क्षीणकलंकाय क्षीणवन्धनमोस्तुते । नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः ॥ २४ ॥
नमः सुगतये तुभ्यं शोभनागतमीयुषे । नमस्तेऽतीन्द्रियज्ञानसुखायानिन्द्रियात्मने ॥ २५ ॥
कायवन्धननिर्मोक्षादकायाय नमोस्तुते । नमस्तुभ्यमयोगाययोगिनामपि योगिने ॥ २६ ॥
अवेदाय नमस्तुभ्यमकपायाय ते नमः । नमः परमयोगीन्द्रवन्दिताङ्घ्रिद्वयायते ॥ २७ ॥
नमः परमविज्ञान नमः परमसंयम । नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नमः ॥ २८ ॥
नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशकस्पृशे । नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षणे ॥ २९ ॥
संज्ञासंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने । नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायकदृष्टये ॥ ३० ॥
अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे । व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेपारमीयुषे ॥ ३१ ॥
अजराय नमस्तुभ्यंनमस्तेऽतीतजन्मने । अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने ॥ ३२ ॥
अलमास्तां गुणस्तोत्रमनन्तास्तावकागुणाः । त्वन्नामस्मृतिमात्रेण परमंशंप्रशास्महे ॥ ३३ ॥
प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणस्त्वं गिरांपतिः । नाम्नामष्टसहस्रेणत्वां स्तुमोभीष्टसिद्धये ॥ ३४ ॥
एवं स्तुत्वाजिनंदेवं भक्त्यापरमया सुधी । पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्र पापशान्तये ॥ ३५ ॥

अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ इति जिनसहस्रनाम स्तोत्र ॥

अथ जिनसहस्रनाम लिख्यते ।

श्रीमान्स्वयम्भूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः । स्वयंप्र (भु) भ·प्रभुर्भोक्ताविश्वभूरपुनर्भव· ॥३६
विश्वात्मा विश्वलोकेशोविश्वतश्चक्षुरक्षरः । विश्वविद्विश्वविद्येशोविश्वयोनिरनीश्वरः ॥ ३७
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशोविश्वलोचनः । विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतोविश्वतोमुखः
विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठोविश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः । विश्वदृक् विश्वभूतेशोविश्वज्योतिरनीश्वरः ॥ ३
जिनोजिष्णुरमेयात्मा विष्णुरीशोजगत्पति· । अनन्तजिदचिंत्यात्माभव्यबंधुरबंधनः ॥ ४० ॥
युगादिपुरुषोब्रह्मापचब्रह्ममयःशिवः । पर·परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठीसनातनः ॥ ४१ ॥
स्वयं ज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः । मोहारिविजयीजेताधर्मचक्री दयाध्वज ॥ ४२ ॥
प्रशांतारिरनंतात्मायोगीयोगीश्वरार्चितः । ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्वज्ञोब्रह्म द्यात्विद्यतीश्वरः ॥ ४३॥
सिद्धोबुद्धःप्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासन· । सिद्धसिद्धान्तविद्ध्येयःसिद्धसाध्योजगद्धित· ।
सहिष्णुरच्युतोऽनंत· प्रभविष्णुर्भवोद्भवः प्रभूष्णुरजरोजयोभ्राजिष्णुर्धीश्वरोव्ययः ॥ ४५ ॥
विभावसुरसंभूष्णु· स्वयंभूष्णुः पुरातनः । परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः॥४६॥

इति श्रीमदादिशतम् ॥ १ ॥ अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः । पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षोदमीश्वरः ॥ ४७ ॥
श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजाविरजाः शुचिः । तीर्थंकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥ ४८ ॥
अनंतदीप्तिर्ज्ञानात्मास्वयंबुद्धः प्रजापतिः । मुक्तः शक्तोनिराबाधोनिष्कलोभुवनेश्वरः ॥ ४९ ॥
निरंजनोजगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः । अचलस्थितिरक्षोभ्यःकूटस्थः स्थाणुरक्षयः ॥ ५० ॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् । शास्ताधर्मपतिर्धर्म्योधर्मात्माधर्मतीर्थकृत् ॥ ५१ ॥
वृषध्वजोवृषाधीशोवृषकेतुर्वृषायुधः । वृषोवृषपतिर्भर्तावृषभांकोवृषोद्भवः ॥ ५२ ॥
हिरण्यनाभिर्भूतात्माभूतभृद्भूतभावनः । प्रभवोविभवोभास्वान्भवोभावो भवांतकः ॥ ५३ ॥
हिरण्यगर्भःश्रीगर्भःप्रभूतविभवोद्भवः । स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथोजगत्प्रभुः ॥ ५४ ॥
सर्वादिः सर्वदृक्सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः । सर्वात्मासर्वलोकेशः सर्ववित् सर्वलोकजित् ॥ ५५ ॥
सुगतिःसुश्रुतःसुश्रुक्सुवाक्सूरिर्बहुश्रुतः । विश्रुतोविश्वतः पादोविश्वशीर्षः शुचिश्रवाः ॥ ५६ ॥
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् । भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥ ५७ ॥

इति दिव्यादि शतम् ॥२॥ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्थविष्ठः स्थविरोज्येष्ठः प्रष्ठः प्रेष्ठोवरिष्ठधीः । स्थेष्ठोगरिष्ठोबंहिष्ठः श्रेष्ठोनिष्ठोगरिष्ठगीः ॥
विश्वभृद्विश्वसृड्विश्वेट्विश्वभुग्विश्वनायकः । विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः ॥५९॥
विभवोविभयोवीरोविशोकोविजरोजरन् । विरागोविरतोऽसंगोविविक्तोवीतमत्सरः ॥ ६० ॥

विनेयजनताबन्धुर्विलीनाशेषकल्मषः । वियोगोयोगविद्विद्वान्विधातासुविधिः सुधीः ॥ ६१ ॥
क्षांतिभाक्पृथिवीमूर्तिः शांतिभाक्सलिलात्मकः । वायुमूर्त्तिरसंगात्मावन्हिमूर्तिरधर्मधृक् ॥६२॥
सुयज्वायजमानात्मासुत्वासुत्रामपूजित । ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञांगममृतंहविः ॥ ६६ ॥
व्योममूर्तिरमूर्त्तात्मानिर्लेपोनिर्मलोचलः । सोममूर्त्तिःसुसौम्यात्मासूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥ ६४ ॥
मंत्रविन्मत्रकृन्मंत्रीमंत्रमूर्तिरनंतक । स्वतंत्रस्तंत्रकृत्स्वांतः कृतांतांतः कृतांतकृत् ॥ ६५ ॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः । नित्योमृत्युंजयोमृत्युरमृतात्मामृतोद्भवः ॥ ६६ ॥
ब्रह्मनिष्ठः परब्रह्मब्रह्मात्मा ब्रह्मसंभवः । महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥ ६७ ॥
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः । प्रशमात्माप्रशांतात्मापुराणपुरुषोत्तमः ॥ ६८ ॥

॥ इतिस्थविष्ठादिशतं । अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

महाशोकध्वजोशोकःकःस्रष्टापद्मविष्ठरः । पद्मेश पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥ ६९ ॥
पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः । स्तवनार्होहृषीकेशोजितजेयःकृतक्रियः ॥ ७० ॥
गणाधिपोगणज्येष्ठोगण्यः पुण्योगणाग्रणीः । गुणाकरोगुणांभोधिर्गुणज्ञोगुणनायकः ॥ ७१ ।
गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः । शरण्यः पुण्यवाक्पूतोवरेण्यःपुण्यनायकः ॥ ७२ ॥
अगण्यः पुण्यधीर्गुण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः । धर्मारामोगुणग्रामःपुण्यापुण्यनिरोधकः ॥ ७३ ॥
पापापेतोविपापात्माविपाप्मावीतकल्मषः । निर्द्वंद्वोनिर्मदः शांतोनिर्मोहोनिरुपद्रवः ॥ ७४ ॥

निर्निमेषोनिराहारो निःक्रियोनिरुपप्लवः। निष्कलंकोनिरस्तैनानिर्धूतांगोनिरास्रवः ॥ ७५ ॥
विशालोविपुलज्योतिरतुलोचिंत्यवैभव । सुसंवृत्तः सुगुप्तात्मा सुबृत्सुनयतत्वविन् ॥ ७६ ॥
एकविद्योमहाविद्योमुनिः परिवृढ. पतिः । धीशोविद्यानिधिः साक्षीविनेताविहंतांतकः ॥ ७७ ॥
पितापितामहःपातापवित्र. पावनोगतिः । त्राताभिषग्वरोवर्योवरदः परमः पुमान् ॥ ७८ ॥
कविःपुराणपुरुषोवर्षीयान्वृषभः पुरु । प्रतिष्ठाप्रभवोहेतुर्भुवनैकपितामहः ॥७९॥
॥ इति महादिशत । अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
श्रीवृक्षलक्षणःश्लक्ष्णोलक्षण्यः शुभलक्षणः । निरक्ष·पुण्डरीकाक्षः पुष्कलःपुष्करेक्षणः ॥ ८० ॥
सिद्धिदःसिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धिसाधन. । वुद्धबोध्योमहाबोधिर्वर्धमानोमहर्धिक: ॥ ८१ ॥
वेदांगोवेदविद्वेद्योजातरुपोविदांवर. । वेदवेद्यः स्वसंवेद्योविवेदोवदतांवरः ॥ ८२ ॥
अनादिनिधनोव्यक्तोव्यक्तवाक्व्यक्तशासनः । युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जुगदादिजः ॥ ८३ ॥
अतींद्रोतींद्रियोर्धींद्रोमहेन्द्रोऽतींद्रियार्थदृक् । अनिंद्रियोऽहमिंद्राच्योंमहेंद्रमहितोमहान् ॥८४॥
उद्भवः कारणंकर्तापारगोभवतारकः । अगाह्योगहनंगुह्यं परार्ध्यःपरमेश्वरः ॥ ८५ ॥
अनंतर्द्धिरमेयर्द्धिरचिंत्यर्द्धिः समग्रधीः । प्राग्रयः प्राग्रहरोभ्यग्रयः प्रत्यग्रयोग्रयोऽग्रिमोग्रजः ॥
महातपामहातेजामहोदर्कोमहोदयः । महायशामहाधामामहासत्त्वोमहाधृतिः ॥ ८७ ॥
महाधैर्योमहावीर्योमहसंपन्महाबलः । महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः॥ ८८ ॥

महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महोदयः । महाप्राज्ञोमहाभागो महानंदोमहाकविः ॥ ८९ ॥
महामहामहाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः । महादानोमहाज्ञानोमहायोगोमहागुणः ॥ ९० ॥
महामहपतिःप्राप्नमहाकल्याणपंचकः । महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशोमहेश्वरः ॥९१॥
इति श्रीवृक्षादि शतम् । अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
महामुनिर्महामौनीमहाध्यानीमहादमः । महाक्षमोमहाशीलोमहायज्ञोमहामखः ॥ ९२ ॥
महाव्रतपतिर्मह्योमहाकांतिधरोऽधिपः । महामैत्रीमयोऽमेयोमहोपायोमहोदयः ॥ ९३ ॥
महाकारुणिकोमंतामहामंत्रोमहायतिः महानादोमहाघोषोमहेज्योमहसांपतिः ॥ ९४ ॥
महाध्वरधरोधुर्योमहौदार्योमहेष्टवाक् । महात्मामहसांधाममहर्षिर्महितोदयः ॥ ९५ ॥
महाक्लेशांकुशःशूरोमहाभूतपतिर्गुरु । महापराक्रमोऽनंतोमहाक्रोधरिपुर्वशी ॥ ९६ ॥
महाभवाब्धिसंतारिर्महामोहाद्रिसूदनः । महागुणाकरः क्षांतोमहायोगीश्वरः शमी ॥ ९७ ॥
महाध्यानपतिर्ध्यातामहाधर्मामहाव्रतः । महाकर्मोऽरिहात्मज्ञोमहादेवोमहेशिता ॥ ९८ ॥
सर्व क्लेशापहः साधुःसर्वदोषहरोहरः । असंख्येयोऽप्रमेयात्माशमात्माप्रशमाकरः ॥ ९९ ॥
सर्वयोगीश्वरोचिंत्यः श्रुतात्माविष्टरश्रवाः । दांतात्मादमतीर्थेशोयोगात्माज्ञानसर्वगः ॥ १०० ॥
प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः । प्रक्षीण बन्धःकामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः॥१०१ ॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः । प्रमाणंप्रणिधिर्दक्षोदक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः ॥ १०२ ॥

आनंदोनंदनोनंदोवंद्योनिंद्योभिनंदनः । कामहाकामदः काम्यः कामधेनुररिञ्जयः ॥१०३॥

इति महा मुन्यादि । अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

असंस्कृतसुसंस्कारोप्राकृतोवैकृतांतकृत् । अंतकृत्कांतगुः कांतश्चिन्तामणिरभीष्टदः ॥ १०४ ॥
अजितोजितकामारिरमितोमितशासनः । जित क्रोधोजितामित्रोजितक्लेशोजितांतकः ॥ १०५ ॥
जिनेंद्रः परमानंदोमुनींद्रोदुंदुभिस्वनः । महेंद्रवंद्योयोगींद्रोयतींद्रोनाभिनंदनः ॥ १०६ ॥
नाभेयोनाभिजोऽजातः सुव्रतोमनुरुत्तमः । अभेद्योऽनत्ययोनाश्वानधिकोधिगुरुः सुधीः ॥ १०७ ॥
सुमेधा विक्रमीस्वामीदुराधर्षोनिरुत्सुकः । विशिष्टः शिष्टभुक्शिष्टः प्रत्ययःकर्मणोनघः ॥
क्षेमीक्षेमंकरोक्षय्यः क्षेमधर्मपतिःक्षमी । अग्राह्योज्ञाननिग्राह्योध्यानगम्योनिरुत्तरः ॥ १०९ ॥
सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः । श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः १०१
सत्यात्मासत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः । सत्याशीःसत्यसंधानःसत्यःसत्यपरायणः ॥ १११ ॥
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः । अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्योगरीयसाम् ॥ ११२ ॥
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः । सदागतिः सदासौख्यःसदाविद्यः । सदोदयः ॥११३ ॥
सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत् । सुगुप्तोगुप्तिभृद्गोप्तालोकाध्यक्षोदमेश्वरः ॥११४॥

॥ इति असंस्कृतशतं । अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मीवाचस्पतिरुदारधी । मनीषीधिषणोधीमान्शेमुषीशोगिरांपतिः ॥११५॥

नैकरूपोनयस्तुंगोनैकात्मानैकधर्मकृत् । अविज्ञेयोप्रतर्क्यात्माकृतज्ञः कृतलक्षणः ॥ ११६ ॥
ज्ञान गर्भोदयागर्भोरत्नगर्भःप्रभास्वरः । पद्म गर्भोजगद्गर्भोहेमगर्भःसुदर्शनः ॥ ११७ ॥
लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षोद्रढीयाञ्जिनईशिता । मनोहरोमनोज्ञांगोधीरोगंभीरशासनः ॥ ११८ ॥
धर्मयूपादयायागोधर्मनेमिर्मुनीश्वरः । धर्मचक्रायुधोदेव·कर्महाधर्मघोषणः ॥ ११९ ॥
अमोघवागमोघाज्ञोनिर्मलोमोघशासनः । सुरूपःसुभगस्त्यागीसमयज्ञ·समाहितः ॥ १२० ॥
सुस्थितःस्वास्थ्यभाक्स्वस्थोनीरजस्कोनिरुद्धवः । अलेपोनिष्कलंकात्मावीतसंगोगतस्पृहः ॥ १२१ ॥
वश्येंद्रियोविमुक्तात्मानिःसपत्नोजितेंद्रियः । प्रशांतोनंतधामर्षिर्मंगलंमलहानघः ॥ १२२ ॥
अनीदृगुपमाभूतोदृष्टिर्दैवमगोचरः । अमूर्तोमूर्तिमानेकोनैकोनानैकतत्त्वदृक् ॥ १२३ ॥
अध्यात्मगम्यागम्यात्मा योगविद्योगिवंदितः । सर्वत्रगःसदाभावीत्रिकालविषयार्थदृक् ॥ १२४ ॥
शंकरःशवदोदान्तोदमीक्षांतिपरायणः । अधिप·परमानंदःपरात्मज्ञःपरात्परः ॥ १२५ ॥
त्रिजगद्वल्लभोभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदयः । त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ।

इति बृहदादि शतम् । अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रिकालदर्शीलोकेशोलोकधातादृढव्रतः । सर्वलोकातिग·पूज्यःसर्वलोकैकसारथिः ॥ १२७ ॥
पुराणपुरुष·पूर्वःकृतपूर्वाङ्गविस्तरः । आदिदेव·पुराणाद्यःपुरुदेवोधिदेवता ॥ १२८ ॥
युगमुख्योयुगज्येष्ठोयुगादिस्थितिदेशकः । कल्याणवर्ण·कल्याणःकल्यःकल्याणलक्षणः ॥

कल्याणप्रकृतिर्दीप्तःकल्याणात्मात्रिकल्मषः । विकलंकःकलातीतः कलिलघ्नःकलाधरः ॥ १३० ॥
देवदेवोजगन्नाथोजगद्बंधुर्जगद्विभुः । जगद्धितैषीलोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ॥ १३१ ॥
चराचरगुरुर्गोप्योगूढात्मागूढगोचरः । सद्योजातःप्रकाशात्माज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥ १३२ ॥
आदित्यवर्णोभर्माभ·सुप्रभःकनकप्रभः । सुवर्णवर्णोरुक्माभःसूर्यकोटिसमप्रभः ॥ १३३ ॥
तपनीयनिभस्तुंगोबालार्काभोनलप्रभः । संध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छवि· ॥ १३४ ॥
निष्टप्तकनकच्छायःकनत्कांचनसन्निभः । हिरण्यवर्णःस्वर्णाभःशातकुंभनिभप्रभः ॥१३५॥
द्युम्नभाजातरूपाभोदीप्तजांबूनद्युतिः । सुधौतकलधौतश्रीःप्रदीप्तोहाटकद्युतिः ॥ १३६ ॥
शिष्टेष्टःपुष्टिदःपुष्टःस्पष्टःस्पष्टाक्षरक्षमः । शत्रुघ्नोप्रतिघोमोघ·प्रशास्ताशासितास्वभूः ॥
शांतिनिष्ठोमुनिज्येष्ठःशिवतातिःशिवप्रदः । शांतिदःशांतिकृच्छांतिःकांतिमान्कामितप्रदः ॥
श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ट·प्रतिष्ठितः । सुस्थित स्थावरः स्थाणुःप्रथीयान् प्रथितःपृथुः ॥

इति त्रिकालदर्श्यादि शतम् । अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

दिग्वासावातरसनोनिर्ग्रंथेशोदिगम्बर· । निष्किचनोनिराशंसोज्ञानचक्षुरमोमुहः ॥ १४० ॥
तेजोराशिरनंतौजः ज्ञानाब्धिः शीलसागरः । तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः ॥ १४१
जगच्चूडामणिर्दीप्तः सर्व विघ्नविनायक· । कलघ्निःकर्मशत्रुघ्नोलोकालोकप्रकाशकः ॥ १४२ ॥
अनिद्रालुरतंद्रालुर्जागरूकःप्रमामयः । लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजःप्रजाहितः ॥ १४३ ॥

प्रशांतरसशैलूषोभव्यपेटकनायकः ॥ १४४ ॥
मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञोजिताक्षोजितमन्मथः । प्रशांतरसशैलूषोभव्यपेटकनायकः ॥१४५॥
मूलकर्ताखिलज्योतिर्मलघ्नोमूलकारणः । आप्तोवागीश्वरःश्रेयान्श्रेयसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥ १४६ ॥
प्रवक्तावचसामीशोमार जिद्विश्वभाववित् । सुतनुस्तनुनिर्मुक्तःसुगतोहतदुर्नयः ॥ १४६ ॥
श्रीशःश्रीश्रितपादाब्जोवीतभीरभयंकरः । उत्सन्नदोषोनिर्विघ्नोनिश्चलोलोकवत्सलः ॥
लोकोत्तरोलोकपतिर्लोकचक्षुरपारधी । धीरधीर्बुद्धसन्मार्गःशुद्धःसूनृतपूतवाक् ॥ १४८ ॥
प्रज्ञापारमितःप्राज्ञोयतिर्नियमितेंद्रियः । भदंतोभद्रकृद्भद्रःकल्पवृक्षोवरप्रदः ॥ १५९ ॥
समुन्मूलितकर्मारिःकर्मकाष्ठाशुशुक्षणीः । कर्मण्यःकर्मठःप्रांशुर्हेयोदेयविचक्षणः ॥ १५० ॥
अनंतशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः । त्रिनेत्रस्त्र्यंबकस्त्र्यक्षःकेवलज्ञानवीक्षणः ॥ १५१ ॥
समंतभद्रःशांतारिर्धर्माचार्योदयानिधिः । सूक्ष्मदर्शीजितानंगःकृपालुर्धर्मदेशकः ॥१५२॥

इति दिव्यसादि शतम् । अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभंयुःसुखसाद्भूतःपुण्यराशिरनामयः । धर्मपालोजगत्पालोधर्मसाम्राज्यनायकः ॥१५३॥
धाम्नांपते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः । समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान् पूतस्मृतिर्भवेत् ॥
गोचरोपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः । स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोभीष्टफलं लभेत् ॥ १५५॥
त्वंमतोसिजगद्बंधुस्त्वंमतोसिजगद्भिषक् । त्वंमतोसिजगद्धातात्वंमतोसिजगद्धितः ॥ १५६ ॥
त्वमेकंजगतांज्योतिस्त्वंद्विरूपोपयोगभाक् । त्वंत्रिरूपैकमुक्त्यंगं सोत्थानंतचतुष्टयः ॥ १५७ ॥

त्वं पंचब्रह्मतत्वात्मापंचकल्याणनायकः । षड्भेदभावतत्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥ १५८ ॥
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः । दशावतारनिर्धार्यो मांपाहि परमेश्वर ॥ १५९ ॥
युष्मन्नामावलींदृब्धाविलसत्स्तोत्रमालया । भवंतंवरिवस्यामःप्रसीदानुगृहाणनः ॥ १६० ॥
इदंस्तोत्रमनुस्मृत्यपूतोभवतिभाक्तिकः । यःसपाठंपठत्येनंसस्यात्कल्याणभाजनं ॥ १६१ ॥
ततःसदेदंपुण्यार्थीपुमान्पठतुपुण्यधीः । पौरुहूतींश्रियंप्राप्तुपरमामभिलाषुकः ॥ १६२ ॥
स्तुत्वेतिमघवादेवंचराचरजगद्गुरुं । ततस्तीर्थविहारस्यव्यधात्प्रस्तावनामिमाम् ॥ १६३ ॥
भगवन्भव्यशस्यानांपापावग्रहशोषणम् । धर्मामृतप्रसेकःस्यात्त्वमेवशरणंप्रभो ॥ १६४ ॥
भव्यसार्थाधिपःप्रोद्यदयाध्वजविराजितः । धर्मचक्रमिदंसज्जंत्वंजयोद्योगसाधनः ॥ १६५ ॥
निर्धूयमोहपृतान्त मुक्तिमार्गपरोधनी । तवोपदिष्टसन्मार्गकालोऽयंसमुपस्थितः ॥ १६६ ॥
इतिप्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयंभर्तुर्जिगीषतः । पुनरुक्तंतदा वाचा प्रादुरासीच्च तत्कृता ॥ १६७ ॥
कृतानिजिनसेनेनजिननामानिसार्थकम् । अष्टोत्तरसहस्राणिसर्वाभीष्टकराणिच ॥ १६८ ॥
तंदेवंत्रिदशाधिपार्चितपदंघातिक्षयानन्तरं । प्रोत्थानंतचतुष्टयंजिनमिमंभव्याब्जनीनामिनम् ॥ १६९ ॥
मानस्तंभविलोकनानतजगन्मान्यंत्रिलोकीपतिं । प्राप्ताचिंत्यबहिर्विभूतिमनघंभक्त्याप्रवंदामहे ॥

इति श्रीजिनसेनाचार्यविरचितं जिनाष्टोत्तर सहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ चतुर्विंशतितीर्थंकराणां समुच्चयपूजा प्रारभ्यते।

ये जित्वा निजकर्म कर्कशरिपून् कैवल्यमाभेजिरे,
दिव्येनध्वनिनावबोधनिखिल चक्रम्यमाण जगत्।
प्राप्ता निर्वृतिमक्षयामतितरामन्तातिगामादिमां,
यक्षे तान् वृषभादिकान् जिनवरान् वृषभादिवीरान्तकान्॥ २८॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्द्धमानान्तास्त्रीर्थङ्करपरमदेवा अत्रावतरतावतरत संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्द्धमानान्तास्तीर्थङ्करपरमदेवा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्॥
ॐ ह्रींवृषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थङ्करपरमदेवा अत्र मम सन्निहिताभवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्

अथाष्टकम्।

जल— सुरसरिज्जलनिर्मलधारया जन्ममृत्यु जरामयवारया।
विविधदुःख निवारणकारणं परियजे जिनराजपदांबुजम् ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्द्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा॥

चन्दनं— अतिसुगन्ध सुचन्दनपावनैरगुरुकुकुमसार विलेपनैः।

भवभयातपदुःख निवारणं जिनपतेश्चरणं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्त जिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षताः— सलिलक्षालित तण्डुलपुष्पकैः सुमनसामपि मानसमोदकैः ।
विविधदुःखनिवारणकारणं परियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥ ३

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्त जिनेभ्यो ऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्पं— कमलकेतकिकुञ्जकदम्बकैः जिनपतिं जितमारमहं यजे ।
भवभयातपदुःखनिवारणं जिनपतेश्चरणं परिचर्चये ॥४॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्त जिनेभ्यः पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्यं— सरसघेवरपायसमोदकै रतिसुगन्धघृतैरसनप्रियैः ।
परमकाञ्चनपात्रगतैरहं जिनपतिं क्षुद्रोगहरं यजे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीपः— घृतसुस्नेहभवैर्वरदीपकैः सकलदिक्सुप्रकाशनकारकैः ।
विमलबोधमयं तमोनाशकं प्रतिदिनं जिनपं परिपूजये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तजिनेभ्यो दीपान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूपः— अगुरुचन्दनगन्धशिलारसैः भ्रमरषट्पदनादसनादितैः ।

प्रवरपुण्य सुगन्धविराजित जिनपतिं जितगन्धभरंयजे ॥७॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तजिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फलं— क्रमुकनिंवुकदाडिममोचकैः फलभरैरपरैः रसमाश्रितः ।

परममोक्षफल प्रतिपत्तये शतमखैर्महितं जिनपं यजे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्त जिनेभ्यः फलानि निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घः— जलसुचन्दन तण्डुलपुष्पकैः घृतवरैर्वरदीपकधूपकैः ।

फलभरैर्जिनराजपदाम्वुजे परियजेऽर्घविधानप्रधानतः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ।

नाभेयादिचतुष्क विंशतिजिनाः लोकाग्रभागेस्थिताः पापालयःस्मरणाद्व्रजन्ति विलयंयेषां क्षणान्नामतः । ते कुर्वन्तु सुमङ्गलं मुनि गणै राराधनीयाश्चवो भव्यानामिह पूजिताश्च विमलाध्येयाः स्तुताःसं श्रिताः ॥ १ ॥ पीतप्रभ श्रीवृषभंहिदेवं वन्देवृषाङ्कं सुरनाथसेव्यं । स्तोष्ये जितहाटकभं यथार्थं कर्मघ्नतोनागध्वज कृतार्थम् ॥ २॥ श्रीसंभवनौमिगुणैर्गरिष्टं वाहाङ्कितं गौरतनुं वरिष्ठं । सेव्येभिनन्द्यं कपिचिह्नधारं गाङ्गेयभ मुक्तिगृहाप्तसारम् ॥ ३ ॥ कोकाङ्कितं श्रीसुमतिं गणेशंपीतच्छविं नौमि

हरिं जिनेशं । पद्मप्रभं स्तौमिविभुं जिनेन्द्रं पद्मध्वजं रक्तममानतेन्द्रम् ॥ नीलच्छविं स्वस्तिकलक्ष्मधारं वन्दे सुपार्श्वंममतापकारम् ॥ चन्द्रप्रभं चन्द्रसमानभासं चन्द्राङ्कितंनौमिहताशपाशम् ॥ ५ ॥ श्रीपुष्पदन्तंसितकान्तमन्तम् मीनध्वजं स्तौमि गुणैरनन्तम् । हेमद्युतिं शीतलमार्तिहारं श्रीवृक्षचिह्नं परिनौमि सारम् ॥ ६ ॥ श्रेयांसमीशं वरगैण्डकेतुं पीतप्रभं स्तौमि भवाब्धिसेतुम् । श्रीवासुपूज्यं वरशोणभासं वन्दे लुलायाङ्कधरं गताशम् ॥ ७ ॥ दोषैर्विहीनं विमलं स्तुवेऽहं सत्सूकराङ्कं शुभगौरदेहम् । वन्देऽनन्तं किल चम्पकाभ सेधाङ्कितं पञ्चमलब्ध लाभम् ॥ ८ ॥ धर्मं जिनेशं कनकावदातं वज्राङ्कितं नौमि शिवाप्तशातम् । शान्ति मृगाङ्कं तरनीयगात्रं वन्दे क्षमासत्यसुधर्मपात्रम् ॥ ९ ॥ कुन्थुप्रभुं स्तौमि सुहेमकांतिं छागाङ्कितं लम्भितकर्मशान्तिम् । वन्देऽरनाथं कनकप्रभास पाठीनचिह्नं सुगुणावकाशम् ॥ १० ॥ नीलोत्पलाङ्कं नमिमर्थिमान्य पीतप्रभ नौमि सुमुक्तधान्यम् । शंखाङ्कितं नेमिजिनेन्द्रराजंकृष्णप्रभं स्तौमि गिरीन्द्रराजम् ॥ ११ ॥ पार्श्वं भुजङ्गाङ्कमहं सुशान्तं नील प्रभं स्तौमि हृषीककान्तम् । श्रीवर्द्धमानंबहुवर्द्धमानं सिंहाङ्कितं नौमि सुरेशगानम् ॥ १२ ॥ इति जिन जयमालां पावनां वर्णसारांपठति विमलबुद्ध्या प्रातरुत्थाय नित्यम् । सुरहरिहयकीर्त्या कीर्तिनां यो विशुद्धां स भवति नितरां वै स्वर्गरामाक्षिपूज्यः ॥ १३ ॥

घत्ता छन्दः—सकल गुणसमृद्धान् केवलज्ञानशुद्धान् । सुमनिजनपयोधीन् ते हि मांदत्तसिद्धीन् ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्द्धमान तीर्थङ्कर परमदेवेभ्यो ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति चतुर्विंशति तीर्थङ्करसमुच्चयपूजा समाप्ता ॥

अथ श्रीऋषभदेव पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नैक्तु ते वषट्कार जाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥ १ ॥

ॐह्रीं अर्हन्, श्रीऋषभदेव, अत्रागच्छ आगच्छ, अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐह्रीं अर्हन् श्रीवृषभदेव, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐह्रीं श्रीअर्हन् श्रीयुगादिदेव, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ॥

जलं—विमलगन्धसुवासितसारया सुरसरिद्वरजीवनधारया । सकल दुःख हरं वृषभेश्वरं
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम् ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्रीवृषभतीर्थङ्कराय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनं—सकलतापहरैः सुखदायकैरगुरुकुंकुममिश्रितचन्दनैः ॥ सकलदुःखहरं वृषभेश्वरं
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम् ॥ २ ॥ ॐह्रीं श्रीवृषभदेवाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः—कमल गन्धसुवासित तण्डुलैर्धवलमौक्तिकराशिसमानकैः । सकलदुःखहरं वृषभेश्वरं
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम् ॥ ३ ॥ ॐह्रीं श्रीऋषभदेवाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प— कुसुममालति जाति सुचम्पकैः वकुलपाडलकुन्दसरोरुहैः । सकल दुःख हरं वृषभेश्व
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभेश्वराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यं— सुघृत मिश्रित मोदकखज्जकैः वरसुपायसव्यञ्जनभक्तकैः । सकल दुःखहरं वृषभेश्वरं
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभजिनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः— कनककान्तिसुसर्पिकृतैर्वरैः प्रबलकान्तिभरैस्तमोनाशकैः । सकल दुखहरं वृषभेश्वरं
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम्॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभतीर्थराजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः— अगुरुचन्दनमिश्रितधूपकैः सकलकर्मविदाहनदक्षकैः । सकल दुःखहरंवृषभेश्वर
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभेश्वरदेवाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलं— रुचिकदाडिम श्रीफलमोचकैः कमुक निम्बरसालकसत्फलैः । सकल दुःखहर वृषभेश्वरं
प्रवियजे नतनाकिनरेश्वरम ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवाय फलं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

अर्घः— सुजीवनगन्धसुतण्डुलोघैः पुष्पैः स्विक्षुभरचयैः सुधूपे । अर्घैर्महाफलभरैः कुशदर्भयुक्तैः
श्रीमद्युगादिपदयुग्म समर्चयेहम् ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभजिनेन्द्रायऽर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणकानि ॥

गर्भः— आषाढकृष्णपक्षेच द्वितीयायां जिनोत्तमम् । मरुदेवीगर्भसञ्जातं पूजयाम्यष्टधार्चनैः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णद्वितीयायां श्रीऋषभदेवगर्भावतारायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म– पवित्रे चैत्रमासे च कृष्णे सुनवमीदिने। जातमादिजिनं चर्चे शुद्धधर्मप्रकाशकम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिदेवाय चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्म जातकायअर्घनिर्वपामीति स्वाहा।

तपः– शोभने चैत्र मासे च कृष्णे सुनवमीदिने। सर्वौषधीन् परित्यज्य धारितं चोत्तमं तप· ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां युगादिदेवतपोधारकायअर्घनिर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञानं– फाल्गुणे कृष्ण पक्षे च शोभनैकादशीदिने। वृषभं वृषदातारं संयजे ज्ञाननायकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णैकादश्यां श्रीआदिनाथज्ञानकल्याणकायअर्घनिर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणं–माघ मासे कृष्ण पक्षे पूते चतुर्दशो दिने। वृषभं मुक्तिसप्राप्तं पञ्चमीगतिदायकम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चतुर्दश्यां श्रीऋषभदेव मोक्ष कल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

श्रीतीर्थकृत्प्रथम एव वृषाङ्कमूर्त्ति प्राक्कर्मभुत्रि त्रिधिनिरूपकआर्यपुंसाम्।
योधर्मचक्रपरिवर्त्तक आर्यखण्डे मुक्त्यै तमेव वृषभं वृषदं नमामि॥६॥ इतिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ जयमाला।

जय प्रथम जिनेश्वर महिपरमेश्वर ईश्वर गुणगणमय सदनम्।
जय नमितसुरासुर सकलसुखाकर जय जिन जननामय हरणम् ॥ १ ॥
जय आदिजिनेन्द्र विशालरूप जय पूजितशक्रसुचन्द्रभूप।

जय नाभिनरेश्वरपुत्रसार जयमरुदेवीसुत धर्मधार ॥ २ ॥
जयआदि धर्म प्रकाशवीर जय प्रथमयतीश्वर प्रथमधीर ।
जय वन्दितव्यन्तरराजराज जयनमितसुहिमकरभानुराज ॥ ३ ॥
जयज्ञानरूप जयशर्मरूप जयचन्द्रवदन अकलङ्कभूप ।
जय भव्यदयाकर भव्यहंस जय प्रकटितशुभवरचारुवंश ॥ ४ ॥
जय प्रथम प्रजापति आदिईश जय प्रथमयतीश्वर प्रथमधीश ।
जय गणधरयतिनुतसेव्यपाद जय खगशकादिकसेव्यपाद ॥ ५ ॥

घत्ताछन्द:- जय पापतिमिरहर पूर्णचन्द्र जय दोषनिवारण पुरुजिनेन्द्र ।
जय प्रथमतीर्थंकरपरमदेव जय परम पुरुष कृतविबुधसेव ॥ ६ ॥
जय जिनसारं दर्शनधारं शुद्ध केवलबोधमयन् ॥
वन्दे भवतारं कृतित मारं शान्तभावकृत वनसुदयम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभजिनेन्द्राय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्दः-नाभिस्तातोऽथ माता विलसति मरुदेव्युत्तराषाढ षाढा, तारा कैलाशशैलःपरमपदपदंपूर्वं नीताद्वृषाङ्कः । चापानां पञ्चाशच्छुन्ननिरधिकनकभाङ्गदीप्तिर्वटोगो, यस्यासौगोमुखेशपुरुवतु जिनो नः स च क्रेश्वरीशः ॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्री ऋषभदेव पूजा जयमाला समाप्ता ॥

अथ अजितनाथजिनपूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेक्तुं ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हन्श्रीअजितनाथ, अत्रागच्छ आगच्छ, अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं अर्हन् श्री अजितनाथ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री अर्हन् अजितनाथ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलं—विमलगन्ध सुवासितसारया वरसुक्षीरधिनीरसुधारया । अजितदेवपतिं जिननायकं
प्रवियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अजितनाथ तीर्थंकराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनं—सकलतापहरैः शिवदायकैरगुरुकुंकुममिश्रितचन्दनैः । अजितदेवपतिं जिननायकं
प्रवियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अजितनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः—कमलगन्धसुमिश्रिततण्डुलैर्धवलमौक्तिकराशि समप्रभैः । अजितदेवपतिं जिननायकं
प्रवियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥३॥ ॐ ह्रीं अजितजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पं—कुसुममालतिजाति सुचम्पकैर्वकुलपाडलकुन्दसरोरुहैः । अजितदेवपतिं जिननायकं

प्रवियज जिनराज पदाब्जकम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अजितजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यं---घृतसुमिश्रितमोदकखज्जकैर्हृदयनेत्रप्रमोदकरैर्वरैः । अजितदेवपतिं जिननायकं
प्रवियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अजितस्वामिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः---घृतस्नेह कृतैर्वरदीपकैस्तमवितानहरैः कर्पूरजैः । अजितदेवपतिं जिननायकं
प्रवियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अजितनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः---अगुरुचन्दनमिश्रितधूपकैरशुभकर्मविदाहनदक्षकैः । अजितदेवपतिं जिननायकं
प्रवियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अजितजिनेश्वराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलं---रुचिकदाडिम श्रीफलमोचकैः क्रमुकनारंगनिवरसालकैः । अजितदेवपतिं जिननायकं
प्रवियजे जिनराजपदाब्जकम् ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अजितनाथभगवते फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः---वार्गन्धपुष्पाक्षतचारुदीपैर्धूपैः फलैः सर्षपदर्भवाद्यैः । अनर्घ्यसत्काञ्चनपात्रसंस्थमर्घं ।
ददाम्यजितनाथपदाम्बुजाय ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अजितनाथायअर्घं निर्वपामीति स्वहा ।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः---ज्येष्ठमासे अमावस्या रोहिणीसुनक्षत्रके । देव्या विजयसेनाया गर्भप्राप्तं जिनंयजे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां श्री अजितनाथगर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म—माघमासे शुचौ पक्षे पवित्रे दशमीदिने। सुलग्ने अजितंदेवं पूजयामि सुजन्मजम् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अजितनाथाय माघशुक्लदशम्यां जन्मकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः—माघमासे शुक्लपक्षे विशुद्धे नवमीदिने। अजितं जितकर्मौघं महाभिषवसारथिम् ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं अजिततीर्थेश्वराय माघशुक्लनवम्यां तपःकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानं—पौषमासे शुचौ पक्षे विशालैकादशीदिने। अजितं जितमोहारिं पूजयामि गुणोदधिम् ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं पौषशुक्लैकादश्यां अजितदेवज्ञानकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणं—चैत्रमासे शुभ्रपक्षे विशाले पञ्चमीदिने। अजितं पूजये सिद्धं विवर्णविगतामयम् ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपञ्चम्यां अजितनाथनिर्वाणकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

गजध्वजः काञ्चनकान्तिकायो जितारिकान्तो विजयातनूजः।
इक्ष्वाकुवंशाम्बुजतिग्मरोचिः संप्राच्यर्तेऽस्मिन्नजितो जिनेशः ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं अजितनाथाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला।

जय अजितजिनेश्वर सकलदुरितहर प्रतिवोधितत्रिभुवननिलय।
जयज्ञानदिवाकर सकलसुखाकर धर्ममयीकृतभूवलय ॥ १ ॥

जय अजितजिनेश्वर अजितनाथ प्रतिबोधितबहुजन भव्यसार्थ ।
जयजितशत्रुसुतधीर धीर जय विजयासेनासूनुवीर ॥ २ ॥
जयहेमवर्ण वरशुद्धकाय जयसार्द्धचतुःशतधनुष्काय ।
जयद्विःसप्ततिलक्षसुपूर्वआय जयसेवित सुरनरइन्द्रराय ॥ ३ ॥
जयदर्शनभवनसरोजसूर दूरीकृत दुर्नय तिमिरपूर ।
जयविषम मदाष्टकविटपनाग जनवाञ्छितार्थं वितरणसुराग ॥ ४ ॥
जय सकलत्रिदशपतिवन्द्यपाद जयजलधरसमगम्भीरनाद ।
जय स्याद्वादध्वनिविजितवाद जयहरिहरवरसुरनमितपाद ॥ ५ ॥
घताछन्दः—जय अजितजिनेन्द्रं नमितसुरेन्द्रं वन्दितसकलसभासुगणम् ।
जय विजितकुज्ञानं दत्तसुज्ञानं वन्दे भव्यसुशान्तकरम् ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनाय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वहा ।
छन्दः—माता श्रीविजयापिता जितरिपूरोहिणीभं पुरं शाकेतं कनकाङ्कभाध्वजइभःस्यात्सप्तपर्णोद्रुमः ।
सम्मेदः शिवभूशतानि धनुषां चत्वारि चञ्चाशता—माम यस्य स रोहिणी युतमहायक्षेट्पुनीतोऽजितः॥७॥
इत्याशीर्वादः । इति श्रीअजितनाथपूजा समाप्ता ॥२॥

अथ सम्भवनाथजिनपूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोद्दङ्कितस्थापनस्य ।
स्वं निर्नेक्तुं तेवषट्कार जाग्रत्सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्र,अत्रागच्छ आगच्छ,अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्री सम्भवनाथजिनेन्द्र, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्री सम्भनाथजिनेन्द्र अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलम्—वारिणाहारिणा नित्यंगन्धद्रव्येन वासिना । पूजयामि जिनाधीशं सम्भवं शिवलब्धये ॥१॥
ॐ ह्रीं सम्भवतीर्थङ्कराय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्—चन्दनागुरुकर्पूरकाश्मीरेण सुगन्धिना । पूजयामि जिनाधीशं सम्भवं शिवलब्धये ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं सम्भवनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः—अक्षतैरक्षतैर्दीर्घैर्विशदैश्चन्द्रसन्निभैः । पूजयामि जिनाधीशं सम्भवं शिवलब्धये ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं सम्भवनाथायअक्षतान्निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पं—चम्पकैः कमलैः कुन्दैः केतकीपारिजातकैः । पूजयामिजिनाधीशं सम्भवं शिवलब्धये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवजिनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

नैवेद्यं—खज्जकैरोदनैश्चारुव्यञ्जनैः प्राज्यपूरकैः । पूजयामि जिनाधीशं सम्भवं शिवलब्धये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवदेवाय नैवद्यं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

दीपः—तैलाज्यकृतदीपश्च कर्पूरैस्तिमिरापहैः । पूजयामि जिनाधीशं सम्भवं शिवलब्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवभगवते दीपं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

धूपः—धूपैर्धूपितदिक्चक्रैः कर्पूरागुरुसम्भवैः । पूजयामि जिनाधीशंसम्भवं शिवलब्धये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सम्भव जिनदेवाय धूपं निर्वपामीनिस्वाहा ॥

फलं—नारिकेलादिनारङ्गपनसैः बीजपूरकैः । पूजयामि जिनाधीशं सम्भवं शिवलब्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवनाथाय फलंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घः—अवगन्धाक्षतपुष्पैश्च दीपैर्धूपैः फलस्तथा । पूजयामि जिनाधीशं सम्भव शिवलब्धये ॥९॥

ॐ ह्रीं सम्भवजिनेन्द्रायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः—फाल्गुणेसितपक्षे च अष्टम्यां सम्भवं जिनम् । सुषेणाया महागर्भे यजेहं जिनपुङ्गवम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवनाथाय फाल्गुणशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकायअर्घं निर्वपामीनिस्वाहा ।

जन्म-शोभने कार्त्तिकेमासे पूर्णिमायांतु सम्भवम्। पूजयामि जिनाधीशमष्टद्रव्य समुच्चकैः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवतीर्थेश्वराय कार्त्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्मकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तपः-मासे मार्गशिरे शुभे शोभने पूर्णिमातिथौ। सम्भवं व्रतदातारं यजे चारित्रभूषणम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लपूर्णिमायां तप कल्याणयअर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञानम-कार्त्तिके कृष्णपक्षे च चतुर्थ्यामुत्तमेदिने। सम्भवं भवहन्तारं संयजे भुवनोत्तमम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवतीर्थङ्कराय कार्त्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाणम्-चैत्रमासे शुक्लपक्षे विशाखाषष्ठिकादिने। सम्भवं प्रयजे सिद्धं गुणाष्टकविभूषितम्॥५॥

ॐ ह्रीं सम्भवजिनेश्वराय चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्रावस्तिनाथोद्दढराजसूनुः प्रज्ञप्तियक्षीत्रिमुखाधिनाथः।
वाजिध्वजश्चारुसुवर्णवर्णः संपूज्यते सम्भवतीर्थनाथः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं सम्भवजिनपञ्चकल्याणकायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला।

जयसम्भवजिनवर नमितसुरेश्वर गणधरमुनिपूजितचरणम्।
जयतृतीयजिनेशं परमविशुद्धं वन्दे त्रिभुवनशिवकरणम् ॥ १ ॥

जयधर्मप्रकाशनदेवदेव जयअमरेश्वरकृतचरणसेव ।
जयकामविमर्दनपरमशूर जयमोहविमर्दन परमक्रूर ॥ २ ॥
जयदृढरथतात सुभूविख्यात जयमातसुषेणागर्भजात ।
जयधनुष्चतुःशतउच्चकाय जयवज्रवृषभ नाराचधाय ॥ ३ ॥
जयतप्तकनकसमशुद्धकाय जयषष्ठिलक्षसुपूर्वआय ।
जयकेवलबोधस्वरूपरूप जयवन्दितेन्द्रफणीन्द्रभूप ॥ ४ ॥
जयपरमपुरुष परमात्मज्योतिर्जय जगदानन्दक विश्वज्योति ।
जयसकलतत्वज्ञायकसुसार जयसकलपदार्थविचारधार ॥ ५ ॥
जयकर्मरहितविकलङ्कशुद्ध जयज्ञानपयोनिधिविबुधबुद्ध ।
जयमुक्तिकामिनीरमणदक्ष जयज्ञानवज्रहतवादिपक्ष ॥ ६ ॥

घताछन्दः—जयबोधावभानुं सुरकृतगानं ज्ञानं सकलकुज्ञानहरम् । जयवशीकृतमानं विबुधप्रधानं वन्दे सम्भववरचरणम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं सम्भवनाथाय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्दः—सेना वा जनको जितारिरनघःशीर्षंमृगाढ्यंशुभंश्रावस्तीनगरी ध्वजश्च तुरगःशालश्च चैत्यद्रुमः ।
सम्मेदःशिवभूः शतानिधनुषां चत्वारि मानंशुभंगोरीपस्य स सम्भवस्त्रिमुखयुक् प्रज्ञप्तिनाथोऽवतात् ॥

इत्याशीर्वाद । इति श्री सम्भवनाथतीर्थङ्कर पूजा समाप्ता ॥

ह्रीं अभिनन्दनजिनेशाय माघशुक्ल[illegible]

मासे निर्मले च विशुद्धे द्वादशीदिने । यजेभिनन्दनं देवं लोकालोकप्रकाशकम् ॥ ३ ॥

ह्रीं अभिनन्दनजिनाधीशाय माघशुक्लद्वादश्यां तपोधारकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

-पौषमासे परमशुक्ले चतुर्दशीदिने शुभे । अभिनन्दनमर्चेहं केवलज्ञानभाजनम् ॥ ४॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दन परमेश्वराय पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानप्राप्तायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

णम्-वैशाखे चार्जुनपक्षे सुषष्ठीशुद्धवासरे । अभिनन्दनज्ञानेशं मुक्तिसाम्राज्यनायकम् ॥५॥

ॐह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्राय वैशाख शुक्लषष्ठयांनिर्बाणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सिद्धार्था संवराज्जात तप्तकाञ्चनसन्निभम् । शाकेतस्वामिनापूज्यं कपिकं अभिनन्दनम् ॥६॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय पञ्चकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ।

जय अभिनन्दन सुरनरवन्दन पूजयामि तव पदकमलम् । शिवतियरञ्जन दुःखविभञ्जन वसुद्रव्यैःप्रयजे शिवदम् ॥१॥ कनककोमलपादतलं वरं विशदबोधमयं गुणसुन्दरम् । प्रबलमोहनिकृन्त

… जातिसुचम्पकवकुलपाडल कुन्दकदम्बकैः। प्रवियजे जिनपं ह्यभिनन्दनं
सकलकल्मषव्रातहरं परम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अभिनन्दनभगवते पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्यं–घृतसुपायसमोदकखज्जकैः हृदयनेत्रप्रमोदकरैर्वरैः। प्रवियजे जिनपं ह्यभिनन्दनं
सकलकल्मषव्रातहरं परम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अभिनन्दनतीर्थङ्कराय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीपः–घृतस्नेहकृतैर्वरदीपकैःतमवितानहरैर्ज्वलदर्चिभिः। प्रवियजे जिनपं ह्यभिनन्दनं
सकलकल्मषव्रातहरं परम् ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूपः–अगुरुचन्दनपुलासिलारसैः प्रबलकर्मविदाहनदक्षकैः। प्रवियजे जिनपं ह्यभिनन्दनं
सकलकल्मषव्रातहरं परम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अभिनन्दनतीर्थाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फलम्–रुचिकदाडिम श्रीफलमोचकैः क्रमुकनारंगनिम्बुकसत्फलैः। प्रवियजेजिनपं ह्यभिनन्दन
सकलकल्मषव्रातहर परम् ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्राय फलंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घः–वार्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपैः फलैरद्भुत वाद्यगीतैः। सिद्धार्थसूनुं कपिराजचिह्नं
संपूजये श्रीअभिनन्ददेवम् ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणकानि।

गर्भः–वैशाखशुक्लपक्षे च षष्ठीतिथौ जिनोत्तमम्। सिद्धार्थागर्भसंजातं यजेहमभिनन्दनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्राय वैशाखशुक्लषष्ट्या गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥
जन्म–माघमासे शुभ्रपक्षे विशुद्धेद्वादशीदिने । पूजयाम्यहमर्घेण अभिनन्दनस्वामिनम् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनेशाय माघशुक्लद्वादश्यां जन्मजातकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥
तप–माघमासे निर्मले च विशुद्धे द्वादशीदिने । यजेभिनन्दनं देवं लोकालोकप्रकाशकम् ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनाधीशाय माघशुक्लद्वादश्यां तपोधारकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥
ज्ञानम्–पौषमासे परमशुक्ले चतुर्दशीदिने शुभे । अभिनन्दनमर्चेहं केवलज्ञानभाजनम् ॥ ४॥
ॐ ह्रीं अभिनन्दन परमेश्वराय पौषशुक्लचतुर्दश्या ज्ञानप्राप्तायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
निर्वाणम्–वैशाखे चार्जुनेपक्षे सुषष्ठीशुद्धवासरे । अभिनन्दनज्ञानेशं मुक्तिसाम्राज्यनायकम् ॥५॥
ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्राय वैशाख शुक्लषष्ठ्यांनिर्वाणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
सिद्धार्था संवराज्जात तप्तकाञ्चनसन्निभम् । शाकेतस्वामिनापूज्यं कपिकं अभिनन्दनम् ॥६॥
ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय पञ्चकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ।

जय अभिनन्दन सुरनरवन्दन पूजयामि तव पदकमलम् । शिवतियरञ्जन दुःखविभञ्जन वसुद्रव्यैःप्रयजे शिवदम् ॥१॥ कनककोमलपादतलं वरं विशदबोधमयं गुणसुन्दरम् । प्रबलमोहनिकृन्त

सनातन प्रवियजे प्रमदादभिनन्दनम् ॥ २ ॥ अचलधैर्यगुणैः प्रविराजितं शतसुवासवराजितराजितम् । प्रबलमोहनिकृन्तसनातन प्रवियजे प्रमादादभिनन्दनम् ॥ ३ ॥ दलितदुष्टतरं अघसंचयं विशदवाग्भरदर्शिनसंचयम् । प्रबलमोहनिकृन्तसनातन प्रवियजे प्रमदादभिनन्दनम्॥४॥अतिशयामृततर्पितगात्रकं परमनिर्वृतिदं वरपात्रकम् । प्रबलमोहनिकृन्तसनातनं प्रवियजे प्रमदादभिनन्दनम्॥५॥ विमलमोक्षपद प्रविराजितं स्तवमिमं विशदाक्षरगुम्फितम् ।प्रबलमोहनिकृन्तसनातनं प्रवियजे प्रमदादभिनन्दनम्॥६॥

घताछन्दः– इत्थं जनोयो विदधाति पूजां भक्त्यासदा श्रीजिननायकस्य ।
स्वर्गापवर्गलभते सदैव श्रीभूषणोक्तं विदधातु चित्ते ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

वृत्तम्–सिद्धार्था वा सुवरणाभरुगरपिजनकः संवरोंकः कपिः,
पूःशाकेताख्याश्रितागः सरल इति पुनर्वस्वभिख्यंगमुर्वी ।
मुक्तेःसम्मेदशैल स्त्रिशतधनुरथोच्चं च पञ्चाशतामा यस्यासौ,
शृंखलेशोवतु जगदपि यक्षेश्वरेशोभिनन्दः ॥ ८ ॥ इत्याशीर्वादः ।

इति श्री अभिनन्दनजिन पूजा समाप्ता ॥

अथ सुमतिनाथ पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नैक्तुं ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र, अत्रागच्छ आगच्छ,अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीसुमतिनाथ, जिनेन्द्र , अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र, अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम्–जलम्–स्वर्धुनीसमुद्भवैः सुगन्धमिश्रितैर्जलैः भृङ्गनालनिर्गतैर्जरादिदुःखनाशकैः ।
सुसन्मति यजेमुदाशिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्धसौख्यदायकं निरामयं निरञ्जनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं सुमतिनाथ तीर्थंकराय जलम् निर्वपामीतिस्वाहा ॥

चन्दनम्–चन्दनैश्च शीतकान्तिसन्निभैः जिनांघ्र्यगैः कुंकमेन कपूरेण मिश्रितै सुघर्षितैः ।
सुसन्मतिं यजे मुदा शिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्धसौख्यदायकं निरामयं निरञ्जनम् ॥ २ ॥
ॐ ह्री सुमतिजिनेन्द्राय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः–व्रीहिजातिसम्भवैः शुभाक्षतैः सुनिर्मलैः मौक्तिकाभ पुञ्जकैर्हिरण्यपात्र संस्थितैः ।
सुसन्मतिं यजे मुदा शिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्धिसौख्यदायकं निरामयं निरञ्जनम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पं-केतकीसुमालतीसुपारिजातसम्भवैः कदम्बकुन्दपङ्कजैरनङ्ग वाणनाशकैः ।
सुसन्मतिं यजे मुदा शिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्ध सौख्यदायकं निरामयं निरञ्जनम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यं- भक्तपायसान्नदुग्धशर्करादिसंयुतैः मोदकैः सुव्यञ्जनैरसप्रदैः समुज्वलैः ।
सुसन्मतिं यजे मुदा शिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्धसौख्यदायकं निरामय निरञ्जनम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सुमतिदेवाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः-सुतैलसर्पिर्निर्मितैर्घनान्धकारनाशकैः ज्वलत्प्रदीपसञ्चयैः शिखोज्वलैःसुनिर्मितैः ।
सुसन्मतिंयजे मुदा शिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्धसौख्यदायकंनिरामयं निरञ्जनम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं सुमति नाथाय दीपान् निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः-लवङ्गदेवदारुमोथचन्द्रचन्दनाश्रितैः सिलारसैकयोगजादिकर्म मर्मदाहकैः ।
सुसन्मतिं यजे मुदाशिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्धसौख्यदायकं निरामयं निरञ्जनम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथस्वामिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलम्-चोचमोचद्राक्षस्वाम्रनिंबुदाडिमैः फलैःबीजपूरचिर्भटैः सुमोक्षमार्गदायकैः ।
सुसन्मतिं यजे मुदाशिवाप्तयेहमञ्जसा सिद्धसौख्यदायकं निरामयंनिरञ्जनम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथतीर्थनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः—वार्गन्धाक्षतपुष्पभक्ष्यचरुकैर्दीपैश्चधूपैः फलै दूर्वास्वस्तिक पुष्पदामबहुभिर्वाद्यैरनेकैः शुभैः ।
स्तोत्रैर्मङ्गलपाठकैर्जयरवैःश्रीमत्सुबुद्ध्यग्रिगां भूमिं मोक्षसुखाप्तये सुविधिना संपूजयामोवयम् ।९।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथपरमदेवाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंञ्च कल्याणकानि ।

गर्भः—श्रावणे चार्जुनेपक्षे सुमतिं मति दायकम् द्वितीयायां मुदागर्भमङ्गलाया यजेसदा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सुमतिजिनवराय श्रावण शुक्ल द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म—चैत्र मासे शुक्लपक्षे विशुद्धेकादशीदिने सुमतिं बुद्धिदातारंयजामि जन्मसङ्गतम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सुमति जिनेन्द्राय चैत्र शुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

तपः—वैशाखे शुभ्र पक्षे च पवित्रे नवमी दिने। यजामि सुमतिं देव तपोभरविभूषितम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं सुमतितीर्थङ्कराय वैशाख शुक्लनवम्यां तपः कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानं—चैत्रे विशदपक्षेच परमैकादशीदिने । संयजे बुद्धि वाराशिं सन्मतिं ज्ञान ज्ञाननायकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सुमतितीर्थनाथायचैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणम्—चैत्र मासे शुचौ पक्षे पवित्रैकादशीदिने । सुमतिं मुक्तिदातारं यजेहं मुक्तिवल्लभम् ॥५॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथाय चैत्र शुक्लैकादश्यां निर्वाणप्राप्तायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

सुमङ्गलामेघरथात्मजातोनाभेयवंशाम्बुधिपूर्ण चन्द्रः। कोकध्वजस्तप्तहिरण्यकायः।

संप्रार्थ्यतेऽत्रसुमति जिनेन्द्रः ६॥ ॐह्रीं सुमतिनाथदेवपञ्चकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा॥

अथजयमाला—जय सुमतिजिनेश्वर नमितसुरेश्वर फणिपतिनरपतिनमितपदम्। घनरथ नृपतात जगत विख्यातं मातमङ्गलामोदकरम् ॥ १ ॥ जय सुमतिनाथ मतिदानदक्ष जय, लोकित लोकालोकपक्ष जय चतुस्त्रिंश अतिशयविशेष। जय प्रातिहार्य युतत्यक्तद्वेष ॥ २ ॥जय ज्ञान,चतुष्टययुक्तयुदेव। जय समवशरण स्थित स्वमेव। जय चमरकरत चतुषष्ठिपक्ष। जय मङ्गल द्रव्यध्वजाप्रत्यक्ष ॥ ३॥ जय घनरथ नृपकुलनभदिनेश जन्माभिषेककृतखगसुरेश। जय शचीदेविकृतजातिकर्म जय कायकान्ति जिततप्तभर्म ४ जय क्रोधमानतजिलोभमाय जय अष्टाधिकशतचिह्नकाय। जय नवशतव्यञ्जन पूर्ण देह। जय त्यक्तमोहमदमदननेह ५ जय ध्यान खड्ग हतकर्मपाश जय ज्ञान दिवाकर जग प्रकाश। जय शिवरमणीवरराजराज मम सिद्धमनोरथसुखसमाज ॥ ६ ॥

घत्ताछन्द—इति गुणगणसारं भुक्ति मुक्ति प्रदानं सुमतिजिनवरेन्द्रं कोकचिन्हेन युक्तम्।

त्रिभुवनपतिपूज्यं बुद्धिसारं त्रिशुद्ध्या वसुविधिवरद्रव्यैः पूजयेहं सुखाप्त्यै ॥ ७ ॥

ॐह्रीं सुमतिनाथ जिनवराय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्तम्—कोकोङ्कःफालिनी तरुः पुरमथायोध्या मघाजन्मभं चापानां च शतत्रयं परिमितिः कान्तिःसुवर्णोत्तमा। सम्मेदःशिवभूविभातिजनकोमेघप्रभोमङ्गलामातायस्य स पातुनःसुमतिरिड्वज्राङ्कुशोतुवरः॥ इत्याशावादः

अथ पद्मप्रभ पूजा लिख्यते ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेतुं ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ।

ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट्सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलं–विशालभृङ्गनालेन निर्गतेन सुवारिणा। पूजयामि जिनाधीशं पद्मप्रभ सुभावतः ॥
ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनं–कुङ्कुमेनकर्पूरेण अगरेण सुगन्धिना । पूजयामिजिनाधीशं पद्मप्रभं सुभावतः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षताः–अक्षतैरक्षतैश्चारुदीर्घोज्ज्वलगात्रकैः । पूजयामि जिनाधीशं पद्मप्रभं सुभावत ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं पद्मप्रभपरमेश्वराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्पं–कमलैःकुन्दजातीभिर्मालतीसुकदंबकैः। पूजयामि जिनाधीशं पद्मप्रभं सुभावतः ॥४॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभपरमेश्वराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यम्–खज्जकैर्मोदकैःपूर्पैर्दलाभक्तव्यञ्जनैः। पूजयामि जिनाधीशं पद्मप्रभं सुभावतः ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभतीर्थङ्कराय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीपः–रत्नदीपैः सुकर्पूरैः प्राज्यसुस्नेहवर्त्तिभिः। पूजयामि जिनाधीशं पद्मप्रभं सुभावतः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–कर्पूरागुरुसम्मिश्रे धूपैःशिलारसोत्कटैः। पूजयामि जिनाधीशं पद्मप्रभं सुभावतः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभ तीर्थराजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फलम्–प्रस्वाम्रनालिकेरैश्च पनसैर्बीजपूरकैः। पूजयामि जिनाधीशं पद्मप्रभं सुभावतः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभ तीर्थेश्वराय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घः–वार्गन्धाक्षतपुष्पैश्च धूपैर्दीपैःफलैस्तथा। पद्मप्रभ जिनदेवं भावेनार्चे वरार्घतः।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभ जिनेशाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घः–कौशांव्या धरणीश्वरस्य तनुजो माता सुसीमा सती, चित्राभे च समुद्भवःशिवकरःपद्माङ्कपद्मप्रभः।
सम्मेद शिवभूस्तनून्ननिधनुःसार्द्धाधिकाद्रि शती, सो मांपद्मजिनः पुनातुसततं पुष्पाख्ययक्षेट्समम्।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणकानि।

गर्भः—माघमासे शुभेकृष्णे षष्ठ्यागर्भयजाम्यहम्। सुसीमायामहादेव्याः पद्मप्रभजिनेशिनम् ॥१॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्राय माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म—कार्त्तिकेश्यामपक्षे च त्रयोदश्यां सुवासरे। पद्मप्रभंमहादेवं जगत्सर्वसुखास्पदम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं कार्त्तिककृष्णत्रयोदश्यां पद्मप्रभजन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तपः—कार्त्तिके मेचकेपक्षे त्रयोदश्यांदिनेवरे। तपोलक्ष्मीसुभर्त्तारं संसाराम्बुधितारकम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनाय कार्त्तिक कृष्णत्रयोदश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञानं—चैत्रमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमा शुभवासरे। केवलज्ञानसंप्राप्तं लोकालोकप्रकाशकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल पूर्णिमायां पद्मप्रभज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाणम्—फाल्गुणे कृष्णपक्षे च चतुर्थीनिर्मलेदिने। सुपद्मप्रभमर्चामि मुक्तिपद्ममधुव्रतम् ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्णचतुर्थ्यां पद्मजिनराजाय मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला।

श्रीपद्मप्रभंदेवं वन्देभक्त्या त्रिविष्टपाधीशम्। वक्ष्येहं जयमालाशक्षां संक्षेपतो नित्यम् ॥ १ ॥

जय पद्मप्रभपद्माभदेव जय नृपसुरअहिपतिकृतसुसेव। जय दुःखदावानलजलदरूप जय ध्वनिरवि-

शोभितजगत्रूप ॥२॥ जय गर्जितघनगम्भीरनाद जयदुर्नयवादीजितकुवाद। जयमुक्तिकामिनीकण्ठ-हार जय उपदेशामृतभव्यसार ॥ ३ ॥ जय शुद्धबुद्ध परमपवित्र जयसमयसारविस्तारमन्त्र। जय पद्मप्रभ पद्माभकान्त जय जन्मजरामृतरोगशान्त ॥ ४ ॥ जयप्रातिहार्यशोभितसुगात्र । जय दर्शनज्ञान चरित्रपात्र । जय अन्तरहित गुणगणभण्डार। जय शीलायुध मारितसुमार ॥ ५ ॥ जय ऋषिमुनियति गणराजहंस । जयसकलनरोत्तम पुण्यवंश। जयइन्द्रनरेन्द्रखगेन्द्रराज । जय मुक्तिवधूकृतसुखसमाज।६।

घत्ताछन्दः-इति पद्मजिनेन्द्रं नमितमुनीन्द्र जन्मजरामृतकामहरम् ।
वंदेचिन्मयमूर्त्तिशिवसुखपूर्त्ति सकलजीवपरमार्थकरम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्राय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छन्दः-पद्माङ्कःफल्गुनीतरुःपुरमथो कौशांबिका मुक्तिभूः,सम्मेदो धरण·पिताजननभं चित्रा सुसीमाम्बिका ।
सार्द्धंचापशतद्वयं परिमिती रक्तातनुर्यस्यसो ऽऽयात्पद्मप्रभुरीश्वरःकुसुमयक्षश्रीमनोवेगयोः।

इत्याशीर्वादः। इतिश्रीपद्मप्रभतीर्थङ्कर पूजा समाप्ता।

अथ सुपार्श्वनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् सवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेक्तु तेवषट्कारजाग्रत्सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐह्रींअर्हन् श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐह्रींअर्हन् श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ ठ: स्थापनम् ।
ॐह्रीं अर्हन् श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जल– त्रिशालभृङ्गनालेन निर्गतेन सुवारिणा । पूजयामि जिनाधीशं सुपार्श्वं पार्श्वदायकम् ॥ १ ॥
ॐह्रींसुपार्श्वजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीतिस्वाहा ।

चन्दनं– कुंकुमेन कपूरेण चन्दनेनसुगन्धिना । श्रीजिनेन्द्रपदाम्भोजं विलेपेहं सुभावतः ॥ २ ॥
ॐह्रीं सुपार्श्वजिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षताः– अखण्डितैरक्षतैश्चारुदीर्घैरुज्ज्वलगात्रकैः । विभूषयाम्यग्रिभुवं अक्षयपदलब्धये ॥ ३ ॥
ॐह्रीं सुपार्श्वतीर्थेश्वराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

केतकीपारिजातैश्च मालतीसुजयादिभिः। कामबाणविनाशाय अर्चयेहं क्रमाम्बुजम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्यं- मोदकैर्घेवरैः पूपैर्वटुकैर्भक्ष्यव्यञ्जनैः। यजेहं स्वर्णपात्रस्थैः क्षुद्बाधाप्रशान्तये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वतीर्थंकराय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीपः- घृतदीपध्वान्तनाशैश्च प्रज्वलदार्त्तिकैर्घनैः। सन्मुखोत्तारयाम्यग्नी केवलज्ञान प्राप्तये ॥ ६।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप.- कृष्णागुरुघनैःसारै र्धूपैर्धूपितदिङ्मुखैः। धूपयामि विभोरग्रे कर्मकक्षहुताशनैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फलम्- पक्वाम्रनालिकेरैश्च पनसैर्बीजपूरकैः अर्हत्पदाम्बुजयुग्मं पूजये शिवलब्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनेशाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ- जलगन्धाक्षत पुष्पैश्च नैवेद्यैर्दीपधूपकैः। यजे सुपार्श्वनाथं वै फलैश्च फलदायकैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणकानि।

गर्भः- पुण्ये भाद्रपदे मासे शुक्ले षष्ठ्यां सुपार्श्वकम्। मातृवसुन्धरागर्भे यजामि नृपनायकम् ॥

ॐह्रीं सुपार्श्वनाथाय भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म– ज्येष्ठमासे परेशुक्ले द्वादशीदिवसे शुभे । मेरौ शक्रकृतस्नानं यजे सुपार्श्वदेवकम् ॥

ॐह्रीं सुपार्श्वनाथाय ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्मजातकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपः– ज्येष्ठमासार्जुने पक्षे सुलग्ने द्वादशीदिने । श्रीसुपार्श्वं महादेव तपोधीशं समर्चये ॥

ॐह्रीं सुपार्श्वजिनन्द्राय ज्येष्ठशुक्ल द्वादश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञानम्– फाल्गुणे कृष्णपक्षे च सुषष्ठयां ज्ञाननायकम् । श्रीसुपार्श्वं यजेनित्यं लोकालोक प्रकाशकम् ॥

ॐह्रीं सुपार्श्वनाथाय फाल्गुण कृष्णषष्ठ्यां ज्ञानधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणम्–फाल्गुणे श्यामपक्षे च प्रकृष्टे सप्तमादिने । श्रीसुपार्श्वं यजेनित्यंरूपातीतं गुणात्मकम् ॥

ॐह्रीं फाल्गुण कृष्णसप्तम्यां श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वीषेणासुप्रतिष्ठाप्रसूनुं काशीनाथं पूजयेहं सुपार्श्वम् ।
कालीयक्षीरक्षितं स्वस्तिकाङ्कं भक्त्यानित्यं मङ्गलार्घैरनूनम् ॥

ॐह्रीं सुपार्श्वनाथतीर्थङ्कराय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ।

पार्श्वपश्य दयानिधिं जिनवरं कर्माटवीज्वालकं, देवंनाकिखगेन्द्रभूचरनुतं स्नातं गिरेर्मूर्द्धनि ।

भव्याम्भोरुहभास्करं प्रतिदिनं सिद्धिप्रदं शाश्वतं, सर्वज्ञान महानिधिं मुनिवरं वाराणसीनायकम् ॥

जयमाला–जयसुपार्श्वदेवत्वं संसाराम्बुधितारक । स्वस्तिकाङ्कधरो नित्यं लोकेस्वस्ति सदा कुरु॥जय हि सुपार्श्व सुपार्श्वदेव जयसुरनरमुनिगणकृतसुसेव । जयपृथ्वीषेणामातसून जयसुप्रतिष्ठ जिन पतिअनून ॥ जयगर्भसमयबहुरत्नवृष्टि । जयसुखमयधनमयकृतसुसृष्टि । जयमेरुशिखरजिनजन्मस्नान । जयइन्द्रशचीकृतनृत्यगान ॥ जयहरितमहामणितुल्यकान्ति । जयस्वस्तिकलक्षण सकलशान्ति॥जयदुर्धरतपधारितजिनेश । जयपञ्चमुष्टिकृतलोंचकेश ॥ लेक्षारांदधिक्षेपेसुरेश जयद्वादशधातपतपविशेष । जयघातिकर्मकोनाशदेव । जयप्राप्तज्ञानकेवलस्वमेव॥जय समवशरणसुरपतिरचाय जयप्रातिहार्य अद्भुत लखाय । जय अनन्त चतुष्टययुक्तदेव रयारेसंबोधिभव्यराशिएव ॥ जय शेषकर्महनि प्राप्तमोक्ष । जय सिद्धिविलासनभुक्तिसौख्य । जय अनन्तगुणात्मकचित्स्वरूप । जयलोकशिखास्थितसिद्धभूप ॥

घत्ताछन्दः–जिनराजनमस्तुभ्यं नरराजेनसंस्तुत अहिराजफणाटोप सुरराजेनपूजित ॥

ॐह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्दः–काशीपःसुप्रष्ठोविलसनिजनकोवाचपृथ्वीशिरीषश्चैत्यद्‌गर्भविशाग्वाशिवपथमथसम्मेदभूर्वंशजिद्वुक कोदण्डानांशतद्वेमिनिरपिमकरःकश्चयक्षीऽचकालीयस्या।सो नः सुपार्श्वोवितरतुवरंनन्द्यास्पयक्षेश्वरेशः॥

॥ इत्याशीर्वादः । इति श्रीसुपार्श्व जिनपूजा समाप्ता ॥

क्र. ३६८

अथ श्रीचन्द्रप्रभ पूजा लिख्यते।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य।
स्व निर्नेक्तुं तेवषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ· ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्सन्निधीकरणम्।

अथाष्टकम् ॥

जलं— मन्दाकिनीतीर्थभवैर्जलैश्च भृङ्गारनालेन विनिर्गतैश्च। चन्द्रप्रभं चन्द्रसुचिह्न-लाञ्छितं यजेत्रिकालं भवरोगशान्तये ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थङ्कराय जलं निर्वमीति स्वाहा।

चन्दनं— सुकुकुमैश्चन्दन चन्द्रमिश्रतैर्विलेपयेहं शशिपादपद्मम्। चन्द्रप्रभं चन्द्रसुचिह्नलाञ्छितं-यजे त्रिकालं भवरोगशान्तये ॥२॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षतः— अखण्डशाल्यक्षतपुण्यपुञ्जैः सुमौक्तिकाभैर्जिनपादयुग्मम्। चन्द्रप्रभं चन्द्रसुचिह्नलाञ्छितं-यजेत्रिकाल भवरोगशान्तये ॥३॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेश्वराय अक्षतान्निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पं– कदम्बनीलोत्पलस्वर्णजाति सुकेतकीचंपकमालतीभिः। चन्द्रप्रभं चन्द्रसुचिह्नलाञ्छितं-
यजेत्रिकालं भवरोगशान्तये ॥४॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेश्वराय पु० निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यं– सुखज्जकैः पायसमोदकैश्च दुग्धाज्यभक्तदधिभिर्बहुव्यञ्जनैश्च। चन्द्रप्रभं चन्द्रसुचिह्नलाञ्छितं
यजेत्रिकालं भवरोगशान्तये ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभपरमेश्वराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपः– घृतस्नेहकर्पूरसुसम्भवैश्च प्रदीपकैर्ध्वान्तविनाशनाय। चन्द्रप्रभं चन्द्र सुचिह्नलाञ्छितं-
यजेत्रिकालं भवरोगशान्तये ॥६॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभस्वामिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपः– कर्पूरकृष्णागुरुचन्दनोघैर्धूपैः सुगन्धीकृतदिक्चयैश्च। चन्द्रप्रभं चन्द्रसुचिन्हलाञ्छित-
यजेत्रिकालं भवरोगशान्तये ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलं– सुमातुलिङ्गाम्रकपित्थमोचैर्नारङ्गनिंबुपनसैः सुरसैःफलैश्च। चन्द्र प्रभं चन्द्रसुचिह्नलाञ्छितं-
यजेत्रिकालं भवरोगशान्तये ॥८॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभस्वामिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घः– वार्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपैः फलैर्भसुमपंपैश्च। अर्घं ददे स्वस्तिकनृत्यगीतैः
श्री चन्द्रनाथाय सुभक्तितोऽहम् ॥९॥ ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तं। वन्देभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं जिनं-
जितस्वान्तकषायबन्धम् ॥१०॥ इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः– चैत्रकृष्णेसुपञ्चम्यां चन्द्राभं चन्द्रलाञ्छनम् । जातं सुलक्ष्मणागर्भे महामि वसुद्रव्यकैः ॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपञ्चम्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म– पौषकृष्णेशुभेघस्ने चैकादश्यां जिनोत्तमम् । महासेनात्मज चर्चेस्नापितं क्षीरसज्जलैः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेश्वराय पौषकृष्णैकादश्यां जन्मजातकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपः– पौषे च श्यामलेपक्षेचैकादश्यां तपोर्जितम् । चन्द्रप्रभंयजे नित्यं कर्माष्टकविनाशकम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पौषकृष्णैकादश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वामीति स्वाहा ।

ज्ञानं– फाल्गुणे कृष्णपक्षे च सप्तम्यां ज्ञाननायकम् । यजेचन्द्रं शुभैर्द्रव्यैः परमस्थानसप्तदम् ॥४॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णसप्तम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणं– फाल्गुणे कृष्णसप्तम्यां यजेहं मुक्तिनायकम् । अष्टमं तीर्थनाथं च पञ्चमीगतिदायकम् ॥५॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्तम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्द्रं पुरां बुधिचन्द्रचन्द्राङ्कं चन्द्रसंकाशं । चन्द्रप्रभजिनमर्चे पूर्णेन्दुस्फारकीर्तिकान्तं च ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पञ्चकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला–जन्ममरणत्राता दुःखदारिद्र्यहर्त्ता त्रिभुवनसुखकर्त्ता मोक्षमार्गैकभर्त्ता । दुरितविपिनच्छेदे

तीक्ष्णशस्त्रंहिनोवा वसुपरिमितिगणयो रक्षतात्तीर्थनाथः ॥ १ ॥ जय चन्द्रप्रभकृतशर्मपूर जय चन्द्रप्रभजिनपापदूर । जय चन्द्रप्रभविजितारिवर्ग जयचन्द्रप्रभकृतविविधसर्ग ॥ २ ॥ जय चन्द्रप्रभ भवतापत्यक्त जयचन्द्रप्रभ निजशर्मशक्त । जयचन्द्रप्रभ देवाधिदेव जयचन्द्रप्रभकृतशक्रसेव ॥३॥ जय चन्द्रप्रभ भवप्राप्ततीर जय चन्द्रप्रभ कर्मारिवीर । जय चन्द्रप्रभ जगजीवमित्र जय चन्द्रप्रभ मिथ्यात्वशत्रु ॥ ४ ॥ जय चन्द्रप्रभ गुणगणनिवास जय चन्द्रप्रभ हतकुन्दभास । जय चन्द्रप्रभ जिनभृत्यरक्ष जयचन्द्रप्रभकृतभव्यपक्ष ॥ ५ ॥ जय चन्द्रप्रभदुःखाब्धितीर जयचन्द्रप्रभजितकामवीर । जयचन्द्रप्रभकृतसकलकाम जयचन्द्रप्रभ जितत्यक्तवाम ॥ ६ ॥

घत्ताछन्दः-जयत्रिभुवननेत्रं परमचरित्रं सकलप्रकाशक ज्ञानमयम् । जय चन्द्रजिनेश्वर नमितसुरेश्वर महासेनसुतशर्मकरम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ तीर्थङ्करायपूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्दः-जन्मर्क्षंत्वनुराधिका मृगधरोङ्कोंगश्चनागोब्जभा, सार्द्धंचापशतप्रमा शिवपदं सम्मेदको लक्ष्मणा । माताचन्द्रपुरीपुरोच विजयायक्षेश्वरी मालिनी, ज्वालाद्याप्रचकास्ति यस्यस महासेनात्मजश्चन्द्रभः ॥

॥ इत्याशीर्वादः । इतिश्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकुरपूजा समाप्ता ॥

अथ पुष्पदन्त पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कित स्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेक्तुते वषट्कारजाग्रत्सान्निध्यस्य प्रारभेयाऽष्टधेष्टिम् ॥

ॐह्रींअर्हन्श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐह्रींअर्हन् श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।

ॐह्रींअर्हन् श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम्–जल–क्षीरनीरवासितैःसुवर्णभृङ्गसंस्थितै.।पापतापनाशकैः सु न्द्रकान्तिनिर्मलैः ।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिप गुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटिसत्प्रभम् ॥ १ ॥
ॐह्रीं पुष्पदन्ततीर्थंकराय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्–गन्धलुब्धषट्पदैः सुकुंकुमैःसुचन्दनै. कर्पूरादिगन्धद्रव्यशोभितैः सुगन्धिभि. ।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिपंगुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटिसत्प्रभम् ॥ २ ॥
ॐह्रीं पुष्पदन्तजिनायचन्दन निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षता.–अक्षतैरखण्डितै. सुकृष्णजीरकैर्घनैः सुगन्धराजभक्ष्यकैश्च मोक्षसौख्यलब्धये ।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिपं गुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटिसत्प्रभम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पम्– सुचम्पकैश्च केतकीसुपारिजातजैर्घनैः मल्लिकारविन्दकुन्द जूथिकादिभिर्वरैः।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिपं गुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटि सत्प्रभम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यम्– पायसान्नमोदकादिघेवरैः सुखज्जकैप्राज्यपूरपूरितैः सुतप्तभक्तव्यञ्जनैः।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिपं गुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटिसत्प्रभम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपः– हिरण्यपात्रसंस्थितैः सुरत्नजातदीपकैः प्राज्यस्नेहवर्त्तिभिर्घनान्धकारनाशकैः।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिपं गुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटिसत्प्रभम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपः– मोपदेवदारुभिः सुचन्दनैः शिलारसैः लवङ्गचन्द्रमिश्रितैः कुकल्मषौघदाहकैः।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिपं गुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटिसत्प्रभम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलं– नालिकेरबीजपूरद्राक्ष पूगनिम्बुकैः कपित्थमोचचोचकैः सुपक्वनागरङ्गकैः।
पुष्पदन्ततीर्थपं जिनाधिपं गुणाकरं संयजेशिवप्रदं जितार्ककोटिसत्प्रभम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घं— वार्गन्धाक्षतपुष्पभक्ष्यचरुकैर्दीपैश्च धूपैः फलैः । दूर्वास्वस्तिकस्तोत्रपाठनिवहैर्वाद्यैरनेकैःशुभैः ।

श्रीसुविधिं च सुपूजये सुविधिना अर्घैः सुपात्रस्थितैः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्ततीर्थङ्कराय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पञ्चकल्याणकानि—गर्भः—नवम्यां फाल्गुणेकृष्णे जयारामाशुभोदरे। पुष्पदन्तं यजेनित्यमष्टद्रव्यसमुच्चयैः

ॐ ह्रीं पुष्पदन्ततीर्थंकराय फाल्गुणकृष्ण नवम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म— शुभ्रमार्गशिरे मासेपवित्रे प्रतिपद्दिने। पुष्पदन्त यजेनित्यमिक्ष्वाकु कुलसम्भवम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रींपुष्पदन्तजिनाय मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि जन्मजातकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः— मासेमार्गशिरे शुक्ले शोभने प्रतिपत्तिथौ ।श्रीसुविधि च यजेनित्यं सच्चारित्र्यमहोदधिम् ॥३॥

ॐ ह्रींपुष्पदन्ततीर्थनाथाय मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि तपःकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

ज्ञानम्— कार्त्तिकेचार्जुने पक्षेशोभने द्वितीयादिने। पुष्पदन्तं महाशान्तं चर्चेकेवलिनं परम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्ताय कार्त्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणम्—शुक्लेभाद्रपदे मासे चाष्टमीशोभनेदिने। पुष्पदन्त यजेधीरं सर्वकर्म निवारकम् ॥ ५॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनेशाय भाद्रपदशुक्लाष्टम्यां मोक्षप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयरामारमणेशस्य सुग्रीवस्य च सूनुकम्। पुष्पदन्तमहंवन्दे पुष्पदन्तसमप्रभम् ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनेन्द्राय पञ्चकल्याणकेभ्यो ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला–जय भवभयहरणं शिवसुखकरणं पुष्पदन्तजिनपति चरणम्। जयशुभमतिकरणं यतिपति शरणं संस्तवीमि भवजलतरणम् ॥ १ ॥ जय पुष्पदन्तजिनराजराज जय सुधासमानसिततनुसमाज। जय दिनकरनमितसुचन्द्रपाद जय मकरचिह्नजितमोहवाद ॥ २ ॥ जय नृपतितात सुग्रीवनाम जय रामाजननी तेजोधाम। सुरनर अहिसेवत अष्टयाम जय ब्रह्मचर्यधृतत्यक्तवाम ॥ ३ ॥ जय क्षमाभाव जितक्रोधदोष जय मार्दवगुण जितमानकोप। जय आर्जव भावकुमायत्यक्त जय द्विविधपरिग्रहलोभ मुक्त ॥४॥ जय अष्टादशदोषविमुक्तदेव जय अनन्तचतुष्टययुक्तदेव। जय जय हि अनन्तानन्तज्ञान जय शक्रसुरासुर कृतसुमान॥५॥ जय समवशरणमध्य अन्तरीक्ष अङ्गुलीचतुष्टय स्थितसुठीक। जय चामरचौंसठिचन्द्रश्वेत यक्षढारेहि निजभक्तिहेत॥६॥जय संसृतिसागर तरणपोत जय भवदावानल मेघस्रोत। जय षट्कायनके रक्षपाल जय ध्यानवज्रहनिकर्मजाल ॥७॥ जय पञ्चकल्याण उत्सवमहान जिहि देखे भजिह भ्रम अज्ञान। जय अनन्तगुणात्मक चित्सुरूप। जय शिवरमणीवर सिद्ध भूप ॥८॥

घत्ताछन्द–जय दोषातीतं वसुविधिहनकं वसुगुणयुक्तं श्रीजिनपम्। जय धर्मपवित्रं शुद्धसुगोत्रं लोकशिखर वसुभूमि गतम् ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पदन्ततीर्थंकराय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्दः–मूलोनं मकरध्वजोजनपिता सुग्रीवनामाम्बिका रामाचापशतप्रमाणभवनिर्मुक्तेःसुसम्मेदकः।नागो गोजिनयक्षकोप्ययमहा कन्याभिधा यक्षिणीकाकन्दीनगरी च यस्य मस्तिनोनःपुष्पदन्तोऽवतु। इत्याशीर्वादः।

अथ शीतलनाथ पूजा प्रारम्यते ।

स्वामिन् संवौषटकृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेकु ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हन् श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननम् ॥
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीशीतलनाथ जिनेद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सांन्नधीकरणम् ।

अथाष्टकम ।

जलम्– गङ्गासरित्प्रमुखजैर्वरवारिभिश्च भृङ्गारनालेन विनिर्गतैश्च ।
श्रीशीतलेशं विधिना यजामि संसारतापहननाय सुखाय शान्त्यै ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनेद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्–सुकुंकुमैश्चन्दनचन्द्रमिश्रितै र्विलेपयामि जिनपादपयोजयुग्मम् ।
श्रीशीतलेशं विधिना यजामि ससारतापहननाय सुखाय शान्त्यै ।। २ ॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः–सुतण्डुलैश्चन्द्रकरावदातैः सुमौक्तिकाभैर्वरपुण्यपुञ्जैः ।श्रीशीतलेशं विधिना यजामि संसार

तापहननाय सुखाय शान्त्यै ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

पुष्पम्– सुमालतीचम्पकमालतीभिः पयोजकुन्दैर्वरदेवपुष्पैः ।
श्रीशीतलेशं विधिना यजामि संसारतापहननाय सुखायशान्त्यै ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथ स्वामिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यम्– सुमोदकैःखज्जकपायसान्नै र्दधीक्षुभक्तादिसुव्यञ्जनैश्च ।
श्रीशीतलेशं विधिनायजामि संसारतापहननाय सुखायशान्त्यैः ॥५॥
ॐ ह्रीं शीतलस्वामिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः– कर्पूरस्नेहाज्यभवैः प्रदीपैस्तमोवितानं दलितैर्ज्वलद्भिः । श्रीशीतलेशंविधिना यजामि-
संसारतापहननाय सुखाय शान्त्यै ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं शीतलपरमेश्वराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः– कर्पूरकृष्णागुरुदेवपुष्पैः शिलारसैश्चन्दनचन्द्रयुक्तैः । श्री शीतलेशं विधिना यजामि-
संसारतापहननाय सुखाय शान्त्यै ॥७॥ ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलं– नोनाम्रमोचैर्वरनागरङ्गैः कपित्थद्राक्षैर्हृदंजिनेश्च । श्री शीतलेशंविधिना यजामि-
संसारतापहननाय सुखाय शान्त्यै ॥८॥ ॐ ह्रीं शीतलनाथभगवते फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घः– जलगन्धाक्षतपुष्पैश्चरुदीपैर्धूपकफलैः । ददाम्यर्घ्यमिनकतार्थेरर्घमुत्तारयेद्विबुधैः ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भं.–चैत्रमासे सुकृष्णे च पक्षेऽष्टम्यांसुशीतलम् । यजामि विधिना गर्भं सुनन्दामातृसौख्यदम्॥ १॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां श्री शीतलनाथगर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म– माघकृष्णेसुद्वादश्यां जयजन्मजिनेशिनः । सुनन्दादृढरथावासे कृतोत्सवसुराधिपैः॥ २॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां शीतलनाथजन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपः– माघमासे श्यामपक्षे द्वादश्यांसुतपोर्जिम् । शीतलेशंमुदाचर्चेसुद्रव्यैस्तपसेमुदा ॥ ३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां शीतलनाथतपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानं– पौषमासचतुर्दश्यां कृष्णपक्षेजिनेशिनम् । प्राप्तं च केवलज्ञानं यजेहं ज्ञानलब्धये॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां शीतलनाथज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणं– आश्विने चार्जुने पक्षे चाष्टम्यां शुद्धवासरे । वसुद्रव्यैः सुमुक्त्यर्थं वसुभूमिगतंयजे ॥५॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनेन्द्राय आश्विनशुक्लाष्टम्यां निर्वाणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

भद्रपुर्यांसुमाङ्गल्यं प्राप्तं शीतलेशिनम् । सुनन्दादृढरथावासे पूजितं नृसुराधिपैः ॥६॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथ पञ्चकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

यस्मिन् वसन्ति कमला द्विमला सदैव तं शीतलं जिनवरं दशमं नितान्तं । स्तुत्यास्तु वेदमति-निर्मलतामुखेन वैराग्यवारिधिविधूपममादरेण ॥ १ ॥ शीतंसुखंलाति सदासुजीवान् तं शीतलंप्रणिगदन्ति यतीश्वराद्याः । तं शीतलं श्रयतभव्यजनाहि भक्त्या यस्याश्रयेण भवतीहममापिसौख्यम् ॥२॥ शीतलेश नमस्तुभ्यं संसारातापनाशक । संसारोत्तरणेमेनो दुःखदावघनाघन ॥३॥ चतुर्गतिभवावर्तध्वं-मनेकदुःखासम । मांत्राहिभवसंपातात् रक्ष रक्ष दयानिधे ॥४॥ जय त्वं भवकान्तारे मार्गदानैकचञ्चर । जय त्वं कर्मक्षोणीशपातने कुलिशोपम ॥ ५ ॥ जय त्वं करुणाधार जयत्वं ज्ञाननायक । जय त्वं मुक्तिरामायपत्ये जगति विश्रुत ॥ ६ ॥ जयत्वंप्रातिहार्येश जयानन्तचतुष्टक । जयानन्तगुणाधीश सर्वदोषविदूरग ॥ ७ ॥ जय सुनन्दासूनोऽत्र दृढरथस्य कुलांशुमन् । दिव्यध्वनिसुधावृष्ट्या भवाग्निदाहनाशक ॥ ८ ॥ परमात्मन्नमस्तुभ्य चित्स्वरूपसुखानुभुक् । जय त्वं वीतरागाणां स्वामिन्मुक्तिरमावर ९

घत्ता छन्दः—जय शीतलस्वामिन् ज्ञानसुधाकर रविचन्द्रार्चितपदयुगल । जय त्रिभुवननायक-ज्ञानसुदायक स्वस्वरूपमयज्ञानभर ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथाय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

छन्दः—पीताभा बिल्ववृक्षो दृढरथनृपनिर्जन्मकृन्मुक्तिभूमिः सम्मेदः कायमानं नवनिधनुरसोभद्रकार सुनन्दा । माता वद्मा च यक्षः पदयुगलनतामानवी स्वर्गिकोङ्कः पूर्वाषाढा च यस्य प्रदितु स जिनः शीतलाख्यः श्रियं नः ॥ इत्याशीर्वादः । इति श्री शीतलनाथजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रेयांशनाथ पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वानस्य द्विष्टान्ते नोद्दङ्कितस्थापनस्य ।

स्वं निर्नेक्तुं ते वषट्कारजाग्रत्- सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीश्रेयांनाथ सजिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं अर्हन् श्री श्रेयांसजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं अर्हन् श्री श्रेयांसजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलं- मन्दाकिनीतीर्थजलैः पवित्रैर्गाङ्गेयभृङ्गारसुनालनिर्गतैः । श्रेयांसदेवं परिपूजयेहं-
त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन- सुकुंकुमैश्चन्दनचन्द्रयुक्तैर्विलेपयेहं जिनपादयुग्मम् । श्रेयांसदेवं परिपूजयेहं-
त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसतीर्थङ्कराय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः- चन्द्रावदातैःसरलैः सुतण्डुलैःसुमौक्तिकानामिवपुण्य पुञ्जैः । श्रेयांसदेवं परिपूजयेहं-
त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ ३॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसदेवाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पं- सुमालतीकेतकिपुष्पकैश्च पयोजकुन्दैःसरसोरुहैश्च । श्रेयांसदेवं परिपूजयेहं-

त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथदेवाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य– क्षीरान्नपूपैर्वरमोदकैश्च सुव्यंजनैर्भक्ष्यदधीक्षुभक्ष्यैः। श्रेयांसदेवं परिपूजयेह
त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसतीर्थनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपः– दीपैः सुकर्पूरघृतैर्द्रवैश्च आरातिकस्थैस्तमोनाशकैश्च। श्रेयांसदेवं परिपूजयेह-
त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपः– कर्पूरचन्दनशिलारसदारुपुष्पधूपैः सुकर्मदहनकारकैश्च। श्रेयांसदेवं परिपूजयेहं-
त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसतीर्थङ्कराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलं– नारङ्गनिम्बुपनसैर्वरमातुलिङ्गैर्द्राक्षाम्रमोचकदली सुकपित्थकैश्च। श्रेयांसदेवं परिपूजयेहं-
त्रैलोक्यनाथार्चितपादयुग्मम् ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घः– वार्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपैःफलैः प्रचुरमर्घमुतारयामि। गीतादिवाद्यवरनर्तनमङ्गलैश्च-
श्रेयांसदेवयजनाय शिवायशान्त्यै ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।
अरुणेसिंहपुर्यां च विमला विमलाङ्गजः। गण्डकाङ्कः त्रिलोके श्रीश्रेयांसो मुदेस्तु वः ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं श्रेयांसस्वामिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणकानि।

गर्भं– ज्येष्ठकृष्णनिषष्ठ्यां विमलोदरगर्भकम्। यजेमनोरवं कृत्वा सुरासुरनमस्कृतम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसतीर्थंकराय ज्येष्ठकृष्णषष्ठयां गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म– फाल्गुणे कृष्णपक्षे च एकादश्यां सुतोत्तमम्। यजे स्वर्णगिरौस्नातं विमलाख्यनृपगृहे ॥ २ ॥

ॐह्रीं श्रेयांसजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णैकादश्यां जन्मधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः– फाल्गुणेश्यामलेपक्षेचैकादश्यां जिनेशिनं। तपस्तप्तं द्विधासम्यक् वाह्यभ्यन्तरशुद्धिदम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णैकादश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानं– माघकृष्णे अमावस्यां ज्ञानावरणसंक्षयात्। प्राप्तं च केवलज्ञानं संयजे ज्ञाननायकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय माघकृष्णामावस्यायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण– श्रावणेशुक्लपक्षे च पूर्णिमायां यजेजिनम्। वसुभूमिगतंकर्मत्यक्तं चाष्टगुणाधिकम् ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां श्रेयांसनिर्वाणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घः–विमलाविमलयोः सूनुं चामीकरसमद्युतिम्। श्रेयांसं संयजेहर्षाद्गौरीगन्धर्वनायकम् ॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनेन्द्राय पञ्चकल्याणकाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला।

श्रेयांसदेवं परमं पवित्रं दूरीकृतं पुत्रसुहृत्कलत्रम्। वन्देऽमराधीश्वरपुण्यपात्रं स्तोष्ये सदा

सकलजीवपुराणमित्रम् ॥ १ ॥ जयत्वं देवदेवेश जय श्रेयांसनायक। जय त्वां श्रेयःकर्त्तारं वन्देश्रेयः सुखप्रदम् ॥ २ ॥ जयत्वां वसुकर्माणां ध्वंसकं ज्ञाननायकम्। वन्दे त्वां दुःखहन्तारं त्रातार भववारिधेः ॥ ३ ॥ नेतारं शिवभूमीच कर्त्तारं सुखसन्ततेः। भर्त्तार मुक्तिरामाया भेत्तारं कर्मभूभृताम् ॥ ४ ॥ जय त्वं प्रातिहार्येश जयानन्तचतुष्टक। जयानन्तगुणाधार जय तत्त्वार्थदेशक ॥ ५ ॥ जय द्विधा तपस्तप्त जय न्यथवित्यक्तक जय कर्मधराधीशपातने कुलिशोपम ॥ ६ ॥ सिंहपुर्या नृपाशीश विमलस्य सुतोत्तम। विमलामातृसूनोत्व जय जीवदयानिधे ॥ ७ ॥ तप्तहाटकतनोदीप्ताष्टाधिकमहस्रक। लक्षणानां निधे श्रीमन् पाहि त्राहि जगज्जनान् ॥ ८ ॥ चिदानन्दस्वरूपस्य ध्यातारं परमेष्ठिनम्। गण्डकाङ्कध्वजोपेतं निर्विकारं स्तुवे सदा ॥ ९ ॥

घत्ता छन्दः-श्रेयांसजिनेन्द्रं नमितनरेन्द्रं जयन्मुनीन्द्रं पापहरम्।

हतकर्मकुवादं घनसमनादं वन्देहं जगत्प्रमोदकरम् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांस तीर्थङ्करपूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पद्यम्–यक्षो गौरीश्वराभं श्रवण इति तरुस्तिन्दुकोऽङ्कस्व गैण्डो मानं चाशीतिचापः कनकनिभतनुः सिंहनाम्ना पुरीच। सम्मेदो मुक्तिभूमिर्विमलनजननी वेणवी विष्णुराजस्तातो यस्यास्तु तस्मै नम इह सततं श्रेयसे श्रीजिनाय ॥ ११ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ इतिश्रेयांसतीर्थङ्करपूजा सम्पूर्णा ॥

अथ वासुपूज्यजिन पूजा लिख्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोद्दङ्किनस्थापनस्य ।
स्वं निर्नेंकुं ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐह्रीं अर्हन् श्री परमब्रह्म वासुपूज्यजिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीपरमब्रह्म वासुपज्यजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं अर्हन श्री परमब्रह्म वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरम् ॥

अथाष्टकम् ।

जलम्–श्रीजाह्नवीप्रमुखतीर्थजलैः पवित्रैर्गाङ्गेयभृङ्गारसुनालनिर्गतैः । श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाहं
सुवासवानां शतकेनपूज्यम् ॥ ॐह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेश्वराय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्–सुचन्दनैःकुंकुमचन्द्र मिश्रितै र्विलेपयेहं जिनपादपद्मकम् । श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाहं
सुवासवानां शतकेन पज्यम् ॥ २ ॥ ॐह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः–अखण्डचन्द्रोपमतण्डुलौघैः सुमौक्तिकाभैरिव पुण्यपुञ्जैः । श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाहं
सुवासवानां शतकेन पूज्यम् ॥ ३ ॥ ॐह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेश्वरायअक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

पुष्पं–सुमालतीकेतकिवारिजैश्चकदम्बजातीवरनागचम्पकैः । श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाहं

सुवासवानां शतकेन पूज्यम् ।४। ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनराजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यम्–सशर्करैर्मुद्गभवैःसुमोदकैः सुव्यञ्जनैर्भक्तदधीक्षुभक्ष्यैः। श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाऽहं
सुवासवानां शतकेनपूज्यम् ॥५॥ ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपः–स्नेहाज्यकर्पूरभवैःप्रदीपैर्ज्वलत्प्रभैर्मोहितमोहरैश्च। श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाऽहं
सुवासवानां शतकेन पूज्यम् ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कर्पूरकृष्णागुरुचन्द्रयुक्तैः शिलाद्रवैश्चन्दनगन्धधूपैः। श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाहं
सुवासवानां शतकेन पूज्यम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेश्वराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–क्रमुकदाडिमद्राक्षकपित्थकैर्नारिङ्गनिम्बूपनसैःसरसैःफलौघैः। श्रीवासुपूज्यं प्रयजे सदाहं
सुवासवानां शतकेनपूज्यम् ॥ ८॥ ॐ ह्रीं वासुपूज्यतीर्थपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घः–वार्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपैः फलैःसर्षपदर्भयुक्तैः। अर्घं यजे जिनवरेन्द्रसुवासुपूज्यं
नानाविधैर्मङ्गलगीतनृत्यैः ॥ ९॥ ॐ ह्रीं वासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणकानि।

गर्भ– आषाढकृष्णपक्षे च षष्ठ्यां गर्भं जिनेशिनम्। जयावत्युदरे जातं चर्चे नृसुरसेविनम्॥
ॐ ह्रीं वासुपूज्यतीर्थंकराय आषाढकृष्णषष्ठ्यां गर्भावतारणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म– फाल्गुणे श्यामलेपक्षे चतुर्दश्यां यजे मुदा । स्नापितं मेरुशिखरे जन्मजातनृपालये ॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेश्वराय फाल्गुणकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपः– फाल्गुणे कृष्णपक्षे च चतुर्दश्यां जिनेशिनं । चर्चे महातपस्तप्तं कर्माष्टकसुहानये ॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेश्वराय फाल्गुणकृष्णचतुर्दश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानम्– माघशुभ्रद्वितीयायां संप्राप्तं ज्ञानमद्भुतम् । लोकालोकप्रकाशाय संयजे ज्ञाननायकम् ॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यतीर्थेश्वराय माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणम्– शुक्लेभाद्रपदे शुभ्रचतुर्दशी सुवासरे । संयजे कर्मनाशाय पञ्चमीगतिनायकम् ।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां वासुपूज्यनिर्वाणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयरामावसुपूज्यसुतश्चम्पाधिपोऽरुणः । वासुपूज्यो मयापूज्यो महिषध्वजराजितः ॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेश्वराय । पञ्चकल्याणधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

श्रीवासुपूज्यं प्रणमामि नित्यं पापापहं केवललोचनं च । चम्पापुरे मोक्षगतं विकामं स्मृताऽपि कर्मक्षयमातनोति ॥ १ ॥ श्रीवासुपूज्यं वसुपूज्यजातं रामाजयायाः सत्पुण्यपात्रम् । सुवासवानां शतकेन वन्द्यं स्तोष्ये सदा मङ्गलपाठमुख्यैः ॥ २ ॥ जय वासुपूज्य जिनराजदेव सुरनरअहिपति नित्त

कृतसुसेव । वसुपूज्यनृपतिजिनराजतात   जयरामाजिनजननीविख्यात ॥ ३ ॥ जय महिषचिह्नजिनचरणराज जय चम्पानगरी कृतसुकाज । जय जगत् विनश्वररूपदेखि जय राज्य विवाह सत्यजनपेखि ॥ ४ ॥ जय लौकान्तिक कृतस्तुतिनियोग प्रभुजायधर्यो वनमध्ययोग । जय षष्ठ सुपूरणकरिसुधीर नृपसुन्दरहितदनदानखीर ॥ ५ ॥ जय घोरमहातपतप्तवीर विधिसकलनाशि केवलसुधीर । जय समवशरण सुरराजकीन जय अन्तरीक्षपरमात्मलीन ॥ ६ ॥ जय प्रातिहार्य अतिशय महान जय अनंतचतुष्टय ऋद्धिथान । जय चम्पापुर निजध्यानरूप शिवधामगये प्रभुसुख स्वरूप ॥ ७ ॥

घत्ताछन्दः—इतिपरमपवित्रं हृत्सुकलत्रं धृतशमशस्त्रं पुण्यभरम् । वसुविधिगिरिहंतं परमपुनीतं जयजय द्वादश अर्हन्तम् ॥ ८ ॥ ओंह्रींवासुपूज्यतीर्थंकराय पूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद्यम्—चम्पानिर्वृतिभूश्च पूःशतविशाखाजन्मभं पाटलाह्यक्षातनुरप्यथोमहिषकोङ्कःसप्ततिश्चापकाः ।
उत्सेधोविलयांविकाच वसुपूज्यःकारणं यस्यतं गान्धारी महाकुमारविनुतं श्रीवासुपूज्यंभजे ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्रीवासुपूज्य तीर्थंकरपूजा समाप्ता ॥



अथ विमलनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन्संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टंकितस्थापनस्य ।
स्वं निर्नेक्तुं ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ओंह्रींअर्हन् श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ॥
ओंह्रीं विमलनाथजिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनम् ॥
ओं ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलं– स्वर्धुनीवारिणा नित्यप्रासुकेन सुगन्धिना । संयजेविमलंदेवं जन्मादिदुःखहानये ॥ १ ॥
ओं ह्रीं विमलनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनं– सकुंकुमकपूरेण चन्दनेन विलेपये । विमलस्य पदद्वन्द्वं संसारातापहानये ॥ २ ॥
ओं ह्रीं विमलनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः– चन्द्रावदातैर्दीर्घैश्च तण्डुलैर्मौक्तिसन्निभैः । विमलस्य पदाग्रे च चर्चेभक्तिभरादहम् ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्राय अक्षातान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पं– मालतीवारिजैः कुन्दैः पुष्पैः श्वेतसुजातिभिः । यजेविमलपादं च कामारिशरध्वंसनम् ॥४॥

ॐ ह्रीं विमलदेवाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यं– मोदकैः पूपवटुकैः खज्जकैः भक्तव्यञ्जनैः । विमलस्य पदं चर्चे क्षुद्बाधाप्रशान्तये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं विमलतीर्थनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः– दीपैः स्नेहाज्यसंजातैः कर्पूरतमनाशकैः । द्योतयामि जिनाग्रं च ज्वलत्कीलकजालकैः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं विमलतीर्थेश्वाराय दीप निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः– कर्पूरदेवकुसुमैर्मोथचन्दनदारुभिः । धूपैश्चार्ये सुगन्धैश्च कर्मेन्धनदावोपमैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्राय धूपं निवपामीति स्वाहा ।

फलं–दाडिमाम्रमुनारङ्गैः कदलीमिष्टनिबुकैः । यजे विमलपादाग्रं मोक्षस्य फललब्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनेश्वाराय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः–जलादिफलपर्यन्त द्रव्यैः सदर्भस्वस्तिकैः । अर्घैर्महाम्यहं नित्यं जिनं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्च कल्याणकानि ।

गर्भः– कंपिलायां सुरामायां सहस्रारात्समागतः । ज्येष्ठकृष्णदशम्यां च यजेभ्रूणगतं जिनम् ॥

ॐ ह्रीं विमलजिनेन्द्रायज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म– माघार्जुनचतुर्थ्यां च कृतवर्मनृपगृहे । जन्मोत्सव कृतं देवैः मेरौ चर्चे जिनाधिपम् ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथाय माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः– माघशुक्लेचतुर्थ्यां वै द्विधा सङ्गपरित्यजन् । नानाभेदंतपस्तप्त चर्चे श्री विमलेश्वरम् ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनाय माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानं– माघशुक्लेसुषष्ठ्यां च लोकालोक प्रकाशकम्। बोधं सुकेवलं प्राप्तं यजेहं ज्ञाननायकम् ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्राय माघशुक्लषष्ठ्यां ज्ञानप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणं– आषाढेश्यामपक्षे च अष्टम्यां वसुभूमिगम्। चार्चेऽहंविमलं देवं सुद्रव्यैर्वसुगुणाप्तये ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथाय आषाढकृष्णाष्टम्यां निर्वाणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतवर्मजयारामासुतः सूकरध्वजाङ्कितः। प्रार्च्यंते विमलेशोऽत्र वैरोठीषणमुखाधिपै ॥

ॐ ह्रीं विमलजिनेन्द्राय पञ्चकल्याणधारकाय महार्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला।

जय विमलविरक्तोमोक्षरामासुरक्तो दिशतु शिवमनन्तं संघलोकस्य नित्यम्। अमरनिकरसेव्यो-कर्मवल्लीकुठारो हरिशतपरिपूज्यः प्राप्तसंसारपारः ॥ १ ॥ जय विमलसकलजगपूज्यपाय जय विमल-

कनकमय अमलकाय । जय रागद्वेषमदत्यक्तमाय जय सर्वलोकमनहर्षयाय ॥ २ ॥ जय सूकरचिन्हसुचरणराज जय भवोदधितारण तुमजहाज । जय शान्तभाव प्रभुनिर्विकार जय करुणासागरजगउधार ३ जय विमल अमलगुणकेस्थान जयजगत्प्रकाशनज्ञानभान । जय धर्मघनाघनवृष्टिकीन जय कुज्ञानानल कृतसुहीन ॥ ४ ॥ जय राज्यविभवलखिस्वप्नरूप जयत्यागिभये यति राजभूप । जय द्विविधघोरतपतप्तसार । जय सकलकर्महनि बहुप्रकार ॥ ५ ॥ जय शुक्लध्यानधरिकर्मनासि लहि केवललोकालोकभासि । सम्मेदशिखरतैं मोक्षप्राप्त निजरूपगुणात्मकसुखमुमान ॥ ६ ॥

घत्ता छन्दः- जय विमलजिनेन्द्रं नमितसुरेन्द्रंपूजितपातिगगणहरणम् । जय परमपुनीतं प्राप्तं जय जय विमलजिनेन्द्रवरम् ॥७॥ ॐह्रीं विमलनाथजिनेन्द्राय पूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्दः-जम्बुश्चैत्यतरु·पिता ष कृतवर्मांबासुशर्मोत्तरापाढा भ च षडाननं ऽप्यनुचरः कांपिल्लकंपत्तनम् । कोलोंकःपरिमातथैवधनुषांषष्ठिस्तु सम्मेदजा मुक्तिर्यस्य पुनातु नः सुविमलो वैरोटिकोस्वर्णरुक् ।

इत्याशीर्वादः । इति श्री विमलनाथतीर्थङ्करपूजा समाप्ता ॥ १३ ॥

अथ अनन्तनाथ पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कित स्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेक्तुं ते वषट्कारजाग्रत्सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐह्रीं अनन्तनाथ जिनअत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐह्रीं अनन्तनाथजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ॥
ॐह्रीं अनन्तनाथजिन अत्र ममसन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टकम् ।

जलम्– मन्दाकिनीप्रमुखतीर्थभवैर्जलैश्च गाङ्गेयभृङ्गार सुनालनिर्गतैः । यजे त्रिकालं वरभावतोऽह-मनन्तसौख्याय अनन्तनाथम् ॥ १ ॥ ॐह्रीं अनन्तनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्–सुचन्दनागुरुकर्पूर सुचन्दनैश्च विलेपये वरमनन्तपदाब्जयुग्मम् । यजेत्रिकालं वरभावतोऽह-हमनन्तसौख्याय अनन्तनाथम् ॥२॥ ॐह्रीं अनन्तजिनवरेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षता–चन्द्रावदातैः सरलैरखण्डैः सद्व्रीहिजैर्जिनपदाग्रसुपुण्यपुञ्जैः । यजेत्रिकालं वरभावतोऽह-मनन्तसौख्या अनन्तनाथम् ॥ ३ ॥ ॐह्रीं अनन्तनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पम्– कुन्दाऽजनीलोत्पल केतकैश्च जातीजपामालतिचंपकौघैः। यजेत्रिकालं वरभावतोऽह-
मनन्तसौख्याय अनन्तनाथम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अनन्तदेवायपुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यं– क्षीरान्नपूपैर्वरमोदकैश्च सुपायसैव्यंञ्जनतप्तभक्तैः। यजेत्रिकालं वरभावतोऽह
मनन्तसौख्याय अनन्तनाथम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अनन्तजिनवरेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपः– कर्पूरस्नेहाज्यभवैः प्रदीपैरुच्छिखौघैस्तमोनाशकैश्च। यजेत्रिकालं वरभावतोऽह-
मनन्तसौख्याय अनन्तनाथम् ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनन्तजिनराजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपः– कर्पूरकृष्णागुरुचन्दनौघैर्धूपैःसुगन्धीकृत दिग्विभागैः। यजे त्रिकाल वरभावतोऽह-
मनन्तसौख्याय अनन्तनाथम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अनन्तस्वामिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलम्– नारङ्गद्राक्षाम्रकपित्थपूगैः सुदाडिमैश्चवरचिर्भटैश्च। यजेत्रिकालं वरभावतोऽह
मनन्तसौख्याय अनन्तनाथम् ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अनन्तनाथाय फल निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घः– वार्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपै धूपैःफलैः स्वस्तिकसर्षपैश्च। वादित्रदूर्वावरगाननर्त्तनै-
र्ददेऽर्घमुच्चैर्जिनपतिकराग्रे ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अनन्ततीर्थङ्कराय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।
जयस्यामासिंहसेनस्य सूनुमनन्ततीर्थपम्। यजेशाकेतनाथं च इक्ष्वाकुकुलसम्भवम् ॥

इतिपुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः— कार्तिके कृष्णपक्षेवै सुदिनेप्रतिपत्तिथौ । जयस्यामोदरेऽनन्तं यजेऽहं सुमहोत्सवे. ॥

ओंह्री कार्तिककृष्ण प्रतिपदि अनन्तजिनगर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म— ज्येष्ठकृष्णे सुद्वादश्यां सिंहसेननृपालये । जन्मोत्सवं कृतशक्रैश्चर्चेऽनन्तजिनेश्वरम् ॥

ॐह्रीं अनन्तपरमेश्वराय ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपः— ज्येष्ठस्य श्यामलेपक्षे द्वादश्यां कर्महानये । द्वादशधातपस्तप्त यजेऽनन्ततपोनिधिम् ॥

ॐह्रीं अनन्तनाथाय ज्येष्ठकृष्ण द्वादश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानं— चैत्रकृष्णे च दर्शे च लोकालोक विलोचनम् । कृतं च येनज्ञानेन चर्चे तं ज्ञानस्वामिनम् ॥

ॐह्रीं अनन्तनाथाय चैत्रकृष्णामावस्यायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणम्—चैत्रकृष्णे सुदर्शे च घात्यघातिविवर्जितम् । वसुभूमिगतं देवं यजेहं वसुद्रव्यकैः ॥

ओं ह्रीं अनन्तस्वामिने चैत्रकृष्णामावस्यायां मोक्षप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

जय देवजिनंदं पापनिकंदं वद्यंत्रिभुवन,,शर्मकरम् । जय नाथमनन्तं श्रीभगवन्तं वन्देशान्तं शान्तिकरम् ॥ १ ॥ जय जिनवरभवहर वीरवीर जय सकलविमल मतिधीरधीर । जय ज्ञानप्रपंच

प्रचारचार जय पुण्यपयोनिधि पारपार ॥ २ ॥ जय जिनमत पंकजसूरसूर जय ज्ञानसुधारस पूरपूर । जय परमत भंजन दण्डदण्ड जयअमलसफल सुवर्णपिण्डपिण्ड ॥ ३ ॥ जय मोक्षवधूमन हारहार जय त्रिभुवनजन सुखकारकार । जय सकलविबुध पतिवन्द्यपाद जय सजल घनाघन दिव्य नाद ॥ ४ ॥ जय मानविमर्दन देवदेव जय दिनकरहिमकर सेवसेव । जय पापनिकन्दन परमगात्र जय कमलसुलोचन परमपात्र ॥ ५ ॥ जय धर्मपयोनिधि चन्द्रचन्द्र जय मोहविमर्दन तन्द्रतन्द्र । जय जन्मजरामद हरणमरण जयपरमनिरञ्जन परमचरण ॥ ६ ॥ जय अनंतगुणात्म अनंतनाथ जय जगत उधारण भव्यसाथ । जय कर्मरहित निजध्यानरूप जय अनन्तसुखात्मकचित्स्वरूप ॥ ७ ॥

घत्ताछन्दः—जय परमजिनेशं सकलसुरेशं त्रिभुवनजनगत शर्मकरम् । जय जय भगवन्तं देवमनन्तं शान्तिकरंशिव शर्मकरम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ तीर्थंकराय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्दः—अश्वत्थोपुरनन्तमत्यपि तथा पातालयक्षोनुगः पञ्चाशद्धनुरुन्नतिः शिवपदं सम्मेदभूरेवती । भंनाश्चापिससिंहसेन नृपतिर्लक्ष्मीः सवित्रीपुरं साकेतं च स यात्वनन्तजिदिनः पीतश्चकोरध्वजः ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्रीअनन्तनाथ पूजा समाप्ता ॥

अथ धर्मनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेंतुं ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ।

ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिन अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टकम् ।

जलं-स्वःस्रवन्त्याः पयोपूरैर्भर्मभृङ्गारनिर्गतैः । सर्वक्लेशविनाशाय धर्मनाथं समर्चये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चन्दनम्-कुंकुमागुरुकर्पूरचन्दनैर्नन्दनोद्भवैः । सर्वतापविनाशाय धर्मनाथं प्रपूजये ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथदेवाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः-चन्द्रावदातसरलैरक्षतैः कृष्ण जीरकैः । सर्व दुःखविनाशाय धर्मनाथं समर्चये ॥ ३ ॥
ॐ ह्रींधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पं–मालतीकुन्दकञ्जैश्च वकुल श्रीनागचम्पकैः। सर्वशोकविनाशाय चर्चे श्रीधर्मनाथकम् ॥ ४ ॥

ॐह्रीं धर्मनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यम्–सुमोदकैः खज्जकेश्च व्यञ्जनैर्भक्तपायसैः। सर्वभयविनाशाय चर्चे धर्मजिनेश्वरम् ॥ ५ ॥

ॐह्रीं धर्मनाथदेवाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपः–ज्वलच्छिखैस्तमो.नं सैः कर्पूराज्यसमुद्भवैः। सर्वग्रहविनाशायधर्मनाथं समर्चये ॥ ६ ॥

ॐह्रीं धर्मनाथस्वामिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपः–कर्पूरैलालवङ्गाद्यैर्धूपैः सुदेवदारुजैः। सर्वव्याधिविनाशाय धर्मनाथं प्रपूजये ॥ ७ ॥

ॐह्री धर्मनाथजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलम्–द्राक्षाम्रनारङ्गाद्यैः फलैः सुबीजपूरकै। सर्वव्याधिविनाशाय धर्मनाथं प्रपूजये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथाय फल निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घः–वार्गन्धाक्षत पुष्पदामचरुकैर्दीपैः सुधूपैः फलैः दूर्वासर्षपस्वस्तिकादिविलसन्मङ्गलोद्गानकैः।
वाद्यैः स्तोत्रसुपाठकैर्जयरवैः धर्माय धर्मं यजे भक्त्या पापविध्वंसकंभयहरं देवं महार्घं ददे ॥९॥

ॐह्रीं धर्मनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणकानि।

गर्भः–वैशाखस्याऽसिते पक्षे त्रयोदश्यां सुधर्मकम् सुप्रभाया· सुगर्भे च यजे श्रीगुणसागरम् ॥ १ ॥

अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णत्रयोदश्यां धर्मनाथगर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–पवित्रे माघ मासे च शुभ्रे त्रयोदशी दिने । धर्मनाथं यजे मेरौ जन्मस्नानं सुरैः कृतम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथाय माघ शुक्लत्रयोदश्यां जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तपः–माघ शुक्ले त्रयोदश्यां द्विधा संगं परित्यजन् । यजे भक्त्या शुभैर्द्रव्यै·धर्मनाथं तपोभरम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथजिनेश्वराय माघ शुक्ल त्रयोदश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानं–पौष मासे शुचौ पक्षे पूर्णिमायां जिनोत्तमम् । केवलज्ञान संप्राप्तं चर्चे सद्ज्ञानदायकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिनेन्द्राय पौष शुक्लपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

निर्वाणम्–ज्येष्ठशुक्ले सुपक्षे च चतुर्थ्यां धर्मनायकम् । वसुकर्मविनाशाय वसुभूमिगतं यजे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ल चतुर्थ्यां धर्मनाथमोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आर्या–भानु महाराज शुभाकामिन्याः सुप्रभामहादेव्याः । सूनुर्धर्मजिनेन्द्रो रत्नपुरेशो मयाऽऽराध्यः ॥

ॐ ह्रीं धर्मजिनेश्वराय पञ्चकल्याणकाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

जय धर्मजिनेन्द्रं त्रिभुवनइन्द्रंनमितमुनीन्द्रशर्मकरम् । जय धर्मजिनेशं शिवसुखईशं बन्दे धर्मं धर्मकरम् ।१। जय धर्मनाथदेवाधिदेव जय अहिनरसुरपतिकृतसुसेव । जयधर्मराज राजाधिराज जय दूरी

कृतदुर्नय समाज॥२॥जयप्रातिहार्यशोभितसुगात्र जय रत्नत्रयमणिभृत्सुपात्र। जय अनन्तचतुष्टययुक्त सूर जय लक्षण व्यञ्जनदेहपूर। ३। जय भानुमहानृपसुतसुसार कृतमातसुव्रताहर्षभार। जय धर्मनाथकर्मारिवीर जय शिव सुखदायक सिद्धधीर ॥ ४ ॥ जय धर्मनाथजगधर्मपूर जय कर्ममहाचल कृतसुचूर। जय शुक्लध्यानमय शान्तिरूप शिवकामिनिवरहैसुखस्वरूप ॥ ५ ॥

घत्ता छन्दः-जय धर्मजिनेश्वर नमिनसुरेश्वर खगहलधरनुतपाद युगम्। कन्दर्पविदारं शिव सुख सारं संस्तवीमि भवजलधिहरम् ॥६॥ ॐ ह्रीं धर्मनाथजिनेंद्राय पूजाजयमालार्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

वृत्तं-चत्वारिंशद्धनुरुन्नतिरपि सहितैः पञ्चभि र्मानसी किन्नरयक्षोसुव्रतांवा जननभमथ पुष्यश्च सम्मेद मुक्तिः। दीक्षागः सत्कपित्थो विलसातजनकोभानुरङ्कश्च वज्रं यस्यासौधर्मनाथोऽवतु कनकरुची रत्नपुर्या अधीशः ॥

॥ इत्याशीर्वादः। इति धर्मनाथ पूजा समाप्ता ॥

अथ शांतिनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोद्दङ्कितस्थापनस्य ।
स्वाननेकुं ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ।

ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलं– व्योमापगातीर्थजवारिपूरैर्गाङ्गेयभृङ्गारसुनालनिर्गतैः । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय-
श्रीशान्तिनाथमनिशं प्रयजे सुखाय ॥१॥ ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनं– काश्मीरचन्दनरुचन्द्रयुतैः सुगन्धैः पादारविन्दद्वयलेपनैश्च । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय
श्रीशान्तिनाथमनिशं प्रयजे सुखाय ॥२॥ ॐ ह्रीं शान्तिनाथदेवाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः– कृष्णजीरादिशालेयतण्डुलैर्दीर्घाक्षतैर्मौक्तिकसन्निभैश्च । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय-
श्रीशान्तिनाथमनिशंप्रयजेसुखाय ।३। ॐ ह्रीं शान्तिनाथ जिनेश्वराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पं–सुजातिकुन्दैर्वरचम्पकैश्च कदम्बनीलोत्पलमालतीभिः । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय श्री शान्तिनाथमनिशं प्रयजे सुखाय ॥ ॐ ह्रीं शान्तिनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्यं– सुघेवरैर्मोदकखज्जकैश्च सपायसान्नैर्वरव्यञ्जनाद्यैः । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय-श्री शान्तिनाथमनिशं ऽ यजे सुखाय ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं शान्तिप्रभुदेवाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः– कर्पूरसर्पिर्वरस्नेहकृतावर्तिकाभिर्ज्वलच्छिखौघैस्तमोनाशकैश्च । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय श्रीशान्तिनाथ मनिशं प्रयजे सुखाय ॥६॥ ॐ ह्रीं शान्तिनाथस्वामिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः–कर्पूरकृष्णागुरुदेवपुष्पैर्धूपैः सुगन्धीकृतदिग्विभागैः । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय श्रीशान्तिनाथमनिशं प्रयजेसुखाय ॥७॥ ॐ ह्रीं शान्तिनाथभगवते धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलम्–द्राक्षाम्रनारङ्गसुनिंबुपूगैः खर्जूरदन्तीफलदाडिमैश्च । रोगारिमारिभयदुःखविनाशनाय श्रीशान्तिनाथमनिशं प्रयजे सुखाय ॥ ८ ॥ ओंह्रीं शान्तिप्रभवे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः–वार्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपै फलैः प्रवरस्वस्तिकसर्षपैश्च । श्रीशान्तिनाथाय ददे महार्घं दूर्वासुवाद्यवरमङ्गलगाननृत्यैः ॥ ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिनेद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः–भाद्रेसुश्यामपक्षे च सप्तम्यां सुमहोत्सवैः । ऐरादेव्युदरे जातं यजेऽहंभ्रूणसङ्गतम् ।

ॐ ह्रीं शान्तिजिनेन्द्राय भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–ज्येष्ठमासेसुकृष्णेह चतुर्दश्यां जिनोत्तमम् । विश्वसेनालये जन्म प्राप्तं शान्ति यजे मुदा ॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्मधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप·– ज्येष्ठकृष्णसुपक्षे च चतुर्दशीदिने मुदा । द्विधापरिग्रहं त्यक्तं शान्ति चर्चे तपोर्जितम् ॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिनाय ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानम्–पौषशुभ्र दशम्यां तु लोकालोकप्रकाशकम् । यजे शान्तिजिनेशं च केवलज्ञाननायकम् ॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथाय पौष शुक्लदशम्यां ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणम्–ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां वसुद्रव्यैर्जिनं यजे । वसुकर्मपरित्यक्तं वसुभूमिगत सदा ॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथाय ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ।

जय शान्तिजिनेश्वर नमितसुरेश्वर वन्दितचरण शरणं मे ऐरातनुजं कलमषध्वस्तंविश्व
सेनमनमोदकरम् ॥ १ ॥ जय शान्तिनाथ देवाधिदेव जय सुरनरमुनिकृतपादसेव । जय चिन्तित
वाञ्छितदानदक्ष जय दूरीकृतदुर्मतकुपक्ष ॥ २ ॥ जय रागद्वेषमाहारिवीर जय परमशुक्लध्यानैकधीर ।
जय विश्वसेन कुलनभदिनेश जय ऐरादेवी मन सुखेश ॥ ३ ॥ जय षोडशतीर्थङ्करविख्यात जय

पञ्चमचक्री नृपसुतात। जय रोग शोकदुःखक्लेशहार जय शान्तिदेवमृगचिह्नधार ॥ ४ ॥ जय प्रबल भवार्णवतरणसेतु जय प्रबलमनोगजदमनहेतु। जय शुक्लभावधरिमुक्तिधाम जय विगतमानमदलोभ वाम ॥ ५ ॥ जय अनन्तगुणात्मक शान्तिदेव तुमध्यावतपूजकशिव लहेव। जय सर्वकर्मगिरिवज्ररूप जयमुक्तिवराङ्गनसुखस्वरूप ॥ ६ ॥

घत्ताछन्दः-इतिगुणजयमालां भावविशालां ये स्तुवन्ति परमार्थधिया। भवभयमुक्ताशिवसुखशक्ता स्ते भवन्तु शिवधामवरा ॥ ७ ॥ ॐह्रींशान्तिनाथतीर्थङ्कराय पूजा जयमालार्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

वृत्तम्-ऐराम्बा कनकाभरुकूच भरणी भंहस्तिन पत्तनं, भूजोनन्दिकुजोध्वजश्च हरिणः सम्मेदजा निर्वृतिः। चत्वारिंशदथो धनूंषि परिमाणंविश्वसेनः पिता, यस्यासौ गरुडेश्वरोऽवतु जिनः शान्ति र्महामानसीट् ॥ इत्याशीर्वादः। इति श्री शान्तिनाथ पूजा समाप्ता ॥

अथ कुन्थुजिन पूजा लिख्यते

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेक्तु ते वषट्कार जाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥
ॐह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलम्–व्योमापगागतैर्नीरैर्भर्मभृङ्गारमिश्रितैः । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं समर्चये ॥ १ ॥
ॐह्रीं कुन्थुनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
चन्दनम्–श्रीखण्डकुङ्कुमोद्भूतैर्गन्धद्रव्यैरनेकधा । सर्वबाधाप्रशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं प्रपूजये ॥ २ ॥
ॐह्रीं कुन्थुनाथ जिनेश्वराय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।
अक्षताः–चन्द्रावदातसरलैरक्षतैः क्षतकल्मषैः । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं समर्चये ॥ ३ ॥
ॐह्रीं कुन्थुनाथाय अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा ।

पुष्पम्-कदम्बमालतीचम्पैर्वकुल श्रीसुदामकैः । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं समर्चये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थुजिनेशाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यम्-खज्जकैर्वरै दुंग्धैर्मोदकैर्मुद्गसम्भवैः । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं समर्चये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथजिनेशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः-कर्पूराज्यभवैर्दीपै स्तमोभर विनाशकैः । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं समर्चये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः-कर्पूरागुरुसम्मिश्रैर्धूपैर्धूपितदिक्चयैः । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं समर्चये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थु स्वामिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

फलम्-सुदाडिमाम्रनारङ्गैः पूगैः श्रीफलचारुकै । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं कुन्थुनाथं समर्चये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथ तीर्थङ्कराय फल निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घः-जलादिफलपर्यन्तैरर्घैर्मङ्गलसंयुतैः । सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं चर्चे कुन्थुजिनं मुदा ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थुजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीनि स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः-श्रावणे कृष्णपक्षे च दशम्यां कुन्थुनाथकम् । श्रीकान्तागर्भसम्भूतं यजे कृत्वा महोत्सवम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णदशम्यां कुन्थुनाथ गर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म-वैशाखार्जुने पक्षे प्रति पद्दिवसे शुभे । सूर्यराजगृहे जन्म प्राप्तं चाये हरिप्रियम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थुजिनेशाय वैशाख शुक्ल प्रतिपदि जन्मधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपः-वैशाखशुक्लप्रतिपद्दिने तपोऽर्जितं महत् । द्विधा मूर्छापरित्यज्य संयजामि दिगम्बरम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल प्रतिपदि कुन्थुनाथतपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानं-चैत्रशुक्लतृतीयायां द्विधाधर्मप्रकाशकम् । कुन्थुनाथ महं वन्दे घातिकर्मविनाशकम् ॥४॥

ॐ ह्रीं कुन्थुजिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल तृतीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणं-वैशाख शुभ्र प्रतिपद्दिवसे प्राप्तनिर्वृतिम् । यजामि विसुभिर्द्रव्यैः सम्मेदे वै गुणात्मकम् ॥ ५ ।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथाय वैशाखशुक्ल प्रतिपदि मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ॥

जय कुन्थुजिनेश्वर नमितसुरेश्वर नरसुरमुनिजनकृतपदसेवम् । श्रीकान्ता पुत्रं परमपवित्रं सूर्यराजमनमोदकरम् ।१। जय कुन्थुजिनेश दयानिधान जय कुन्थुप्रभृतिजीवनप्रदान । जय कामधेनु कामितसुदान जय चिन्तामणि चिन्तितप्रदान।२।जय मुक्तिरमावरसुखपवित्र जय कर्माष्टकदारणसुशस्त्र। जय वसुगुणयुत वसुभूमिप्राप्त जय दर्शन सुख बल ज्ञानज्ञान॥३॥ जय तरुअशोकजनशोकहार जय सुर

कृत कुसुम सुवृष्टिसार। जय जिनमुखनिर्गतदिव्यनाद जयचमरीरुहचतुषष्ठिवाद॥४॥ जय कनकपीठ आसन उत्तङ्ग जय देहदीप्तिलज्जितअनङ्ग। जय दुन्दुभि सुर करते अभंग जय छत्रत्रययुतमुष्टुअङ्ग।

घत्ता छन्दः—असमसुखनिधानं चारु चैतन्यरूपं अतिशयगुणयुक्तं दोषराजीप्रमुक्तं। सुरनर अहिवन्द्यं सर्वदा कुन्थुनाथं स्मरति नमति यो वास्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम्॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथजिनेन्द्राय पूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

वृत्तम्—तातः श्रीसूरसेनो विलसति कमलाख्या सवित्री ध्वजोजो,
जन्मर्क्षं कृतिकाङ्कच्युतिरपि कनकभापुर हास्तिनम्।
त्रिंशच्चापाश्च पञ्चोन्नतिरपि तिलकोद्रुश्चसम्मेदमुक्तिः,
यस्यासौ कुन्थुरव्यात्त्रिजगदपि जयायुक्तगन्धर्वंयक्षेट्॥

इत्याशीर्वादः। इति श्री कुन्थुनाथ पूजा समाप्ता॥ १७॥



अथ अरनाथ पूजा लिख्यते

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोद्दंकित स्थापनस्य ।
स्वनिर्नेकु ते वषट्कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥
ॐह्रीं अरनाथजिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐह्रीं अरनाथजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐह्रीं अरनाथजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टकम् ।

जलं- व्योमापगाह्रदोद्भूतस्वच्छशीताम्बुधारया । दुष्टाष्टकर्मशान्त्यर्थं अरनाथमहं यजे ॥ १ ॥
ॐह्रीं अरनाथतीर्थंकराय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
चन्दनम्-मलयारण्यसम्भूतगन्धचन्दनलेपनैः । दुष्टाष्टकर्मशान्त्यर्थं अरनाथमहं यजे ॥२॥
ॐह्रीं अरनाथजिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।
अक्षता- कृष्णजीरादिशालेयैरक्षतैर्दीर्घगात्रकैः । दुष्टाष्टकर्मशान्त्यर्थं अरनाथमहं यजे ॥ ३ ॥
ॐह्रीं अरनाथजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता छन्दः-अतुलसुखनिवासं त्यक्तदोषंजिनेन्द्रं सुकृतसुखसमुद्रं शान्तिरूपं सुभद्रम् ।
सकलहरिप्रपूज्यं घोरकंदर्पहारं भजतु भजतु भव्याः । श्रीअरंविश्वपूज्यम् ॥

ॐह्रीं अरनाथजिनेन्द्राय पूजाजयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृत्तम्-तातोभाति सुदर्शनस्तरुरथाम्रो रोहिणीभंध्वजो, मीन-काञ्चनरुक्पुरं गजपुरंमातासुमित्रासती ।
मानंत्रिंशदथो धनूंषि शिवभूः सम्मेदनामा गिरियंस्यासौ विजयेश्वरोऽवतु महेन्द्रोसोऽरनाथोजिनः ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्रीअरनाथ तीर्थंकरपूजा समाप्ता ॥

अथ मल्लिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कित स्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेक्तुं तेवषट्कार जाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथजिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट्आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिन अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टकम् ।

जलम्–व्योमापगादिसंभूतैर्नीरैर्गन्धविमिश्रितैः । सर्वविघ्नोपशान्त्यर्थं मल्लिनाथं प्रपूजये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथजिनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
चन्दनं–चन्दनैश्चन्द्रसम्मिश्रैः कुङ्कुमै स्वर्णोपमैः । सर्वविघ्नौघशान्त्यर्थं मल्लिनाथं यजे मुदा ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथजिनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।
अक्षता–सरलामलशालेयतण्डुलैः कान्तिमञ्जुलैः । सर्वं विघ्नोपशान्त्यर्थं मल्लिनाथं यजे मुदा ॥३॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पम्—चम्पकैःपद्मकैः कुन्दैः कदंबैः पुष्पदामकैः। सर्व दुःखौघशान्त्यर्थं चाये मल्लिजिनं मुदा ॥४॥
ॐह्रीं मल्लिनाथजिनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यम्—मोदकैर्घृतवरैः पूपैः पायसैस्तप्तभक्तकैः। सर्वरोगारिशान्त्यर्थं मल्लिदेवं यजे मुदा ॥ ५ ॥
ओंह्रीं मल्लिदेवाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपः—कर्पूराज्यभवैर्दीपै मोहान्धतमोनाशकैः। सर्वशोक विनाशाय मल्लिनाथ यजे मुदा ॥ ६ ॥
ओंह्रीं मल्लिनाथतीर्थङ्करायदीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपः— कर्पूरागुरुसम्मिश्रैर्धूपैःशिलारसान्वितैः। सर्वविघ्नौघशान्त्यर्थं मल्लिनाथं समर्चये ॥ ७ ॥
ओंह्रींमल्लिनाथभगवते धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलम्—आम्रादिफलनारङ्गैः पूगैर्मनोहरैः शुभैः। सर्वविघ्नौघशान्त्यर्थं मल्लिदेवं समर्चये ॥ ८ ॥
ओंह्रीं मल्लिनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घः—वार्गन्धाक्षत पुष्पैर्नैवेद्यैर्धूपपक्वफलैः। स्वस्तिकसर्षपदूर्वाऽर्घैरर्चे जिनोत्तमं मल्लिम् ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं मल्लिनाथतीर्थङ्कराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणकानि।

चैत्र मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद्दिवसे शुभम्। प्रजावत्युदरे जातं यजे गर्भोत्सवं मुदा ॥१॥

गर्भः–चैत्र मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद्दिवसे शुभम्। प्रजावत्युदरे जातं यजे गर्भोत्सवं मुदा ॥१॥

ओं ह्रीं चैत्र शुक्ल प्रतिपदि मल्लिनाथ गर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

जन्म–मार्गशीर्षशुचौ पक्षे विशुद्धे कादशीदिने। कुम्भराजगृहे यस्य जन्मोत्सवं यजे मुदा ॥ २ ॥

ओं ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्रायमार्गशीर्ष शुक्लैकादश्यां जन्म धारकाय अर्घं निर्वपमीति स्वाहा

तपः– मार्गशीर्षे शुचौ पक्षे विशुद्धैकादशी दिने। द्विधा तपो धृत सङ्ग त्यक्तं चाये जिनं मुदा ॥३॥

ओंह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लेकादश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानम्–पौषमासे कृष्ण पक्षे विशुद्धे द्वितीयादिने। लोकालोक प्रकाशाय यजेज्ञानदिवाकरम् ॥ ४ ॥

ओंह्रीं मल्लिदेवाय पौष कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणम्–फाल्गुणे शुक्ल पक्षे च पञ्चम्यां शुद्ध वासरे। मल्लि मुक्तिगतं चर्चे कर्ममल्ल विनाशकम् ॥५॥

ओं ह्रीं मल्लिनाथाय फाल्गुण शुक्ल पञ्चम्यां मोक्ष प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला।

श्रीमान् मल्लिजिनो जयतुतरां श्री कुम्भराज्ञः सुतो कुम्भाङ्को सुप्रजावती सुजठरे जातो मनो हर्षदः। त्रिंशच्चापतनून्नतिः सुकनकाभाद्युतिर्मुक्तिदः सोस्माकं मिथिलेश्वरो नृपपतिः वधा-

तसदा मङ्गलम् ॥ १ ॥ जय मल्लिनाथदेवाधिदेव सुरनर अहिपति कृतपादसेव । जय मिथिलापत्तन राज राज जय कुम्भराज कृत सुख समाज ॥ २ ॥ जय मात प्रजावति उदरसार जय परिजनमनकृत हर्ष भार । जयशचीइन्द्र मन हर्षधार जय कुम्भचिह्नहनमदन भार ॥ ३ ॥ जय तरु अशोक जन शोक भङ्ग जय कुसुम वृष्टि सुरकृत अभग । जय दिव्यध्वनि भव जलधितार जय षष्टिचतुः सुरचमरढार ॥ ४ ॥ जय सिंहपीठ आसनसुखार जय भामण्डलतनुदीप्तिधार । जय देवदुन्दुभिकृत सुराव जय छत्रत्रय उज्वलसुभाव ॥ ५ ॥

घत्ता छन्दः–वन्दे मल्लिजिनेशंनमित सुरेशं खगपतिनरपति पूज्यपदम् । हतमदनविकारं भवजल पारं तारणपोत मुक्तवरम् । ॐह्रीं मल्लिनाथतीर्थङ्कराय पूजा जय मालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृत्तम्– कुम्भः कुम्भः पिताङ्कः पुरमथमिथिलावा प्रजावत्यशोक श्चैत्यद्रुः स्वर्ण वर्ण स्तनुरथ परिमा विंशतिः पञ्चचापाः । अश्विन्यृक्षं कुवेरश्चरणपरिणतो भाति सम्मेद मुक्तिः, यस्यासौ मल्लिनाथोऽवतु जगदपराधोर्जितायाअधीशः ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्रीमल्लिनाथपूजा समाप्ता ।

अथ मुनिसुव्रतनाथ पूजा प्रारभ्यते।

स्वामिन् संवौषट कृता ह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्व निर्नक्तुं ते वषट्कार जाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभे याष्ट धेष्टिम् ।
ओंह्रीं मुनिसुव्रत जिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्राऽवतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ॥
ओंह्रीं मुनिसुव्रतनाथ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ओं ह्रीं मुनि सुव्रतनाथ जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलम्–व्योमापगाक्षीर समुद्र नीरैर्गाङ्गेयपात्राश्रित नाल निर्गतैः। श्रीसुव्रतं जिनवरं सततं सुभक्त्या समर्चयेह बहुधासुद्रव्यैः ॥ ओं ह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जल निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनम्–कर्पूरकुङ्कुमसुचन्दनमिश्रितैश्च गन्धैः सुसौरभगतालिसमूहकैश्च। श्रीसुव्रत जिनवरं सततं सुभक्त्या समर्चयेऽहं बहुधासुद्रव्यैः ॥ २ ॥ ओंह्रीं मुनिसुव्रतजिनेशाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षता–अखण्डशालेयसुतण्डुलौघैः समुज्वलैश्चन्द्रकरावदातैः । श्रीसुव्रतं जिनवरं सतत सुभक्त्या समर्चयेऽहं बहुधासुद्रव्यैः । ३ । ओंह्रीं मुनिसुव्रतजिनेश्वराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पम्–कदम्बलीलोत्पलपारिजातैः सपुष्पकैः कुन्दसुमालतीभिः । श्रीसुव्रत जिनवरं सतत सुभक्त्या

समर्चयेऽहं बहुधाऽसुद्रव्यैः ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं मुनिसुव्रततीर्थङ्कराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यम्–सुखज्जकैः पायसमुग्द मोदकैः सुपूपकैर्व्यञ्जनतप्तभक्तकैः । श्रीसुव्रतं जिनवरं सततं सुभक्त्या समर्चयेऽहं बहुधासुद्रव्यैः ॥५॥ ओंह्रीं मुनिसुव्रततीर्थनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपाः– स्नेहाज्यकर्पूरकृतात्तिकाभिरुद्यच्छिखौघैस्तमोनाशकैश्च । श्रीसुव्रतं जिनवरं सततं सुभक्त्या समर्चयेऽहं बहुधासुद्रव्यैः ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं मुनिसुव्रत देवायदीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः– कर्पूरकृष्णागुरुचन्दनादिद्रव्यैः सुगन्धैर्वरधूपकैश्च । श्रीसुव्रतं जिनवरं सततं सुभक्त्या समर्चयेऽहं बहुधासुद्रव्यैः ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं मुनिसुव्रततीर्थराजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलम्–नारङ्गचोचाम्रसुनिम्बुकैश्च खर्जूरदाडिमसुचिर्भटनालकेरैः । श्रीसुव्रतं जिनवरं सततं सुभक्त्या समर्चयेऽहं बहुधा सुद्रव्यैः ॥ ८ ॥ ओंह्रीं मुनिसुव्रत देवाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः–अब्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपैः फलैः प्रवरस्वस्तिकदर्भसर्षपैः । अर्घं ददामि वरमङ्गलपाठकैश्च श्रीसुव्रतं जिनवरं प्रयजे सदाऽहम् ।९। ओंह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः– श्रावणे कृष्णपक्षे च द्वितीयायां सुराधिपैः । कृत गर्भोत्सवं यस्य तं यजे मुनिसुव्रतम् ॥ १ ।

ॐह्रीं मुनिसुव्रतजिनवराय श्रावण कृष्णद्वितीयायां गर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–वैशाखे कृष्णपक्षे च दशम्यां जन्म जातकम्। पद्मावतीसुमित्रस्य गृह श्रीसुव्रत यजे ॥२॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनवराय वैशाखकृष्णदशम्यां जन्मावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः–वैशाखे मेचके पक्षे दशम्या सुव्रतं जिनम् । तपस्तप्तं महाघोरं संयजे कर्म हानये ॥३॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण दशम्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानम्–वैशाखे श्यामले पक्षे नवम्यां सुव्रतं जिनम् । केवलज्ञान भानुं च चर्चे विश्व प्रकाशकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण नवम्यां मुनिसुव्रतज्ञानधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणम्–फाल्गुणे कृष्णपक्षे च द्वादश्यां वसुभूमिगम् । वसुकर्महरं देव पूजये वसुद्रव्यकैः ॥५॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतदेवाय फाल्गुण कृष्ण द्वादश्यां मोक्ष प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

श्रीमान् श्री मुनिसुव्रतो विजयते भूभृत्सुमित्राङ्गजो,पद्मावत्युदरे महा सुखकरःप्रावृट् घनाङ्गद्युतिः। सर्व क्लेश गृहारिमारि भयहत राजग्रहेट्सत्यवाक्,सोयं कच्छपचिह्नपो जिनपतिः दद्यात्सदा मे सुखम् । १ । जय मुनिसुव्रनजिनराज देव सुर नर खग मुनिकृतपादसेव । जय सुव्रत मुनिव्रतदानदक्ष जय सुव्रतदुर्मतिहतविपक्ष ॥ २ ॥ जयमिथ्यामोहप्रमादचूर जय अष्ठ कर्म खण्डन सुकूर । जय दुष्ठ कषाय विध्वंससूर जय ज्ञान सुधारस विश्वपूर ॥ ३ ॥ जय समवशरण भूमध्यतिष्ट हतरागद्वेषमद

कर्म अष्ट । जय द्वादशसभास्थजनविशिष्ट जय सप्तभङ्गयुतवचनमिष्ट ॥ ४ ॥ जय मदनविमर्दन प्रबलवीर जय भववन उत्पाटनसमीर । जय जन्म जलधि तारणतरंड जय रत्नत्रयगुणभृतकरण्ड ॥ ५ ॥ जय नृपतिसुमित्र जिनतामनात जय पद्मावनि जननी विख्यात । जय राजग्रहपुरराज राज जय कच्छपजलचरचिह्नसाज ॥ ६ ॥

घत्ता छन्दः-अजर अमरसेव्यं व्यक्तलक्ष्मश्रियाढ्यं गुणगणसुखवार्द्धि प्रातिहार्यैःप्रयुक्तम् । निहतनिखिलदोषं शान्तिदंतीर्थनाथं सुकृतजनगणानां संस्तुवे सुव्रताख्यम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय पूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद्यम्- यक्षो तो वहुरूपिणी च वरुणोंगश्चम्पको मुक्तिभूः सम्मेदः श्रवणो भमुन्नतिरथोकोदण्डका विंशतिः । पद्मावत्यभिधांविका सरसिजं चिह्नं सुमित्रः पिता यस्यासावसितोसुराजग्रहरा पुनः सुव्रतेशः श्रिये ।

इत्याशीर्वादः । इति श्रीमुनिसुव्रतनाथ पूजा समाप्ता ॥ २० ॥



अथ नमिनाथ पूजा प्रारभ्यते।

स्वामिन् संवौषट्कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनाट्टङ्कितस्थापनस्य।
स्वं निर्नेकु ते वषट् कारजाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्ठधेष्टिम् ।
ॐ ह्रीं नमिनाथजिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं नमिनाथ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं नमिनाथ जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलम्–व्योमापगा समुद्भूतैर्नीरगन्धविमिश्रितैः । नमिनाथमहं चर्चे सर्वारिष्ठविनाशकम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं नमिनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दनम्–चन्दनैः कुङ्कुमोन्मिश्रैः शीतलैस्तापशान्तये । नमिनाथमहं चर्चे सर्व दुःख विनाशकम् ॥२॥
ॐ ह्रीं नमिनाथतीर्थङ्कराय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षता–अखण्ड शालिजैःशुभ्रै रक्षतैः शिव लब्धये । नमिनाथमहं चर्चे सर्वक्लेशविनाशकम् ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं नमिनाथ जिनेश्वराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
पुष्पम्–चंपकैर्वकुलैः कुन्दैः कमलैः कर्महानये। नमिनाथमहं चर्चे सर्वारिष्टविनाशकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथ जिनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यम्–मोदकैः पायसैःपूपैर्व्यञ्जनैः क्षुद्विहानये । नमिनाथमहं चर्चे सर्वारिष्टविनाशकम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः– कर्पूराज्यभवैर्दीपैरुद्यतैस्तमोनाशकैः । नमिनाथमहं चर्चे सर्वारिष्टविनाशकम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथ-जिनेशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः– कृष्णागुरुकपूराद्यैः सुधूपैः कर्महानये । नमिनाथ महं चर्चे सर्वारिष्ट विनाशकम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथजिनवराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलम्–नारङ्गाम्रकपित्थैश्च फलैर्मोक्षफलाप्तये । नमिनाथमहं चर्चे सर्वारिष्टविनाशकम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथ भगवते फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः–वार्गन्धाक्षत पुष्पैश्च चरुभिर्दीपधूपकैः । फलैरेभिर्ददाम्यर्घं नमिनाथाय शान्तये ॥९॥

ॐ ह्रीं नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भ.– आश्विने कृष्णपक्षे च द्वितीयायां जिनोत्तमम् । सुनन्दा भ्रूणसम्भूतं नमिनाथमहं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथ जिनेन्द्राय अश्विन कृष्णद्वितीयायां गर्भावतराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–आषाढे कृष्णपक्षे च दशम्यां विजयालये । नमिनाथसुजन्मानं यजेऽहं सज्जलादिकैः ॥ २ ॥

ॐह्रीं नमिनाथ जिनाय आषाढ कृष्णदशम्यां जन्मावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपः–आषाढे कृष्ण पक्षे च दशम्यां शुभ वासरे । द्विधा तप्तं तपो येन नमिनाथमहं यजे ।३॥ ॥

ॐह्रीं नमिनाथ स्वामिने आषाढ कृष्णदशम्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानम्–मार्गशीर्षे शुक्ल पक्षे विशुद्धैकादशी दिने । केवल ज्ञान संप्राप्तं नामनाथं समर्चये ॥ ४ ॥

ॐह्रीं नमिनाथाय मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां केवल ज्ञान प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणम्–वैशाखेकृष्ण पक्षेच चतुर्दश्यां नमिनायकम् । वसुभूमिगत देवं पूजयेहं गुणात्मकम् ॥ ५ ॥

ॐह्रीं नमिनाथ जिनेश्वराय वैशाख कृष्णचतुर्दश्यां मोक्षप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

श्रीमान् श्रीनमिनायको गुणनिधिर्नाकाधिपैः पूजितो,माता यस्य पतिव्रता गुणवती शुद्धा सुभद्राभिधा । श्रीमदर्जुनभूभृतो मनिवरः पुत्रोंहिरण्याङ्करुक्,सोऽस्माकं मिथिलेश्वरोत्पलध्वजो दद्यात्स दामेसुखम् ॥१॥ जय त्वं देव देवेश जय सर्वगणाधिप । जयत्वं विश्वविद्येश जय त्वं नमिनायक ॥२॥ जय त्वं सर्वलोकेश जयत्वं रक्षकोत्तम । जय त्वं भुवनाधीश जय त्वं नमिनायक ॥ ३ ॥ जय त्वं

भोगविमुख जय त्वं योगधारक। जय त्वं ध्यानध्याता च जय त्वं नमिनायक ॥ ४ ॥ स्याद्वादेश जय त्वं हि जय कुमतपक्षहृत। जय रक्तोत्पलाङ्क त्वं जय त्वं नमिनायक ॥ ५ ॥ जय कर्मारिवीर त्वं जय मुक्ति रमावर। जयानन्तगुणज्ञ त्वं जय त्वं नमिनायक ॥ ६ ॥ जय कर्माद्रिकुलिश जय त्वं ज्ञानलोचन। जय मन्मथवीर त्वं जय त्वं नमिनायक ७॥ जय ज्ञानसरोहंस जय ज्ञान सुधारक। जय मिथ्यातमः सूर जय त्वं नमिनायक ॥ ८ ॥।

घत्ताछन्दः—जय नमिजिनवर त्रिभुवन सुख करपाप तमोहर शर्मप्रद। जय नाथ गुण कर मुक्तिरमावर रक्ष रक्ष भव वारिनिधे॥९॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय पूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्तम्—अश्विय॒ ऋक्षं च पञ्च दश धनुरुदयो भा सुभद्रा हरिद्रा जितभाङ्कं कैरवं द्रुर्वकुल इति पिता वर्णनामा जयाद्यः मुक्तिः सम्मेदशैलो विलसति मिथिलापूर्भृकुटचाख्ययक्षा यस्योच्चैरस्तु तस्मै नम इति नमय चारुचामुण्डिकेशः ॥ इत्याशीर्वादः।

इति श्रीनमिनाथतीर्थङ्कर पूजा समाप्ता ॥

अथ श्रीनेमिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य ।
स्वं निर्नैक्तं ते वषट्कार जाग्रत्सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टकम् ।

जलम्–व्योमापगातीर्थजलैः पवित्रैर्गाङ्गेयभृङ्गारसुनालनिर्गतैः। कृष्णप्रभं नेमिजिनं यजेऽहं सुकम्बुकाङ्कं शिवदेविसूनुम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्–सुकुंकुमैश्चन्दनचन्द्र यक्तैर्विलेपनैर्नेमिकमाब्जयुग्मम ।कृष्णप्रभंनेमिजिनंयजेऽहंसुकम्बुकाङ्कं शिवदेविसूनुम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नेमिनाथ भगवते चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षता·–सुव्रीहिजातैःसरलैरखण्डैःपीयूषतुल्यैर्वरराजभक्ष्यैः। कृष्णप्रभं नेमिजिनं यजेऽहं सुकम्बुकाङ्कं शिवदेविसूनुम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं नेमिजिनेशाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पम्–सुमालतीसेवतिकञ्जजातीकदम्बकुन्दादिप्रसूनकैश्च । कृष्णप्रभंनेमिजिनं यजेऽहं-

भोगविमुख जय त्वं योगधारक । जय त्वं ध्यानध्याता च जय त्वं नमिनायक ॥ ४ ॥ स्याद्वादेश जय त्वं
हि जय कुमतपक्षहृत । जय रक्तोत्पलाङ्क त्वं जय त्वं नमिनायक ॥ ५ ॥ जय कर्मारिवीर त्वं जय मुक्ति
रमावर । जयानन्तगुणज्ञ त्वं जय त्वं नमिनायक ॥ ६ ॥ जय कर्माद्रिकुलिश जय त्वं ज्ञानलोचन ।
जय मन्मथवीर त्वं जय त्वं नमिनायक ७॥ जय ज्ञानसरोहंस जय ज्ञान सुधारक । जय मिथ्यातमः
सूर जय त्वं नमिनायक ॥ ८ ॥ ।

घत्ताछन्दः—जय नमिजिनवर त्रिभुवन सुख कर पाप तमोहर शर्मप्रद । जय नाथ गुण कर मुक्तिरमावर
रक्ष रक्ष भव वारिनिधे॥९॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय पूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृत्तम्—अश्विय: क्षं च पञ्च दश धनुरुदयो भा सुभद्रा हरिद्राजितभाङ्कैरवं द्रुर्वकुल इति पिता वर्णनामा
जयाद्यः मुक्तिः सम्मेदशैलो विलसति मिथिलापूर्भृकुटयाख्ययक्षा यस्योच्चैरस्तु तस्मै नम इति नमय
चारुचामुण्डिकेशः ॥ इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीनमिनाथतीर्थङ्कर पूजा समाप्ता ॥

अथ श्रीनेमिनाथजिन पूजा प्रारम्यते।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कितस्थापनस्य।
स्वं निर्नैक्तं ने वषट्कार जाग्रत्सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

पद्याष्टकम्।

जलम्–व्योमापगातीर्थजलैः पवित्रैर्गाङ्गेयभृङ्गारसुनालनिर्गतैः। कृष्णप्रभं नेमिजिनं यजेऽहं सुकम्बुकाङ्कं
शिवदेविसूनुम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनम्–सुकुंकुमैश्चन्दनचन्द्र यक्तैर्विलेपनैर्नेमिकमाब्जयुग्मम। कृष्णप्रभंनेमिजिनंयजेऽहं सुकम्बुकाङ्कं
शिवदेविसूनुम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नेमिनाथ भगवते चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षता–सुव्राहिजातैःसरलै रखण्डैःपीयषतुल्यैर्वरराजभक्ष्यैः। कृष्णप्रभं नेमिजिनं यजेऽहं सुकम्बुकाङ्कं
शिवदेविसूनुम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं नेमिजिनेशाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पम्–सुमालतीसेवतिकञ्जजातीकदम्बकुन्दादिप्रसूनकैश्च। कृष्णप्रभंनेमिजिनं यजेऽहं-

सुकम्बुकांकं शिवदेविसनुम् ॥ ४ ॥ ॐह्रीं नेमिनाथजिनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यं–सुमोदकैः खज्जकपायसैश्च सद्व्यञ्जनैस्तप्तघृताक्तभक्तैः । कृष्णप्रभं नेमिजिनयजेऽहं
सुकम्बुकांकशिवदेविसूनुम् ॥ ५ ॥ ॐह्रीं नेमिनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दापः–सुस्नेहचन्द्राज्यभवैः प्रदीपैरुद्यच्छिखैरन्धतमोविनाशैः । कृष्णप्रभं नेमिजिनयजेऽहं-
सकम्बकांकं शिवदेविसूनुम ॥ ६ ॥ ॐह्रीं नेमिनाथभगवते दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः–कर्पूरकृष्णागुरुचन्दनादिधूपैः सुगन्धीकृतदिङ्मुखैश्च । कृष्णप्रभंनेमिजिनयजेऽह
सकम्बुकांकंशिवदेविसूनुम् ॥ ७ ॥ ॐह्रीं नेमिनाथ परमेश्वराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलम्–नारिकेलाम्रकपित्थकैश्च नारंगद्राक्षैः सरसैःफलौघैः । कृष्णप्रभं नेमिजिनंयजेऽह·
सुकम्बुकांकंशिवदेविसूनुम् ॥ ८ ॥ ॐह्रीं नेमिनाथतीर्थंकराय फल निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः–वार्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपै.फलैः स्वस्तिकगीततूर्यैः । अर्घंददेजिनवराय सुनेमिनाम्ने
दुःखौघनाशाय सुखकराय ॥ ९ ॥ ओंह्रीं नेमिनाथतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणकानि ।

गर्भः–कार्त्तिके शुभ्रपक्षे च षष्ठयां श्रीनेमिनायकम् । शिवादेव्याः सुतगर्भे सयजामि जलादिकैः ॥१॥
ओंह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय कार्त्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म-श्रावणेशुक्लपक्षे च सुषष्ठ्यांजन्मजातवान् । स्नान सुराधिपैर्मेरौकृतं चर्चे सुहर्षतः ॥२॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्मधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः—नभस्य श्वनपक्षे च षष्ठ्यांतपोर्जित महत् । द्विधासङ्गविमुच्याशु सयमाप्तं यजे मुदा ॥ ३ ॥

ओंह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां नेमिनाथतपोधारकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

ज्ञानम्—आश्विने शुक्लपक्षे च प्रतिपत्सुदिनेयजे । केवलज्ञानयुक्तं च नेमि विश्वप्रकाशकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेशाय आश्विन शुक्लप्रतिपदि ज्ञानधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणम्—आषाढश्वेतपक्षे च सप्तम्यामुर्जयन्तके । वसुकर्मक्षयंकृत्वा वसुभूमिगतंयजे ॥ ५ ॥

ओंह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय आषाढ शुक्लसप्तम्यां मोक्षप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला ।

स्वस्तिश्रीनेमिनाथो जलधरद्युतिधृत्यादवेन्दुदयावान् शखाङ्कश्च शिवायास्तनमनसुखद. पूज्तितोनृसुरैश्च। निवृनिरुर्जयन्ते हरिबलबलजिद्द्वारिकाया नरेशः सायश्रीविजयान्तवारिधिपुरराज्ञो मनोहर्षदः ॥ ६ ॥ जिनेन्द्रहि नेमिमुदानोमि मुर्द्धानतामृत्यमृत्याहितन्नाथसेव्यम् । गताह्रीर्हतारिं स्वकीयाल्पबुद्ध्य सदा वर्द्धमानोपि भूयोजगत्यां ॥ ७ ॥ सुसोरनपर्णकपुष्प फलाप्त सुशोकहरागवि कासितगात्र । ससुद्रजयाच्छिवपुत्र गणेश जयामदनेमिजिनेशशिवेश ॥ ८ ॥ कनकतपनीय महोज्वल रत्नसुखंचिनसिंहकविष्टरसन्न । समुद्रजयाच्छिवपुत्रगणेश जयामदनेमि जिनेशशिवेश ॥९॥ शतामर

नाथ शतानतधीर सुचामरलक्षित वर्षसुवीर। समुद्रजयाच्छिवपुत्रगणेश जयामदनेमि जिनेशशिवेश ॥ १० ॥ अनन्तनिनादितदुन्दुभिगीत सुकेवलबोधयशो भयभीत। समुद्रजयाच्छिवपुत्रगणेश जयामद नेमि जिनेशशिवेश ॥ ११ ॥ दिवौकसहस्रसुमोचितसार सुगन्धितशालिनपुष्पसुभार। समुद्र जयाच्छिवपुत्रगणेश जयामदनेमिजिनेश शिवेश ॥ १२ ॥ प्रभाशुभमण्डलकोटिदिवाकर मन्दीकृतकान्तिमहोदयभासुर। समुद्र जयाच्छिवपुत्रगणश जयामदनेमि जिनेशशिवेश ॥ १३ ॥ सुदिव्यनिनादकृतामललोक चतुर्मुखशोभि हृताखिलशोक। समुद्रजयाच्छिवपुत्रगणेश जयामदनेमि जिनेश शिवेश ॥ १४ ॥ इत्थंतव विभूतिरियं विमलारम प्रसिद्धतरां जगतिप्रभवाम समुद्रजयाच्छिवपुत्रगणेश जयामदनेमि जिनेश शिवेश ॥ १५ ॥

घत्ताछन्दः—सकलजिनवरिष्टो नेमिनाथो धरित्र्यां जयतु सुरनरेन्द्रैः सेवितो पादपद्मो। सकलजनसमूहान्मङ्गलंदिन्तु यूयं ममहरतु सदाघं धर्मसंगद्धियत्त ॥

ॐह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रायपूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्तम्—वशोद्भःकम्बुरङ्को विलसति शिवदेव्यंविरूक्षं च चित्रा मुक्तेर्भूरुर्जयन्तो दशधनुरुदयो भाति सर्वाह्वयक्षः। यक्षीकूष्माण्डिनीरुग्धं नजिदथपुरं शौपूर्वपुरं वै यस्यासौ नेमिनाथो जलधिविजयजः पातुनोऽनाथबन्धुः ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीनेमिनाथपूजा समाप्ता ॥ २२ ॥

अथ पार्श्वनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्वामिन् सवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेन।ट्ङ्कितस्थापनस्य ।
स्वंनिर्नेक्तुं त वषट्कार जाग्रत्सान्निध्यस्य प्रारभयाष्टधेष्टिम् ॥

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिन अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टकम् ।

जलम् -गङ्गापगाक्षीरपयोधिजातैर्गाङ्गेय यात्राश्रितवारिपूरैः । श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं
समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्-श्रीखण्डकर्पूरसुचन्दनाद्यैर्गन्धैर्मनोज्ञैर्भवतापहान्यै । श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं
समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ २॥ ॐह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षताः-अखण्ड शाल्यक्षतमञ्चयै सुपुञ्जैःसुकुन्देन्दुकरावदातैः । श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं
समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ ३ ॥ ॐह्रीं पार्श्वनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पं-रक्तोत्पलैः कुन्दसुमालतीभि र्जातीजपाचम्पकदामकैश्च । श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं

समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेशाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यं–सुपायसान्नैर्वरमोदकैश्चनन्नोदनैः सर्पिदधीक्षुपूपैः । श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं
समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथतीर्थंकराय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः–सुस्नेहपूरघृतोद्भवैश्च दीपैर्ज्वलद्वर्त्ति शिखासमूहैः । श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं
समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथदेवाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा ।

धूपः–कर्पूरकृष्णागुरुचन्दनौघैर्धूपैः कुकर्मेन्धनपावकैश्च श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं
समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

फलम्–आम्रैः कपित्थैर्वरवीजपूरैर्द्राक्षैः सुमोचैः शिवहेतुभिश्च । श्रीपार्श्वनाथस्य पदाब्जयुग्मं
समर्चयेऽहं भवरोगशान्त्यै ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथभगवते फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः–अब्गन्धतण्डुलसुपुष्पचरुप्रदीपैर्धूपैःफलौघैः सुकृतार्थकैश्च । सिद्धार्थदर्भवरस्वस्तिकैश्च यजे
सदापार्श्वप्रभोःक्रमाब्जम् ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथतीर्थंकरदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीमान्श्रीपार्श्वनाथो जयतुगुणनिधिर्ब्रह्मचारी दयालु·
वाराणस्या नृपेन्द्रः हरिन्मणिद्युतिर्भोगिराजाङ्कयुक्च ॥
वामादेव्यास्तनूज· कमठमदहरो यस्य तातोऽश्वसेनः ।
सोयं श्रीपार्श्वनाथो ददतु मम सुख विघ्नवर्गारिहन्ता ॥ १० ॥ इति महार्घम्

अथ पञ्चकल्याणकानि।

गर्भः-वैशाखकृष्णपक्षे च द्वितीयायां जिनोत्तमम्। यजेवामोदरेपार्श्वं विश्वानन्दकरंपरम्॥ १॥

ॐह्रीं पार्श्वनाथाय वैशाख कृष्णाद्वितीयायां गर्भावतारायाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-पौषमासे सुकृष्णे च विशुद्धैकादशीदिने। विश्वसेनालये जन्मयजेजात महोत्सवम्॥ २॥

ओंह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णैकादश्यां जन्मधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः-पौषमासे सुकल्याणे मचकैकादशोदिने। द्विशानप्ततपोयेन सयजे तं तपोनिधिम्॥ ३॥

ओंह्रीं पार्श्वनाथाय पौषकृष्णैकादश्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानम्-चैत्रमासेसुकृष्णे च चतुर्थीशुद्धवासरे। पचमबोधसंप्राप्त चर्चेतंज्ञानवारिधिम्॥ ४॥

ओंह्रीं पार्श्वनाथाय चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणम्-श्रावणं शुक्लपक्षेतु सप्तम्यां वसुभूगतम्। यजे कर्माष्टहन्तार पार्श्वं वसुगुणात्मकम्॥ ५॥

ओंह्रीं पार्श्वनाथाय श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला।

जय पार्श्वदेवदेवाधिदेव जय सुरनरपतिकृतपादसेव। जय वाराणसिपुरराजराज जय सकल सुरासुरनृपसमाज॥ १॥ जय राज्यत्यागिकृत तपसुसार जय ब्रह्मचर्यव्रत दलितमार। जय इन्धन

मध्यसुसर्पकार जिनदत्तमन्त्रवर नमस्कार ॥ २ ॥ जय धरणीश्वरपदप्राप्तसार जय देवीपद्मावतिसखार। जय नागराजकृतध्वजविशाल जय दूरीकृतदुःखभय कुकाल ॥ ३ ॥ जय कमठासुरमदमानचूर जय अग्निजलदसहनैकशूर। जय मदनमहारिपुदलनक्रूर जय समवशरण चतुसंघपूर ॥ ४ ॥ जय तरुअशोकजनशोकटार जय सुरकृतवर्षन कुसुमभार। जय दिव्यध्वनिउपदेशदान जय चौसठिचामरसुरदान ॥ ५ ॥ जय सिंहपीठ आसनउत्तंग जय देहप्रभामण्डल अभंग। जय दुन्दुभि घोषसुव्योमपूर जय श्वेतछत्रत्रयलोकशूर ॥ ६ ॥ जय भूतप्रेत भयनाशवीर जय डाकिनिशाकिनि दलित भीर। जय मोहतमोदलने दिनेश जय फणमण्डप कृतअहिसुरेश ॥

घत्ताछन्दः—जय पार्श्वजिनेश्वर नमित सुरेश्वर त्रिभुवनवन्दित पादयुग। बहुविघ्नविनायक शिवसुखदायक रक्ष रक्ष भववारिनिधेः ॥ ९ ॥

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय पूजा जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्तम्—नागाङ्को जनकोऽश्वसेननृपतिर्माता सतीवामका, पश्चात्त्यपियक्षिणी धवतरुः सम्मेदजा निर्वृतिः। जन्मर्क्षं तु विशाखिका नवकरामानतु काशीपुरी, यस्यासौ धरणीश्वरो हरितभाःपार्श्वो जिनः पातु नः ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीपार्श्वनाथजिन पूजा समाप्ता ॥

अथ वर्द्धमानजिन पूजा प्रारभ्यते।

स्वामिन् सवौषट् कृताह्वाननस्य द्विष्टान्तेनोट्टङ्कित स्थापनस्य ।
स्वन्निर्नैक्तुं ते वषट्कार जाग्रत् सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्ठधेष्टिम् ।

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्रागच्छ आगच्छ अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ॥
ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टकम् ।

जलम्—हिमकुलाचलनिर्गतसज्जलैर्हिरण्य भाजन नाल सुनिर्गतैः। परमपावनमुक्तिसुदायकं परियजे
जिनवीर पदाब्जकम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनम्—मलयचन्दनकुंकुमचन्द्रजैः संसृतितापहरैः परिलेपनैः । परमपावनमुक्तिसुदायकं परियजे
जिनवीरपदाब्जकम् ॥ २ ॥ ॐह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेशायचन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षताः—कमलवासितशुभ्रसुतण्डलै विशदमौक्तिकपुञ्जसमानकैः । परमपावनमुक्ति सुदायकं परियजे
जिनवीरपदाब्जकम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेशाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पम्–कमलचंपकजातिकदम्बकैर्वकुलमन्मथसेवतिदामकैः । परमपावनमुक्तिसुदायकं परियजे जिनवीरपदाब्जकम् ॥ ४ ॥ ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानतीर्थङ्कराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्यम्–वटुकमोदकपूपसुखज्जकैर्दधिसुपायसव्यञ्जनभक्तकैः । परमपावनमुक्तिसुदायकं परियजे जिनवीरपदाब्जकम् ॥ ५ ॥ ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानतीर्थपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपः–घृतसुचन्द्रकृतैर्वरदीपकैः प्रबलकान्ति भरैस्तमोनाशकैः । परमपावनमुक्तिसुदायकं परियजे जिनवीरपदाब्जकम् ॥ ६ ॥ ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानतीर्थराजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपः–अगुरुचन्दनमिश्रितधूपकैर्हिमलवङ्गसुमोथशिलाद्रवैः । परमपावनमुक्तिसुदायकं परियजे जिनवीर पदाब्जकम् ॥ ७ ॥ ॐह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्रदेवाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलं–रुचिकदाडिमद्राक्षकपित्थकैः प्रवर पूगसुचारुसुमोचकैः परमपावनमुक्तिसुदायकं परियजे जिनवीर पदाब्जकम् ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री वर्द्धमानजिनाधिपाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घः–वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्दूर्वास्वस्तिक सर्षपैर्जयस्वनैः सन्मङ्गलोद्गानकैः । चर्चेहं सुमतिं सुवीरजिनपं श्रीसन्मतिं सर्वदासर्वक्लेशभयारिरोगहनकमर्घैर्महावीरकम् ॥९॥ ॐह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्च कल्याणकानि ।

गर्भः–आषाढेशुभ्र पक्षे सुषष्ठ्यांतिथौ सुसन्मतिम् । त्रिशालादेव्युदरेजातं संयजे वसुद्रव्यकैः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिदेवाय आषाढ शुक्ल षष्ठ्यां गर्भावताराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म—चैत्र शुक्ले त्रयोदश्या जन्म प्राप्तं महोत्सवैः। यजे जिनं महावीरं सिद्धारथनृपालये॥ २॥

ॐ ह्रीं महावीरजिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल त्रयोदश्यां जन्म प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपः—मार्गशीर्षदशम्यांतु कृष्ण पक्षे तपोगतम्। द्विधातप्तं तपो येन सयजेभवहानये॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेशाय मार्गशिरकृष्ण दशम्यां तपोधारकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानम्—वैशाख शुक्ल पक्षे च दशम्यां वर्द्धमानकम्। केवल ज्ञान संयुक्तं संयजे ज्ञान लब्धये॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेश्वराय वैशाख शुक्लदशम्यां ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाणम्—कार्त्तिके कृष्ण पक्षे च ह्यमावस्या शिवास्पदम्। पावापुर्यांसुनिर्वाणं यजे निर्वृतिसिद्धये।५।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेशाय कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षककल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्रीमान् श्रीवर्द्धमानो जयतु जिनपतिस्त्यक्तभोगः सुमुक्तेच, पावापुर्याः सुराजः प्रियहितवरवाक्
यस्य सिद्धार्थतातः। त्रिशलादेव्यस्तनूजो अवनिसुरपतिः पूज्यपादः शुशील. सोयं श्रीवीरनाथो
मम हरतु विपद्विश्वसौख्यं ददातु॥ इति पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्॥

अथजय माला।

जय वर्द्धमान सुर वर्द्धमान जय सन्मति सन्मति ज्ञान दान। जय महावीर जित कर्मवीर जय वीरनाम जिन मह्तवीर॥ १॥ जय गोतमगण भृत धृतसुनाद जय विश्व भव्य श्रुतस्यादवाद।

जय श्रेणिकनृपकृत प्रश्न भार जय ब्रह्मचर्यं कृत मदनकार ॥ २ ॥ जय सकल सुरा सुर विनुतपाद । जय दिव्यध्वनि जित कुमतवाद । जय परमयोगनिर्मल विशाल जय तपोभार जित भवकुजाल ॥ ३ ॥ जय भाषाजित मिथ्या अज्ञान यज निर्जित मन इन्द्रिय निदान । जय केवल वोधित जीव राशि जय शुद्धागमजित भवकुपासि ॥ ४ ॥ जय खण्डित कर्मारातिदेइ । जय परि हरिताखिलदोषगेह । जयलोक समुद्धरणैकधीर ॥ जय कर्म विध्वसनमहावीर ॥ ५ ॥ जय मोह वृक्षभेदनकुठार जय मुक्तिवाम उररत्नहार । जय तर्जित मदन विकार भार जयराग द्वेष मद कृत प्रहार ॥ ६ ॥ जय शत्रु मित्र सम-कष्ट हेम जय दूरीत्रासितपाप जेम । जय उत्पाटित बहुकर्म जाल जय सहजज्ञान सरसीमराल ॥ ७ ॥ जय अनन्त चतुष्टयमणि सुपात्र जय लक्षण व्यञ्जन युक्तगात्रे । जय समवशरण आसनसुरूढ जय सिद्ध अनाहत मन्त्र गूढ ॥ ८ ॥

घत्ता छन्दः–असमगुण निधानं प्राप्त संसार पारं परपरणतिमुक्तं सर्व संघै प्रवन्द्यम् ।
अनुभवरसमेयं वीरनाथं जिनेन्द्रं स्मरति नमति यो वा वाञ्छितं लभ्यतेसः ॥

इति श्रीवर्द्धमानतीर्थङ्कराय नाम पञ्चकसंयुक्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृत्तम्–ख्यातं कुण्डपुरः पुरंजननभं स्वानी तु सिंहोध्वजःशालोद्रुःप्रियकारिणी च जननी पावापदं निर्वृतेः ।
उत्सेधः करसप्तकं कनकभा सिद्धायिनी सेविका मातङ्गोपि च यस्य वीरजिनपंसिद्धार्थजं तं भजे ॥

इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीमहावीर जिन पूजा समाप्ता ॥

अथ पूजा फलम् ।

पूजा पातिगनाशिनी सुखकरी पूजा महारिद्धिदा पूजा संपतिदायिनी भय हरी पूजा शिवा शर्मदा ।
पूजा कल्मषध्वंसिनी शुभखनी पूजा मुनीन्द्रैःस्तुतापूजापूज्यपदप्रजा वसुविधैर्द्रव्यैर्विधेया सदा ॥

अथ स्तवनम् ॥

अष्ट भेदान्वितां पूजां कृत्वा भक्तिभरात्पुनः । स्तवन कर्त्तुमारब्धं पूजकेनातिधीमता ॥ १ ॥
त्वं देव जगतां नाथ त्वं त्राता कारण विना । कथं स्तुवेऽहं सर्वज्ञं त्वामहं वुद्धिवर्जितः ॥२॥
त्वं देवस्त्रिदशेश्वरार्चित पदस्त्वं मुक्तिनाथोऽव्ययः त्वधर्मामृतसागरःसुखनिधि स्त्वं केवलोद्योतकः
त्वं लोकत्रयतारणैकचतुरस्त्वं मोहदर्पापहः प्राप्तोऽहं शरण जिनेश्वर प्रभो ते त्राहि भो मां गुरो॥३

इति स्तवन पठित्वा चतुर्विंशति जिनानां चरणाग्रे कुसुमाञ्जलिंक्षिपेत् ॥

पुनः महार्घं गृहीत्वा एवं पठनीयम्—

येषां दर्शनमद्भुतं प्रतिदिनं सर्वैर्जनैः प्रार्थितं येषां ज्ञानमपार मस्ति महितैः सर्वप्रकाशात्मकम् ।
येषां सच्चरित चिरंतनभवं सभ्यैः सदा सेवितं ते तीर्थङ्करनायका हि नितरां सौख्यप्रदा सन्तु नः॥१॥

छन्द चाल (वन्दे तानकी में)

वन्दे वृषभं शतमखवन्द्यं अजितजिनं जित मारमनिन्द्यम्।
संभवमघघनपवनसमानं अभिनन्दनआनन्दप्रदानम् ॥ १ ॥
वन्दे श्रीसुमतिंसारं पद्मप्रभुजिनपं जितमारम् ।
नौमि सुपार्श्व जिन यतिशरणं वन्देचन्द्रप्रभं भवहरणम् ॥२।
पुष्पदन्त मानिन्दितलोकंशीतलमखिलविशोषित शोकम्,
श्रीश्रेयांस सकल प्रधानं वासुपूज्यमाशंसितज्ञानम् ॥ ३ ॥
विमलं निर्मलबोधसुपार सेवेऽनन्तमदोषविचारम् ।
धर्मधुरं श्रीधर्म जिनेश शान्ति नाकिनरेशमहेशम् ॥ ४ ॥
कुथुंकरुणामयमविकारं अरजिनवरमीडे मतिसारम् ।
मल्लिशल्यहरं सुखधामं मुनिसुव्रतनामं जितकामम् ॥ ५ ॥
नमिनाथं गुणरूप मुदारं वन्दे नेनिजिनेश्वरसारम् ।
पार्श्वं परमचरित्रविचित्रं वर्द्धमानजितहरितकलत्रम् ॥ ६ ॥

त्ता छन्दः–इति जिनजयमालां यः पठेद्भावयुक्तःसभवति सुरनाथो विश्वविख्यातकीर्ति
त्रिदिवपरमसौख्यं प्राप्य पार प्रयाति सपदि भवसमुद्रस्यातिदुःखैकहेतोः ॥ ७

तीर्थङ्करा ये जगति प्रसिद्धाः सिद्धिंगताः सौख्य भरैः समेताः।
ते सन्तु सौख्याय सतां सदैव पूज्या मया पूजनमाश्रितेन ॥८॥
(एवं पठित्वा त्रिःप्रदक्षिणेन महार्घं भ्रामयित्वा.जिनाग्रे स्थापयेत्)।

पुनरेवं शान्तिधारा पाठः पठ्यते।

ॐसंप्रति काल श्रावकश्रेयस्कर स्वर्गावतरणपरिनिष्क्रमण केवल ज्ञाननिर्वाण कल्याणविभूति भूषित महाभ्युदयान्, सिद्धविद्याधर राजा महाराजमण्डलीक मुकुटपटबन्ध बलकेशवसार्वभौमादिविजय दानवीर सार्वभौगीन्द्र किरीटमणि गण प्रभाऽमरधुनीप्रवाहक्षालितपापान्, चरण नख किरण चन्द्र चन्द्रिका प्रतिहतपापान्धकारान्, वृषभाजित सम्भवाभिनन्दन सुमति पद्म सुपार्श्व चन्द्रप्रभपुष्पदन्त शीतल श्रेयांसवासुपूज्य विमलानन्त धर्म शान्ति कुन्थ्वरमल्लिमुनिसुव्रत नमिनेमि पार्श्वनाथवर्द्धमानाश्चेति चतुर्विंशति वर्तमान तीर्थङ्करपरमदेवान्, सलिलगन्धाक्षत कुसुमनैवेद्य प्रदीपधूपफल स्वस्तिकनन्द्यावर्त्तदूर्वासर्षपादिमङ्गलद्रव्यैराराधयामि महार्घेण*।

---

*नोट—अब शान्तिधारापठ जो इस पुस्तक के अन्त में छपा हुआ है उस को पढ़ो।

शान्तिप्रदा भवन्तु, सर्वसौख्यप्रदा. सन्तु सर्वविघ्नानि हरन्तु, घोराणि शम्यन्तु, पापानि नाशयन्तु, सर्वजगतां मङ्गलावल्यो भवन्तु संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम् देशस्य राष्ट्रस्य, पुरस्य, राज्ञः करोतु शान्ति भगवाञ्जिनेन्द्रः ॥

वृत्तं–नाभेयादिजिनाःप्रशस्तवदनाःख्याताश्चतुर्विंशतिः श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयोयेचक्रिणो द्वादश ।
येविष्णु प्रतिविष्णु लाङ्गलधराःसप्ताधिकाविंशतिः,त्रैलोक्याऽभयदास्त्रिषष्ठि पुरुषाःकुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

यावच्चन्द्रदिवाकर ग्रहगणा मेर्वादयोप्यद्रया,यावद्व्योमवसुन्धराम्बुनिधियो यावद्दिशो वैदश ।
यावत्सन्तिमुनीश्वराःक्षितितले जैनागमद्योतका स्तावन्नन्दतु पूजनंसुविमलंकल्याणकोटि प्रदम् ।

इति श्री चतुर्विंशतितीर्थङ्कराणां संस्कृत पूजा समाप्ता ।

